RNI UTTBIL/2014/75489

डाक पंजीकरण संख्या यू0ए0 नैनीताल–275/2018–2020

उत्तराखण्डी भाषाओं की मासिक पत्रिका

कुमगढ़

वर्ष : 07
अंक : 1–2
मई–जून 2020
मूल्य रू. 25/–

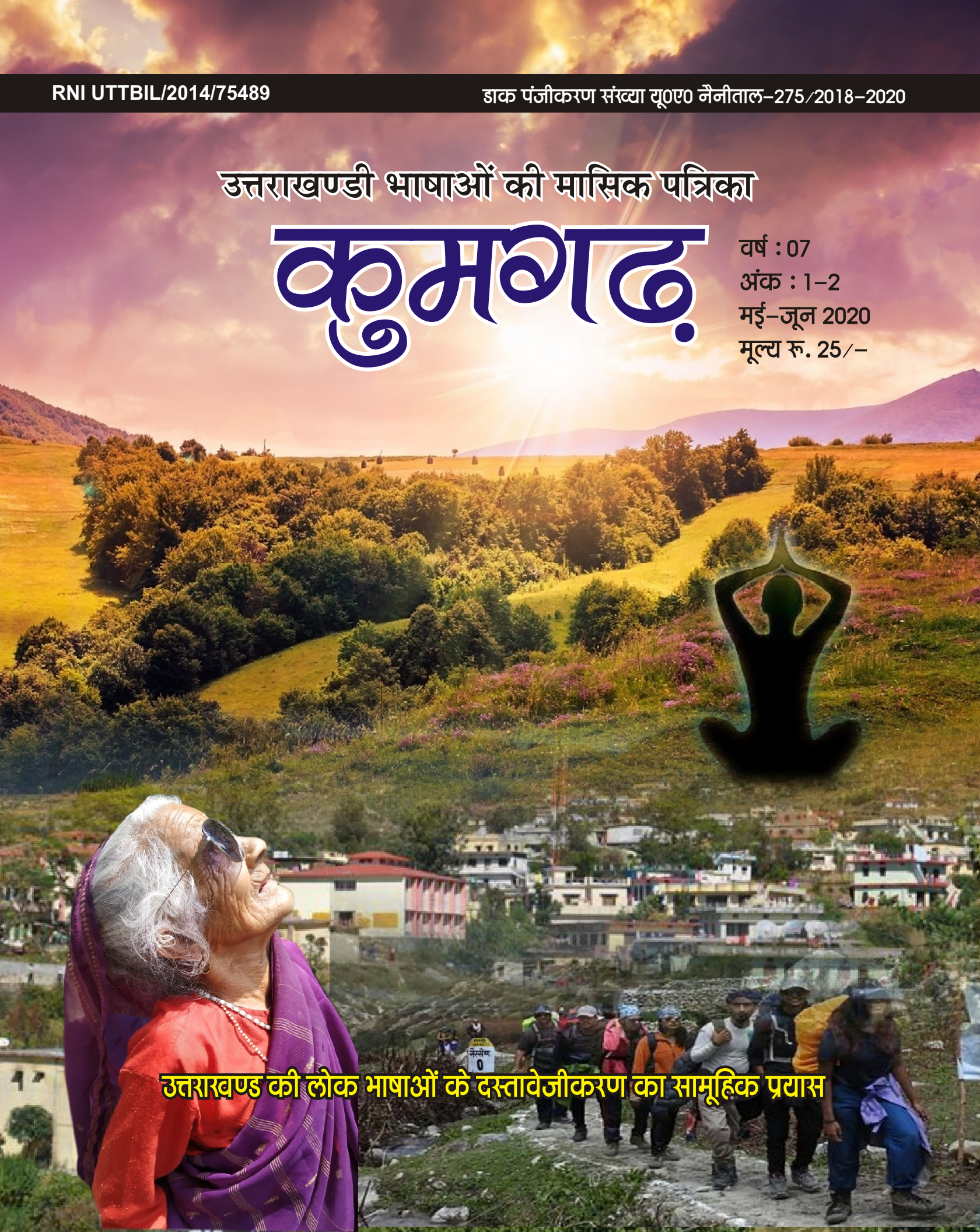

उत्तराखण्ड की लोक भाषाओं के दस्तावेजीकरण का सामूहिक प्रयास

जो सीख छोड़ी

–हेमंत बिष्ट, खुर्पाताल, नैनीताल

आजेकि–
स्थिति परिस्थिति देखि,
सोचनू मैं ।
हमार पूरखों कै लै
कतुक ज्ञान छी।
उं लै वैज्ञानिक भै,
उं लै विद्वान छी।
जो अमेरिका इंलैण्ड कैं
देखि – देखि बेर–
हमूल आपण् बुजुर्गोंकि
सीख छोड़ी।
आज वीं भपरि गंई बाट्
हमर उज्याणि,
उनूल आपणि राह मोड़ी।
उनार देखा देखी
हमूल सिखौछी
सु ज्वातै खाण
हाथम थाइ पकड़ि
भीड़ – भड़क्कम
इथां उथां रिटण।
राव मथोव करण –
छी– घींण नि धरण
पै कागजैल् हाथ पोछण
हमूल शान मानी।
पै आज –
आब् हमूल जाणी।
हमार बुजुर्ग,
चमड़ेकि पेटी कैं,
भल नि बतूछी।
ज्वात् चप्पल,
भ्यारै खोल आओ कूंछी।
पैलिकाक् पैरि लुकुड़,
भ्यारै खोलण भै,
हाथ् – खुट ध्वे बेर,
साफ सुथरी ,ध्वेई धोति पैरि
रस्या में जाण् भै,
साफ सुथर हाथों लै,
खाण् खाण भै।

बिना सूक्ष्मदर्शी कैं जाण् बेर
उं, कीटाणु कैं पछ्याणनेर भै
अशुभ,गन्दी जागों में
कीटाणु हुनी कनै,
उं तबै जाणनेर भै।
तबै त अशुभ कामों बै ऊंण तक
उं , आग् नङ्नेर भै
जो उनार जमानेकि –
थर्मल स्क्रीनिंग –
थर्मल ट्रीटमेण्ट हुनेर भै ।
घड़ि – घड़ि हाथों में
सेनेटाइजर चपोड़न देख बेर
मैं लागनू सोचण,
कि भ्यार बै ऊण तक
गोरूक गौंतैल् हाथ पोछण,
उ लै यौई विज्ञान छी।
आज जबलै सुणनू
आपण हाथों कैं
मुख में नि लगाओ।
याद ऐ जैं
मुखम, गवम हाथ लगाते ही
बुजुर्ग कूंछी
भाऊ ! गव में हाथ नि लगाओ।
हाथ लगै दियौ तो कूंछी –
'' फू कर ! फू फू कर,
तै थैं त आदत छुड़वाओ।
पै क्यारों में,
आद् लगूण,
तुलसीक गमाल् सजूण,
पाति ,कुश, दुब
सबकैं पद्याणन।
कैड़कुचौल राक्तिब्याण –
आङण झाड़न।
सब याद ऊनी
सब – स – ब याद ऊनी ।

–मो0 9412017421

RNI UTTBIL/2014/75489

डाक पंजीकरण सं० यू.ए./नैनीताल-275/2018-2020

साहित्यसेवा संस्कृतिसेवा समाजसेवा

उत्तराखण्डी भाषाओं की मासिक पत्रिका

कुमगढ़

वर्ष 7 अंक 1-2 मई-जून 2020

संरक्षक मण्डल : डॉ. मदन चन्द्र भट्ट, शिवराज सिंह रावत 'नि:संग', डॉ. जीवन सिंह मेहता, प्रो. एल.एस. बिष्ट 'बटरोही', ताराचन्द्र त्रिपाठी, ललित मोहन पाण्डे, दान सिंह रौतेला, कौस्तुब आनन्द पन्त, डॉ. सत्यानन्द बडोनी, डॉ. के.बी. मेलकानी, देवकी महरा, दमयन्ती उप्रेती, विमला जोशी 'विभा', अशोक पाण्डे 'जज फार्म' नरोत्तम पाण्डे, हरीश चन्द्र सिंह पांगती, श्रीमती हेमा पाठक (प्रवक्ता)

परामर्शदाता मण्डल : डॉ० देव सिंह पोखरिया, डॉ० दिवा भट्ट, डॉ. शेर सिंह बिष्ट (विभागध्यक्ष), मथुरादत्त मठपाल, डॉ० अचलानन्द जखमोला, प्रो० उमा भट्ट, गिरीश चन्द्र जोशी, डॉ० शेखर पाठक, डॉ० कपिलेश भोज, विमल नेगी, डॉ. देवीदत्त दानी, गोविन्दबल्लभ बहुगुणा, जगमोहन सिंह जयाड़ा 'जिज्ञासू'

सलाहकार सम्पादक : गोपाल दत्त भट्ट, बीना बेंजवाल, कुलानन्द घनशाला, श्याम सिंह कुटौला, विपिन जोशी 'कोमल', महावीर रवांल्टा, डॉ. जे.सी. पंत, देवकीनंदन कांडपाल

सम्पादक : दामोदर जोशी 'देवांशु'

सह सम्पादक : रतन सिंह किरमोलिया, डॉ. उमेश चमोला, नवीन डिमरी 'बादल'

सम्पादक मण्डल : नरेन्द्र कठैत, डॉ० मनोज उप्रेती, डॉ० प्रभा पन्त, डॉ० विपिन शाह, दीपक कार्की, पूरन चन्द्र काण्डपाल, नीता कुकरेती, डॉ० दीपा काण्डपाल, जगदीश जोशी, तारा पाठक, जगमोहन रौतेला, डॉ० दीपा गोबाड़ी, अनिल भोज, प्रो. चन्द्रकला रावत

सहयोगी मण्डल : जुगल किशोर पेटशाली, डॉ० महेन्द्र महरा 'मधु', गिरीश सुन्दरियाल, जोत सिंह नेगी 'उत्तराखण्डी', डॉ० आशा रावत, तारा दत्त पाण्डे 'अधीर' दिनेश भट्ट, प्रो. नीरजा टण्डन, डॉ. गिरीश चन्द्र पंत, गौरी शंकर निर्भीक।

समन्वय सम्पादक : डॉ० जगत सिंह बिष्ट, डॉ० मधुबाला नयाल, नरेन्द्र सिंह नेगी, परासर गौड, डॉ० बिहारीलाल जलंधरी, नन्दकिशौर ढौंडियाल, डॉ. उमा मैठाणी, मोहन राम टम्टा 'मोहन कुमाउनी', भीष्म कुकरेती, उदय किरौला, घनानन्द पाण्डे 'मेघ', डॉ० नंद किशोर हटवाल, डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी।

प्रबन्ध सम्पादक : कृपाल सिह शीला, विनायक जीवन चन्द्र जोशी, रामकृष्ण कोठारी, राजेन्द्र सिंह ढैला, भोपाल सिंह बिष्ट 'कलयुगी'

विधि परामर्शदाता : चन्द्रशेखर करगेती (एडवोकेट), दुष्यन्त मैनाली एडवोकेट

प्रसार व्यवस्थापक : मोहन जोशी (गरुड़), डॉ. प्रदीप उपाध्याय, नारायण सिंह बिष्ट 'नरैण दा', प्रकाश जोशी 'शूल'।

कला सम्पादक (आवरण सज्जा) : विजय काण्डपाल

प्रेरणा – बी. मोहन नेगी (पौड़ी)

आवरण परिकल्पना – नितीश जोशी

पत्रिका साहित्य संस्कृति समाज सेवा हेतु समर्पित
(सभी अवैतनिक)

सदस्यता राशि

सदस्यता (संरक्षक)	-रु. 5000/-
आजीवन सदस्यता	-रु. 1000/-
विशेष सहयोग	-रु. 500/-
वार्षिक सहयोग	-रु. 200/-
एक प्रति	-रु. 25/-

अनुक्रमणिका

●सम्पादकीय	2	●कोरोना बैरी हैगो हमार – नन्दा बल्लभ पाण्डे	20
●वन्दना – हे ज्ञान की देवी मां– धर्मेन्द्र नेगी, जै माता कोट भ्रामरी – डॉ. हेमचन्द्र दुबे	3	●शेर दा अनपढ़ – घनानन्द पाण्डेय 'मेघ'	20
		●गीत – बंसीधर पाठक 'जिज्ञासु'	20
●बुड़िनाक क्वीड़–कैंण – देवकी पर्वतीया	4	●नीदेकि सजा – नारायण सिंह मेहरा	21
●आत्मनिर्भर– कविता कैंतुरा	5	●उजाळै आस – जगमोहन सिंह जयाड़ा 'जिज्ञासू'	22
●सोचण छूं एक गीत लिखि द्यो– अजय शंकर	5		
●बदली द्योखा तस्वीर दुनिया की– अंबिका राणा	5	●कमाउनी हाइकु– डॉ. हमेचन्द्र दुबे	22
		●हमार कुमाउनी रचनाकार : हेमंत बिष्ट – प्रस्तुति राजेंद्र ढैला	23
●औ लाटा ऐजा तू, लौकडौन – अश्विनी गौड़	6		
● कहावत (संकलित)– नितीश जोशी	6	●आण लाग – खुशी भट्ट	26
●गढ़वालि कू लोक साहित्य कू अतीत, वर्तमान अर भविष्य – डॉ. नंद किशोर हटवाल	7	●चा – हरपाल सिंह भण्डारी	26
		●भुखण्याँ तैं लुकण्यां लिगि – डा. सत्यानन्द बडोनी	27
●रैबार – गोविन्द जातक	8		
●नि जा इजा – ललित सिंह सिराड़ी	8	●पांच कणिक – ज्ञान पन्त	29
●इलै हैंस्युं छौ मीं – डॉ. उमेश चमोला	9	●झोड़ा निहुना – राजेन्द्र सिंह बिष्ट	29
●मनल आवो – देवकी नंदन काण्डपाल	10	●पहाड़ि बोलींक व्याकरण : 4. उपसर्ग प्रकरण – डॉ. भवानीदत्त काण्डपाल	30
●बिलाण फै गो हिमाल – नवीन बिष्ट	10		
●खडु उठा– अग्वाडि बढ़ा – अशोक जोशी	11	●म्यर देश – ज्योति तिवारी कांडपाल	31
●न त हैसि सकणा छां न रवे सकणा छां – धर्मेन्द्र नेगी	11	●उत्तराखंड राज्य – चन्द्र शेखर काण्डपाल	31
		●विधाः संस्मरणः :निस्वार्थ रिस्त सबे ह्वै भल – मंजू बिष्ट	32
●कन मामारी फैले यूं चीन्यूंन – आरती राणा	11		
●सुंदरकांड में बर्णित काथ– डॉ. मनोहर चन्द्र जोशी	12	●ड्रैगन त्यर काव मूंख हैजौ – दामोदर जोशी 'दवांशु'	32
●मेरू बचपन कु घर – रिंकी काला	14	●भाबरक् बॉज – डॉ. जगदीश चन्द्र पंत	33
●दूरी बनाण आज भैतै जरूरी छ– डॉ. धारा बल्लभ पांडेय 'आलोक'	15	●पढ़ाओ रे इस्कूला – कृपाल सिंह शीला	34
		●बखता त्विल कसि यौ पलटि मारि – लक्ष्मी बड़शिलिया 'बीना'	35
●कतू दुखा छन – श्याम सिंह कुटौला	15		
●नि भुलीन – रमेश चन्द्र शाह	15	●फामों की फुलदेई – महेन्द्र मटियानी	35
●कोरोना : हंसिकायें – देवकी नंदन भट्ट 'मयंक'	16	●समाचार	35
		●अपार श्रद्धा व आस्थाक केन्द्र देवगुरू बृहस्पति मंदिर – लक्ष्मी बड़शिलिया 'बीना'	36
●कोरोना – भोपाल सिंह बिष्ट 'कलयुगी'	17		
●कोरोनावायरस – मंजू बिष्ट	17	●ऐंस्वा साल – जगमोहन सिंह जयाड़ा 'जिज्ञासू'	38
●चिट्टिरसैन – रमेश चन्द्र शाह	17		
●कोरोनाक दिन – केशर सिंह डंग्सेरा बिष्ट	18	●भूतल भाजण नि पाय – पूरन चन्द्र काण्डपाल	39
●बंसत – गीतेश सिंह नेगी	19	●महावीर रवांल्टा की रवांल्टी कविताएं	40
●बसंत – दिनेश भट्ट, पिथौरागढ़	19		

प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक-दामोदर जोशी 'देवांशु' द्वारा हिमानी वाङ्मय सृजन पीठ की ओर से खेड़ा (हल्द्वानी) नैनीताल से प्रकाशित एवं ईथोस सर्विसेज, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित। फोन : 05946-284292

सम्पादक – दामोदर जोशी 'देवांशु'
पत्र व्यवहार का पता - हिमानी वाङ्मय सृजन पीठ, पश्चिमी खेड़ा, पो० काठगोदाम (नैनीताल) - 263126
मोबाइल नं. - 9719247882, ईमेल- kumgarh@gmail.com

संपादकीय -

–जगमोहन सिंह जयाड़ा "जिज्ञासू", टिहरी गढ़वाळ

उत्तराखण्डी भाषाओं की प्रतिनिधि "कुमगढ़" पत्रिका का छै साल पूरा ह्वेग्यन। सातवां वर्ष कु पैलु अंक पाठकु का हात मा छ। कुमगढ़ शब्द का बारा मा मैकु जब पता लगि त मन मा घंघतोळ पैदा ह्वे, यु गढ़वाळ का बावन गढ़ु का अलावा कुमगढ़ क्या छ? जब मैं सम्मानित हास्य कवि श्री हरीश जुयाळ "कुटज" जी का दगड़ा हास्य कवि श्री सुनील थपलियाळ "घंजीर" जी का घर फर गयौं त मैकु "घंजीर" जिन बताई, आपकी गढ़वाळि कविता "कुमगढ़" पत्रिका मा छपिं छ। पत्रिका द्येखिक तब जैक म्येरा मन कु घंघतोळ दूर ह्वे।

"कुमगढ़" पत्रिका सम्मानित शिक्षाविद् अर कुमाऊंनि कवि श्री दामोदर जोशी "देवांशु" जी का भगीरथ प्रयास सी लगातार प्रकाशित होणि छ अर सब्बि उत्तराखण्डी साहित्यकार अर पाठक अपणु अनमोल योगदान देणा छन। पत्रिका का माध्यम सी एक प्रयास छ, हमारी भाषा संविधान की आठवीं सूची मा शामिल हो। आज हमारी उत्तराखण्डी दूधबोलि भाषाओं कु अस्तित्व खतरा मा छ। "कुमगढ़" पत्रिका हमारा मन मा उजाळै आस जगौणि छ। हम आस करदौं कुमगढ़ पत्रिका सब्बि भाषा पिरेमियौं का मन मा भाषा पिरेम पैदा करलि। भाषा हमारी पछाण छ, जब तक हम अपणि भाषा ब्वलला तब तक हम कुमाऊंनी, गढ़वाळि अर जौनसारी छौं। विदेशी भाषा अंग्रेजी सीखण की चाह सबका मन मा छ। जब हम अपणि भाषा कु त्याग करि देन्दौं त हमारी संसति कु भि नाश ह्वे जान्दु। पहाड़ की भाषा अर संसति दुन्यां मा अनमोल छ।

भाषा हमारी विरासत छ, अतीत सी आज तक कायम हमारी भाषा का सुंदर अलंकारिक शब्द छन। हमारा पित्रुन ऐसास करिक शब्द रचना करि ह्वलि संवाद का खातिर। जौं ऊंचा डांडौं मा सदा ह्युं जम्युं रन्दु, ऊं तैं हम हिंवाळि कांठी ब्वल्दौं अर जख बांज, बुरांस का घणा बण छन ऊं तैं डांडा। मुंगरेड़ा, गथ्वाड़ा, झंगरेड़ा, सटेड़ा, गुडार्त, मंड्वार्त, हौळ तांगळ खेती सी जुड़्यां सुंदर शब्द छन। पाड़ की सुंदरता हर मनखि का मन मा एक ललक पैदा करदि। महाकवि कालीदास कविल्ठा गौं, कालीमठ का रैबासी था, मेघदूत की रचना महाकविन करि। ब्वन्न कु मतलब छ, पाड़ सी प्रेरणा ल्हीक साहित्यकार, चित्रकार, छायाकार, गीतकार देवभूमि उत्तराखण्ड मा पैदा ह्वेन अर वूंन विश्व स्तर फर पछाण बणाई।

कुमाऊंनि, गढ़वाळि भाषा की कै उपबोली छन। द्वी भाषाओं तैं एक मंच फर ल्हौण कु प्रयास जारी छ। सब्बि साहित्यकार भरसक प्रयास कन्ना छन, हमारी भाषा कु प्रसार हो अर संविधान की आठवीं सूची मा शामिल हो। भाषा आन्दोलन जारी छ, देखण वाळि बात या छ, कब सफलता मिलली। उत्तराखण्ड की नयीं पीढ़ी अपणि भाषाओं तैं ब्वन्नु छ्वडणि छ, ज्व चिंता की बात छ। विदेशी भाषा अंगरेजी सीखण की ललक समाज मा ज्यादा छ। हम अपणि भाषा का वाहक छौं। हम्तैं हि प्रयास कन्न पड़लु, हमारी भाषा अस्तित्व मा रौ अर हमारी संसति भि।

"कुमगढ़" पत्रिका हमारी दूधबोलि भाषा का प्रचार अर प्रसार मा महान योगदान देणी छ। अपणि भाषा मा कालजई कविता, कथा गढ़िक मन का ऊमाळ व्यक्त करा अर "कुमगढ़" का दगड़्या बणिक भाषा प्रचार प्रसार का सहयोगी बणा। हार्दिक शुभकामनाओं सहित आपकु हिरदय सी आभार।

पाठकों से विनम्र निवेदन

कुमगढ़ विषम आर्थिक परिस्थितियों से गुजर रहा है। कई माह से 'कुमगढ़' प्रकाशन का व्यय भार स्वयं ही उठाना पड़ रहा है। आपको यह पूर्व से ही ज्ञात है कि पाठकों व शुभचिन्तकों के अपार स्नेह एवं आर्थिक सहयोग से 'कुमगढ़' छः वर्षीय साहित्य सेवा में सफलता के शिखर को चूम रहा है।

कुमगढ़ की वार्षिक सहयोग राशि 200 रुपये एवं आजीवन सहायोग राशि 1000 रुपये मात्र है। पाठकगण विशेष सहयोग एवं संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके भी साहित्य के इस यज्ञ में अपना योगदान दे सकते हैं। सहयोग राशि 'कुमगढ़' पत्रिका के IDBI सेविंग बैंक खाता सं. 1208102000001151 IFSC : IBKL0001208 MICR 263259003 में जमा की जा सकती है। यह पत्रिका पाठकों की है, जो लोक भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए निःस्वार्थ भाव से काम कर रही है। इसमें पाठकों की रचनाओं का हमेशा स्वागत है। कृपया रचनाऐं MS-WORD की फाइल में Krutidev–10 फॉन्ट में टाइप करके ही हमारे E-MAIL- kumgarh@gmail.com पर भेजने का कष्ट करें।

–धन्यवाद !

संपादक

वन्दना

हे ज्ञान की देवी माँ

–धर्मेन्द्र नेगी, पौड़ी गढ़वाळ

–मो0 9720084405

हे ज्ञान की देवी माँ, अज्ञान मन को हर दे
संगीत की देवी माँ, मेरा कंठ मा सुर भर दे

तेरा शरण अयूं छौं माँ, मि मन की आस लेकी
सब्बि बिघ्न मिटौ हे माँ, मैंतैं तु सुमति देकी
मेरा अंध्यरा मन मा माँ,तु छाळु उज्यळु भरदे
हे ज्ञान की देवी माँ, अज्ञान मन को हर दे

यश–बल–बुद्धि–विद्या दे, माँ कष्ट मेरा हर दे
सुबाटा हिटु मि सदानि, माँ इथगा पा करिदे
कुछ भी जब स्वचु,करुं माँ,मेरि जिकुड़िम तू बसिजै
हे ज्ञान की देवी माँ, अज्ञान मन को हर दे

सुकर्म करुँ मि सदानि, भलु स्वचुं भलु करुँ सदानि
तेरा दियां प्रसाद तैं माँ, सैरि दुन्या मा बंटु सदानि
तू मेरा मुण्ड मा माँ, आशीष को हथ धरिदे
हे ज्ञान की देवी माँ, अज्ञान मन को हर दे

हे ज्ञान की देवी माँ, अज्ञान मन को हर दे
संगीत की देवी माँ, मेरा कंठ मा सुर भर दे।।

जै माता कोट भ्रामरी

–डॉ0 हेमचन्द्र दुबे, गरुड़ बागेश्वर

–मो0 94115997207

जै हो माता कोट भ्रामरी
कत्यूरै की महकी रै फुलवारी
माता नंदा सुनंदा
त्यरा कदु रूप दुनि पसंदा
माता भवानी
जै मा जगदम्बा
सारै जगत में तेरी अम्बा अम्बा
महाकाली हाटकालिका
कोटगाड़ी भगवती देवा
दूनागिरी पूर्णागिरी
अनंत देवाला त्यरा थाना
जगतकि अंबा
दुर्गा भवानि
हे मॉ भ्रामरी नंदा सुनंदा
अन्तर उजास उमंग आनंदा
तेरा चरणों में शीश नवूनॅू
आरती मंदिर में थाल सजै करनॅू
हे मॉ भ्रामरी कोटकि माई
तेरी कृपा सब जगै छाई।।

बुड़िनाक क्वीड़-कैंण

–देवकी पर्वतीया, लखनऊ

हमार गौं में तीन बिसी है मलि उमरैकि जतुक लै स्यैणी छन सबा–सब तिसार आश्रमैकि छन। घर–गिरस्ती दगाड़ उनौर मोह भंग है गो। उं जब लै आपण में मिलनी 'सौल–कठौल' या 'कौछी–भौछी' करण लागनी। यस्सै रसिल क्वीड़ पाठकनाक् मनोरंजन हुणि पेश छन।

''बचुलिकि इजा ! तुमूल सुणि हालि हुनलि कि हमरि पार्वति का कन्रूा जन्म है रौ।''

''होई हो चनुवे आमा ! बेल ब्याल कुंथि कॅूण लागि रै छी। के ऽ बात नि भै हो। ब्या हई ततुक बर्सना बाद कोख खुलि गे। कै दिने च्योल लै है जाल। बचि रई चैनी। के च्याल, के चेली।''

''न हो बची इजा ! आज त मैं बड़ि आश लागि रै छ्यॅू। धैं तै को च्योल है जां कै बेर। पैली–पेलोठौ तो बार बरस में हाथि व्यांण बुङौड़ है ठाड़ भै।''

''तै खानदान में च्योल हूंणा कठिणै छ। तैकि दिदिका चार चेहड़ी छन। तैकि महतारि तीन बैणी भैन। तैक बौज्यूकि नौ बुबु भैन। निपछिटै तैक बौज्यु है गे। पछा उनार लै चार बैंणी भैनि। पार्वती मालकोट में तैकि आम हौर सात बैणी भैन। एक भाइ भै। जनुलि, मनुलि, कमुलि, भगुलि कतुक जै नाम भै। द्वि तौ लाटि भैन। एक बौंणि भै। नाम लै सोचि–समझि बेर 'माणि' धरी गै। पीपल दगै ब्या करि दी मैप्वांल। शिवज्यूक गण हुनी जास उस परिवार भै तैक मालकोटियांक। जो कैज तैंकि बम्बे न्हैगे वीकि लै एक्कै चेलि छ। वीकि सासु के बड़ों दुख भै कि तो हमार घर कौं–ब्याणि का बटि ऐ छ ! (कौ एक्कै बखत ब्यांछ।) मुणि उनार भगवानैल सुणि दी हो। नान च्यालाक पछा तीन च्याल है गे। खानदानी नौं रै गे। निर्वश नि भै। भाग भल भै। वि जनम में पुन्य करि राख हुनाल। तीन नातिन कैं देखि गे छिन।''

''तुम ठीकै कूंणौछा चना आमा ! के करनी, के करतूत, के पैल जनमा पुन्य ! च्याल–चेली भागै लै हुनेर भै पै। जैक करम में जतुक लेखी भै, उतुकै हुनेर भै। यों बात पुराणि भैन जब नानतिननैल घर भरी रूनेर भै।

''पारै चनुलि गुस्यांण कूनेर भैन हो ! आजकल ब्रह्म लै बदलि गोछ। के नि देखना तुम ?पैली बटी क्वे बिना बेवई रूनेर भयो ? अगर परिस्थिति वश कै कै ब्या नि है सको त प्रतिम दगै, नारयूल दगै, धाड़ दगै वीक ब्या करि संस्कार पुर करि दिनेर भै। अणबेवई क्वे नि रूनेर भै। आज त बातै हौरी है गे। च्याल के, चेली के, मारि खूब पढ़ि–लेखि नौकरी करनी। क्वे च्याल के, चेली के, ब्या नि करन। हमार तौ देखौ शन्तुलिकि चेंलि डाक्ट्यरयाण है बेर बिलैंत हुॅ न्हैं गे।''

''होई पै बची इजा ! हमार देखनै–देखनै कस जमान ऐ गो ? गरीब हो चाहे अमीर हो, पैंली बटी कूनेर भै परवार दरबार। कंचमंचनैल घर भरी रूनेर भै।''

''हौइ हो पै चनुवै इजा ! आब तुम समजो। तलि बाखलि बालनौक कतौण कारबार भै। कतुक चमत्कार भै ? आजा दिन देखौ, वी ऽ घर में कौ बासण लागि रईं। जौ लाग–फाङ नानतिन छन छूट देशन पन हन्याल।''

''एक हरीश'क् मुणि कारबार जस छी पै। आब देखौ सब खचबच–खजबज जे लै कूंछा। एक च्योल भै, जो पढ़ण हुणि अमेरिका गोछी। वील बांई ब्या करि हालौ। सुणीणै उ बै बसि गो। हरीश और दुल्हैणि कत्थप आसाम उज्याणि न्हैं गईं। है गे। उतांण बंग्यालाक् ढुंङ–पाथर उधारि बेर मैंस लिजांणई।''

''तती कै देखौ तौ गणेशै इजैकि ठलि जेठांण जो तसिलदराणि ज्यु भइन। ऊं रतन सुन्दरि कईनेर भैन। सांच्यौ हो चना इजा। उनार कपाल में मणि भै मणि। उनार औलाद नि भै। देराणिनाक् नानतिनन कैं उनूलै पाल–सैत। सासु–देवर–देराणी सार परवारा मली ऊं सिरताज भैंन। सारै हुकुम उनरै चलनेर भै। सार मुहल्लवाल, किरौदार, नाक्र, रस्यार सब उनन देखि डरनेर भै। जे उनूल कै दौ तहसीलदार ज्यु लै उनार बिपरीत नि जै सकनेर भै। सार कारबार उनरै हाथ में भै। कभतै रौस आई त तब रतन ज्याड़ज कूनेर भैन, ''जागौ मिजाज के करंछा, जै दिन मैं मरूंलो यै घरै पट्ट है जालि। मैं रतन भयूं रतन। जै दिन म्योर जनम भयो जोशि ज्यूल कै बल, ''तौ चेलि तुमार घर में रतन है रै रतन। तुमार घर उज्यालै करैलि। जै घर जालि वॉ तौ नौ रतन वरसालि। पर एक बात जरूर छ हो नाथ पणज्यू ! तैक औलादा गिरहौ कमै जास छन।'' सांच्यै हो उनरि औलाद नि भै। पै उनूल कभै औलाद हुणि डाड़ नि मारि। भतिज, भतीजी उनूलै पाल–सैंत्। भद्या, भाणज सब उनरै घर पढ़नेर भै। लोग कूनी, ''जै दिन रतनौ ब्या भयो तनार

सौरासियॉ घर से भूटी भांङ, फुटी ब्याल लै नि भै। तौ एन त तनार दुल्हौं कैं तहसीलदारी मिली। फिर के छी मुणि–मुणि कै पॉच खण्डौ घर लाग। घर में मूंग, मोत्यूँ, सुन–चान्दी बरसि गे। और जब रतन गइन उनार दगाड़ै सब श्री न्है गे। आज उनार घर में नाम ल्हिणी, पाणि दिणी क्वे नि रै।''

''अहो बची इजा ! यो मर्त्य लोक में यसी रीत छ। यॉ धन–दौलत पै बेर मैंस अहकारी है जॉ। और एक दिन यौस लै ऊछ जब वीक नौ ल्हिणी लै क्वे नि रूंन।''

''तै पर लै गुस्याणि ज्यू ! मैंस नाक–भाल करम करते रईं, आज लै करनी, भोल लै करते रौल। राम कैं बणबास होल। सीता कैं रावण हर लि जाल। कंस आपणि बैंणि और भिंज्यू कै कैदखाण में बन्द करौल। पाण्डवन कै लै बणबास होते रौल। द्रोपदीक चींर हरण होते रौल। आपण चारों तरफ देखि लियौ। कौरबनौ राज। बलात्कार, हत्य, आतंक, लूट–खसोट।''

''पलि फुकौ हो तौ क्वीड़न कै। हिटौ भितेर हिटौं। चहा बणूंनू। गव सुकि गो क्वौड़ पाथण में माचेत।''

●●●

आत्मनिर्भर

देख दू सैरि दुनिया
कन हवैगि लाचार
सोच सोच मन
मा क्वी नयु विचार,
अपडु धंधा अपडा हाथ
कर दू कुछ नई छ्वीं बात।
उठ सियां मनख्यूं बिजाळ
आत्मनिर्भरता मशाल बाळ
क्या होलू, कन होलू
गैरै से कर सोच बिचार
सच धर्म कर्म अर तप दगडि
कर समाज मा, कुछ यन काम
मनख्यूं मैनतों मिल जौ
यख पूरू दाम।
उठ सियां मनख्यूं बिजाळ
आत्मनिर्भरताा मशाल बाळ
खुद भी संभळन्न अर
होरु भी संभाळ
समाज तै नै दिशा दी क
आत्मनिर्भरता मशाल बाळ
उठ सियां मनख्यूं बिजाळ
आत्मनिर्भरता मशाल बाळ

–कविता कैंतुरा,
लुटियाग खल्वा चिरबटिया

सोचणू छूं एक गीत लिखि द्यो

पहाड़ की खौर्यू पर
सुन्न पड्या ड्येर्यूं पर
बूड़ दादा दादी सांखी पर
तौंकी कमजोर ह्वोंदि आंखि पर
सोचणू छूं एक गीत लिखि द्यो
दादा का धुंवाण्यां ह्वक्का पर
अर दादी का क्वीला सजौंदा साज पर
सोचणू छूं एक गीत लिखि द्यो
ढोल दमौं की ताल पर
बीत्यां पुरांणा साल पर
द्यो–द्यवतौं शक्ति पर
आस्था विश्वास अर भक्ति पर
सोचणू छूं एक गीत लिखि द्यो
उंद जांदा बट्टों पर
जु बौडी उब नि ओंदु क्वे
टूटयां छोड्या घौर पर
जख अब नि रौंदू क्वे।
सोचणू छूं एक गीत लिखि द्यो

– अजय शंकर राणा, पालाकुराली

''बदली द्योखा तस्वीर दुनिया की
सुंदर सा एक दृश्य बणौला
रैबार हम प्रति कु दी क
आवा सबि डाळा लगोला
मिलि–जुलि पर्यावरण बचौला''

''फैलण लग्यूं दिनरात परदूषण
बण हैर्याळी की आंई खैरी
हवा पाणी मा जहर मिलणू
मनखि पर्यावरण कु बण्यूं बैरी''

– अंबिका राणा पालाकुराली

औ लाटा ऐजा तू

जिकुडि खुदांई
त्वे बिना ससांई
वौडा पछांण लगो,
पुश्ता पैरा सळयो
नै–नै उपज फसल उपजौ
..... औ लाटा ऐजा तू
अथाह धरती यख त्वे जागणी
बीज सीजणू माटा मगो
रोजगार की पौध डाल
हुण्त्यलू छंद यख पुर्यो।
..... औ लाटा ऐजा तू
नाज का क्वन्का सिर्यो
साग अर भुज्जी लगो
टूटदि मकान्यूं चूं उगो
पाणी टूटी नैर सळयो।
..... औ लाटा ऐजा तू
सूखदि यख फसल पण्यो
बगदू पाणी रोक लाटा
पुश्ता पैरा थामी धौर
अजकालु सळ्यो गौं का बाट्टा।
..... औ लाटा ऐजा तू
माना त्वेमा डिग्री भौत
पढैलिखै कु फर्जंट तू
तकनीकी यख छ्वीं लगौं
बिजनेस कुछ यन खुलो।
..... औ लाटा ऐजा तू

बगत ऐगि जब त्वे कुछ कनै पडलू
पहाड़ तै नयु सृजन गढ़ण पडलू
धिकार्या पहाड़े तरफा कूल खटै
माधो सिंग जन बण्ण पडलू।
..... औ लाटा ऐजा तू

–अश्विनी गौड़
दानकोट
अगस्त्यमुनि रूद्रप्रयाग

लौकडौन

लौकडौन ह्वय्यूं छूं भितर ग्वड्यूं छूं,
औंणा दिन बै क्वारेंटाइन ह्वयूं छूं।
हडग्यूं चचड़ाट, मुखडि मुज्जा पडया
पौड़–पौड़ी भी कमर कुसेगी,
दिन भर कै दौ गद्दा सुखौणू
यका हौड़ बै, हका हौड़ तचौणू।
कपड़ू ध्वे–ध्वे रंग उतिरिग्ये,
मुखड़ि की चळक्वांस चलीग्ये।
चौदह दिनों तक बंद ह्वयूं छूं
औंणा दिन बै क्वारेंटाइन ह्वयूं छूं।
लत्ता–कपड़ा बैग ट्वपळा
घौर जाणौ छिन उकतांणा
कबारि–कबारि मैं तौं थथ्यौंणूं
थथ्ये–थथ्ये चित्त बुझौणू
नियम कानून मा लेट्यूं छूं
खदरा परे सि पकोड़ी धर्यूं छूं
चौदह दिनों तक बंद हवयूं छूं
औंणा दिन बै क्वारेंटाइन ह्वयूं छूं।
गौं–मुळक अर अपड़्वा खातिर
मर्जी से मैं यख रयूं छू
कोरोना की अग्नि परिक्षा
सती–सावित्री ही बैठ्यूं छूं।
गौं का भै बंद दगड्या मेरा
दूर बटि छूं तौं सनकोंणू
लछमण रेखा भितर मा रेक
सुदि रंदू मै मौंण हलौंणू
चौदह दिनों तक बंद ह्वयूं छूं
औंणा दिन बै क्वारेंटाइन ह्वयूं छूं।

कहावत (सकंलित)

–नितीश जोशी

1. खाण आपण मनकस, पैरण दुसरक मनकस।।
   (खाना अपनी मर्जी से, पहनना दूसरों की मर्जी से)
2. एक आंखक कस उज्याव, एक च्यलक कस पुत्याव।।
   (एक आंख आंख नहीं, एक सन्तान सन्तान नहीं)
3. मन करै हौर, करम करै हौर।।
   (हमरि मर्जी कुछ और दैव की मर्जी और)
4. भुकणी कुकुर कभै काटनै नै।।
   (भौंकने वाला कुत्ता कभी काटता नहीं)
5. च्यला तु जी रयै ब्वारी त्यर चरयो टुटि जौ।।
   (पुत्र सुखी रहे पर पुत्रवधू विधवा बने)
6. जसि कसि औलाद है बिन औलादै भल।।
   (कपूतों की अपेक्षा अपूत रहना ही अच्छा)

गढ़वालि कू लोक साहित्य कू अतीत, वर्तमान अर भविष्य

–डॉ. नंद किशोर हटवाल, देहरादून

लोक साहित्य अपणा आप मा एक अतीत ह्वंद। ये मा हामारू राजनैतिक, सामाजिक अर सांस्कृतिक अतीत दर्ज रंद। लोक साहित्य कू भविष्य ये का वर्तमान पर निर्भर च।

वर्तमान मा लोक साहित्य पर जतगा काम ह्वे सकन्द, जतगा ह्वोण चेंदी ततगा काम नि ह्वोणू। आज हममू पैली का मुकाबला भौत संसाधन उपलब्ध च। हमारा लोक मा संचार अर आवगमन कि सुविधा बढ़ीगी। हमारू लोक से आशय पर्वतीय सांस्कृतिक इकाई से च। ये दृष्टिकोंण से द्येखी जो त जु काम ह्वे सकंद छै अर जतगा कन कि जरूरत च ते मात्रा मा लोक साहित्य पर वर्तमान मा ज्यादा काम नि ह्वोणू। वर्तमान मा भूमण्डलीकरण का खतरा हमारा सामणी चा। यू भूमण्डलीकरण जन हमारा दूसरा क्षेत्रों ते प्रभावित कनू तनी यू हमारा हमारा लोक साहित्य तें नष्ट कनू। हमारा सामणी भौत सारा गीत–संगीत भैर बटि ओंणा, लोक संगीत कु भैर बटि ओंण बुरू नी पर हमारू लोक संगीत और साहित्य कू तेजी से क्षरण चिंताजनक च। हम सभ्य ह्वोणा। यी तथाकथित सभ्यता बि आयातित च। ये कू खामियाजा लोकसाहित्य की समाप्ति का खरता का रूप मा बि हमारा सामणी पर च। ये से आज का समय कि हमारी सबसे बड़ि चुनौति च लोकसाहित्य कू संग्रहण। आज कि तिथि तक जतगा लोकसाहित्य बच्यूं च तेकु संग्रहण ह्वयूं चैंणू। ये ही से हम तेतें बचे सकदा।

लोक साहित्य का संग्रहण का वास्ता के विशेषज्ञता कि जरूरत नि। ये तें क्वी बि करि सकन्द। लोक साहित्य हममू कथा, गीत, गाथा, जागर, लोकनाट्य, खेल गीत, लोरी, बालगीत, श्रम का गीत, आणा–पखाणा, भ्वींणा (पहेली) का साथ दूसरा रूपों मा बि उपलब्ध च। गीत गाथाओं का संग्रहण पर त थोड़ा–भौत काम ह्वे पर शेष रूपों कू बि संग्रहण जरूरि च।

लोक साहित्य कू स्वरूप बि हमतें समझ्यूं चैणू। लोक साहित्य तें नया रूप मा देखण कि बि जरूरत च। उदाहरण का वास्ता जनपद चमोलि मा साठ–सत्तर प्रतिशत लोक साहित्य संग्रहीति कर्यू चैंणू। चमोलि मा बिस्कम कि गाथा गायेंदी। यद्यपि यू वर्तमान मा विश्वाकर्मा नो से जाण्यण बैठिगी। यू बि एक खतरा च कि हर लोकनायक, लोकदेवता तें हम पौराणिक द्यब्ता से जोड़दा। यी गाथा संग्रहित नि ह्वे सकी।

कयी बार जब हम लोकसाहित्य कू संग्रहण अर लिप्यंकन करदा अर हिंदी रूपांतरण करदा त भौत तटस्त रोंण का बावजूद हमारी दृष्टि ते लिप्यंकन मा घुलि जांदी। यी बात लोक कथाओं मा ज्यादा च। हमतें ये मामला मा बि सचेत रोण कि जरूरत च। यदि हमारू दृष्टिकोण वे लिप्यंकन मा च त हमतें यी बात स्पष्ट लिखीं चेंणी। यी बात लोकसाहित्य का वर्गीकरण पर बि लागू होंदी। हमतें जु बि लोकसाहित्य उपलब्ध होंद वे तें हम कथा, गीत, गाथा, जागर, लोकनाट्य, खेल गीत, लोरी, बालगीत, श्रम का गीत, आणा–पखाणा, भ्वींणा (पहेली) का फ्रेम मा हि विभक्त करदा। लेकिन हमारू भौत सारू साहित्य ये कैटेगरी मा नि ओंद। यी बात लोकोत्सवों पर ज्यादा लागू होंदी। रम्माण कू उदाहरण हमारा समणि पर च। रम्माण एक बहुरूपीय आयोजन च। नो से यनू लगणू च कि यू आयोजन रामकथा से संबंधित होलु पर ये पूरा आयोजन मा रामकथा से संबंधित आयोजन सिर्फ एक दिन होंद। रामकथा से संबंधित वे नृत्य तें रम्माण बोलि जांद। यू पूरू आयोजन लगभग 14 दिन कू च। बैसाखी से रम्माण कि तिथि आयोजन तक। यू उत्सव मेला बि च, अनुष्ठान बि च, यात्रा बि च, लोकनाट्य बि च, ये मा रम्माण कि गाथा बि गायेन्दी। यू विविध रंगी आयोजन च। लोक साहित्स तें बि हमतें ये ही रूप मा समझ्ण कि जरूरत च। नयी दृष्टि अर नया रूप मा देखण कि आज जरूरत च तबि हम अपणा लोक कि सही तस्वीर सामणि पर रखी सकदा।

उत्सवों तें ल्ये कि बि एक नयी दृष्टि कि जरूरत च। चमोलि की भोटिया जनजाति मा एक उत्सव प्रचलित च लास्पा । एक बार हमारा एक दगड़्यान पूछि कि यू के कारण से मनायन्द? मौसम परिवर्तन, फसल या क्वे धार्मिक कारण। मिन बोलि यू प्रवर्जन कू उत्सव च। जब ये जनजाति का लोग अपणा ग्रीष्मकालीन आवासों बटी शीतकालीन आवासों ते प्रवर्जन करदा त यू उत्सव मनायन्द। अर्थात पहाड़ का लोकसाहित्य अर उत्सवों मा यख की भौगोलिक, सामाजिक स्थितियों को बि संज्ञान जरूरि च। हमतें लोक साहित्य की सही मीमांसा अर व्याख्या कनो तें पैलि का जु बणा–बणाया

फ्रेम च वे से हटि के बि सोचण कि जरूरत च। तबि हम उत्तराखण्ड का पर्वतीय क्षेत्र का लोकसाहित्य कि सही तस्वीर प्रस्तुत करी सकन्दा। हमारा लोकसाहित्य मा कविता मा कहानी, कहानी मा कविता, गद्य मा पद्य, पद्य मा गद्य ओंद। लोक मा क्वे अनुशासित ह्वोंण कू यू दबाव नि कि गीत, कहानी, कविता का मानकों पर सी खरू उतरू। हम यन तें अलग–अलग फ्रेम मा प्रस्तुत कला त सही तत्वीर हम प्रस्तुत नि करी सकन्दा। यू हमारू मैनेजमेंट ह्वेगी। हमतें आज लोकसाहित्य तें अपणा मैनेजमैंट से बचोण कि बि जरूरत च। लोक साहित्य जे रूप मा विद्यमान च एक बार वे ही रूप मा ओंण चेंदी। फिर वे पर कई प्रकार का प्रयोग करी सक्यंद। नया प्रयोग, नयू रूप बि निर्मित ह्वोंण चेंदी।

लोक साहित्य मा व्यक्त विचारों से जरूरि नि कि हम सहमत ह्वो। ह्वोण बि नि चेंदी। बहुत सारी गाथाएं, गीतों मा आज की दृष्टि से कमजोर अर समाजविरोधी विचार च। पर लोक साहित्य तें वेकि भाषा, शिल्प, मुहावरे, वाक्य विन्यास, रचना टैक्नीक का वास्ता संग्रहीत कन जरूरी च। वे मा व्यक्त विचारों का वास्ता ना। लोक साहित्य की भाषा अर शिल्प मा स्थानीयता तें व्यक्त कन की ताकत च। यी ताकत बचोंण जरूरि च। दूसरी भाषाओं मा हम स्थानीय भूगोल, कृषि और सामाजिक जीवन तें यति अच्छा ढ़ग से ब्यक्त नी करी सकन्दा। लोक साहित्य ये मा मदद करी सकन्द। लोक साहित्य मा स्थानीयता कारगर तरीका से ब्यक्त ह्वोंदी। यी ताकत प्राप्त कनों तें लोकसाहित्य कू संकलन संरक्षण जरूरि च।

भौत सारू साहित्य संग्रहित ह्वोण जरूरि च। आज हम बखूबि ये काम करि सकन्दा। कठिन भूगोल का कारण काफी साहित्य अबि संग्रहित नि ह्वे सकि। यू ही लोक साहित्य कू भविष्य तय करलू।

–मो0 7983567956 ●●●

रैबार

दिल का द्यूल अखण्ड द्यू छ
तेरो मेरो माछी पॉणी ज्यूँ छ
क्या कर्ला कैका अंगार
सची गैल्या जोड़ीदार।
धरती को पिठॉरो नी कैन लाण
हैंसी रण खेली, फेर मरी जाण
जीवन यो दिन चार।
सची गैल्या जोड़ीदार।
कनकैक बुजौण दिल की आग
मरीक मिटली माया को दाग
तेरो दिन्यों उपहार।
सची गैल्या जोड़ीदार।
हरीं फॉगी बुणदी जनी घुगूती घोल
रात–दिन मैकूँ तनी तेरी दंदोल
स्वॉ जांद सरींल पार
ची गैल्या जोड़ीदार।
माया कबी दिखैंछ नी दिखैंदी
खून–पॉणीन ऑख्यॉ लिखैंदी
बॉची न लाग गॅवार
सची गैल्या जोड़ीदार।
दुन्या की ऑख्यौं मर्च खूब छ लोण
तेरी मेरी माया छुयांलून खोण
चुचा भेजणू नी रैबार
सची गैल्या जोड़ीदार।

–गोविन्द जातक

नि जा इजा !

–ललित सिंह सिराड़ी, पूर्व प्रधानाचार्य

नी जा इजा गों गाड़ छोड़ी यां क्वे नि रै जाला
तसिकै कनै पहाड़ नाका गों सब उजड़ी जाला।
जेसीबी मजदूर खै हाली जै लागीं पहाड़
ठुल मैस नानन खैजाणंई खाणींनैकि बहार
इन्जीनियर सड़क खै ल्हीनी, डाक्टर मरीज
ठुल भाग नेता छन खांणी नि भरीन भकार।।
नि जा इजा गों गाड़ छोड़ी.....
मोंलनैल दुकान खै हालीं खै सिनेमा हौल
माफियात मुफत खोरै भै पुलिसाक सौंकार
टीटीनैल रेल खै हैछौ, धर्म खाणों देश
कस पिरीम छी तु मैं खानी, खतम छु परिवेश।।
नि जा इजा गों गाड़ छोड़ी.....
जंगलादीन जंगल खांई डबल वालनैल गौं गाड़
खेत खलिहान बांज पड़ी छन चुल सबै निमाण
पेट पुठ सब एक्कै है गयीं गरीब छन तिषाण
कां कुड़ि लगूं कां ख्वर छुपूं कां लगूं दिसाण।।
नि जा इजा गों गाड़ छोड़ी.....
पलायन पलायन कूल कूनै निपटी पहाड़
एनजीओल लै फैलै हाछो कालो कारोबार
दिखावनैल रिश्त खैया ब्या काजनैकि रीत
डीजे बजै भंगड़ा नाचनी हराण पहाड़ि गीत.....
नि जा इजा गों गाड़ छोड़ी.....
भ्रष्टाचारैल देशै खैहै कां तक क्वे भाजलो
कसिक चलैं रिक्शा टैम्पू कसिक त्वे राजौलो
भरौस कर तरक्की होली यांलै ह्ववोल सुधार
बड़ि उम्मीद में वोट देछी, क्वे करोल उद्धार ! ?
नि जा इजा गों गाड़ छोड़ी यां क्वे नि रै जाला
तसिकै कनै पहाड़ नाका गों सब उजड़ी जाला।।

लोककथा

इलै हैंस्युं छौ मीं

– डॉ.उमेश चमोला, देहरादून

मंगळु एक ग्वीर छोरा छौ। एक दिन बौंण मा स्वो गाज्यों तैं चरौणू छौ । तैका गाजि चन्ना कै छा , अफु स्वो कुळैं का डाळा निस्स छैल मा मुरलि छौ बजौणू। मुरली भौंण सैरा बौण गूंजणी छै। तबरि बौणा बाटा तैन देखि कि तखो राजा अपणा दल बल का दगड़ा छौ जाणू। मंगळु तौंतैं देखी खित्त हैंसि। राजाऽ वजीर तैं यो भलु नि लगि। तैन राजा मू मंगळू शिकैत करि दीनि। राजन मंगळू तैं हैंसणे वजौ पूछि। मंगळुन बोलि – ''अबि ये बतौणो बग्त नी छ।'' तैकि छ्वीं सूणी राजा कुरोधिगे। राजान स्वो कैदखाना मा डाळेलि। मंगळुन राजा मू हथजुड़ै करि, ''माराज! मीतैं मुरलि बजौणो शौक छ। मीतैं कैदखाना मा भी मुरलि बजौण द्यया।

''तुमतैं सुबेर रोजि सुरक्षाकर्मि थ्वड़ि देरौ कैदखाना बटिन भैर लिजौला। भैर जाणा बाद तुमतैं मुरलि बजौणो मौका दिया जालु। मुरलि बजौणा बाद तुमतैं अजि कैदखाना मा डाळ्या जालु। – राजान ने मंगलू मू बोलि।

राजै एक नौनि छै। वींकु नौ दिव्या छौ। स्या बिज्यां स्वाणि छै। वींतैं गाणौ शौक छौ। एक दिन स्या बाटा मा लमडि। वीं पर चोट फटांग लगि। ये से वींकि स्मृति चली गे छै। अब स्या कै से भी बात नि करदि छै। अफ्वीं मा डूबीं रैन्दि छै। राजान वींकि स्मृति पौणो भौत जतन करि पर क्वी फैदा नि ह्वै सैकि।

रोजि सुबेर राजाऽ सुरक्षाकर्मि मंगळु तैं मुरलि बजौणो तैं जेल से भैर लिजान्दा छा। भैर ऐक स्वो मुरलि बजौन्दु छौ। मुरली भौण दिव्याऽ कन्दुण्यों मा भी पौंछदि छै। वींतैं स्या भौण भौत स्वान्दि छै। स्या अपणा कक्ष से भैर औन्दि छै अर मुरली भौण तैं एकटक सुण्णी रैन्दि छै।

एक दिन राणिन दिव्या मुरली भौण सुण्द देखि। राणि तैं भौत बग्त बाद दिव्या मुखड़ा मा पुळ्याट दिखेणि। राणिन या बात राजा मू बिंगै दीनि। राजान मंगळु तैं कैदखाना से भैर औणो हुकुम दीनि। राजान यो हुकुम भी दीनि कि मंगुळु अब ये ही दरबार मा रैलु अर दिव्या तैं मुरली भौण सुणौणु रौलु। अब मंगळु सदनि मुरलि बजौणू रैन्दु अर दिव्या सुण्णी रैन्दि। मंगळू मुरली भौण दिव्या तैं इतगा भलि लगि कि स्या ठिक होण बैठी। स्या अपणा घौरवाळों दगिड़ि बुलाण चुलाण बैठी। द्वी–चार दिना बाद स्या गाण भी बैठी। अब मंगळु मुरलि बजौन्दु अर स्या मुरली भौण पर गीत गाण बैठिदि। वीं मा अंयां ये बदलौ से राजा अर राणि फसक्यां छा।

एक दिन राजा मूं राणिन बोलि, ''माराज! मंगळुन हम पर भौत बड्डु ऐसान छ कर्यूं। मी त इन लगदु कि दिव्या अर मंगळु द्वी एक हैका तैं चान्दा भी छन। हमतैं यों द्वीयों कु ब्यौ करि द्येण चैयेन्द।''

''महाराणि! हमारु क्वी नौनु नी छ। हम जै दगिड़ि दिव्यौ ब्यौ कल्ला स्वे हमारा राज्य कु वारिस भी होलु । राज्य चलौणौ तैं सूझबूझ भी चैन्दि। जब हमतैं मंगुळु मा यि गुण दिख्याला तबै हम दिव्यौ ब्यौ मंगुळु से कल्ला।''– राजान राणि तैं बिंगै दीनि।

एक दिन पड़ोसा राजा वीरेन्द्रौ दूत ये राजाऽ दरबार में आयि। तैन राजदरबार मा राजा वीरेन्द्रौ रैबार पढ़ी तैं सुणाइ–

''हम आपसे द्वी सवाल छन पूछणा। आप यों सवालों का जवाब द्योला त हम आपा राज्ज पर लड़ै नी कन्यां। जवाब नी दी सकेला त हम आपतैं कैदखाना मा डाळी तैं आपा राज्ज तैं अपणा राज्ज मा मिलै द्योला। तब तुम कखि का नी रैण्यां।''

पैलु सवाल – '' ये चन्द्या टुकड़ा तैं द्याखा। ये देखी बता येमा हम कख अर आप कख ?– चंद्या टुकड़ा देखी दूतन रैबार पढ़ि।

अपणा दगड़ा मा लैंयां द्वी घोड़ों तैं राजदरबार मा सब्यों का समिणि दिखैक दूतन दुसुरु सवाल पूछि,'' यि द्वी घोड़ा यकु जना छन दिखेणा । योंकु रंग भी एकिमण्यां छ। बता यों मदि कु बुबा छ अर कु नौनु छ ? जु बुबा छ तैका भारा बरोबर चन्द्या सिक्का तुमतैं हमारा राज्ज मा पौंछोण पड़ला ।''

क्वी भी राज दरबारि राजा वीरेन्द्रा भेज्यां यों सवालों कु जवाब नि बतै सकि। मंगळुन बोलि,''माराज! आप चौन त मी यों सवालों कु जवाब बतै सकुदु।'' बतौ – राजान मंगळु तैं हुकुम दीनि। मंगळुन दूता लैंयां चन्द्या टुकड़ा तैं न्याळी तैं बोलि, '' माराज! यो चन्द्यो टुकड़ा राजा वीरेन्द्र अर आपा

राज्य का नक्शा का रूप मा छ। ये मा ऐंच वाळु बिन्दु आपा राज्य अर निस्स वाळु बिन्दु वीरेन्द्रा राज्य तैं छ दिखौणू। मंगळु ग्वीर त छैं छौ पर स्वो पैलि घोड़ों कु ब्योपार भी कर्दु छौ। तैतें घोड़ों का बारा मा सब पता छौ । दुसरा सवालो जवाब देन्दि दौं मंगळुन बोलि,' –'' दूता लैंयां यों द्वी घोड़ों तैं सैणा मा छोड्यो जौ। जु घोडु अगनै–अगनै दौड़ी जौलु अर थ्वड़ि देर मा पिछनै वाळा तैं जागु स्वो नौनु छ। हैकु घोडु तैकु बुबा होलु।''

राजा मन मा मंगळू हुस्यारिन छाप छोडिलि छै। राजान दिव्यौ ब्यौ मंगळु से करि दीनि अर तैतें अपणु वारिस भी बणै दीनि। मंगळुन राजा मू बोलि,'' माराज! बौण मा आपा दल बल देखी मि खित्त हैंस्युं छौ। आपन मि पूछि छौ कि मि किलै छौं हैंसुणू। मीन बोलि छौ कि मी बग्त औण पर हैंसणै वजै बतौलु। अबार स्वो बग्त ऐगि। मी इन सोची हैंस्यु छौ कि मि राजै नौनि दगिड़ि ब्यौ कर्लु अर अफु भी राजा बणलु। मी अपणि सोच पर हैंस्यु छौ। मेरि स्या सोच आज सुफल ह्वेगि।

–मो0 7895316807 ●●●

मनल आवो

–देवकी नंदन काण्डपाल, खान (मंगडोली) अल्मोड़ा

नसि आवो, भल्स्यो
लौटणाक तें नैं, अवाक
यें जमण हुँ आवों
स्वागत छ, नानतिनाओ
तन–मनल जावो
धन यें कमाओ
तुमर जाइयल पहाड़
भिस्मंत है रईं
बिं पन्याइन ऐ गईं
बाबुल बुनैत धरी
चिणाइ को करल उत्तराखंडकि
मुजफर क बलिदान
ख्याड़ किलै जौल
सरकार तें चकंबन्दी
डेरी, स्कूल, अस्पताल,
विकास को लुछौल
ठौर–ठौर कोठि ठड़यूणी
छलियों कें को छलौले।
आजि यक क्रान्ति चैं
प्रदेशक रंग–रूपा लिजी
केन्द्र बटी हिस्स चैं
भ्यैर नें यांईं चैं
रेल–खेल रूजगार चैं
देर नें इक्कीस चैं
अब गजबजू नें, सिपाल चैं
आओ, दगड़े धत्यूल दिल्ली कें
भूटान बणूल गों–गाड़ कें
हमर पुर्ख भौ पेली आछ
दक्षिण बै मुगालिया–काल में
गैर–सेंण खोदि–खादि
जिन्दगी लगैछ दॉव में
नाज–पाणिकि दन–मन
नांची घट उज्छाव में
के जै कर, के नि कर
भुर–भुरु उज्याव में
घड़ि–घड़ि खुट धरा
खुटकणिया खेत में
दै–दूदकि दनमन हो
छॉ फानी रात में
मगन रौ हमर बुजुर्ग
धुर–जंगव उड़्यार में।
भजा–भाज के हुं करुं
अब त लोकतंत्र छ
न्यारै–न्यारै रंग भरुं
हिमवन्ती मुलुक में।
ओ सरकार, खबरदार
देव–भू कें दान कर
पर्वती–समाव में
करण लैक विचार कर।
आ भुला, पहाड़ आ
जणाक तें नैं,
जमण हुं आ
दूर बै नजीक आ।

बिलाण फै गो हिमाल

–नवीन बिष्ट, ग्राम सरस्यूं अल्मोड़ा

बिलाण फै गो हिमाल
हौलाण ल्गि गईं
ड्न–क्न, गैल–पातल
भुत बकुरि गईं
किवाणि में।
फौरी गईं
नागफणि, कनैल, बेरि और चड्यूव
अन्पनीण ल्गि गई, य क्नॉऽ भूड. में
मन्खिय्क निमैल स्वैण।
कैलै खिति है
पहाड़ा ख्व्रन जगधूव
मुकिं मारि हली, मुनि हली पैक
उ, करनईं आ्पणि मनकसि
ल्हि ज्नई चिहोड़ि बेर
ड्इ–बोटॅू लो्ति, पहाड़ैकि गुदि
य चिहोड़ा–चिहोड़, लूछालूछ में
भुभ्णी, निशा्सी, रौइ–बौई गई
ल्ट–काल गाड़–गध्य्र।
क्लि रीशाक, रौयाट बौयाट में
बगनईं स्य्र, उधरनईं भ्योव, च्य्पीनईं घर
ल्हिनईं नर अठ्वार।
आई बखत छू
नि पणि रै ब्याव, है सकैं सज–समाव
थ्मी सकीनी–रड़न– बगन, च्य्पीन
खे्ति–प्ति, देई महाव
अ्टेरी सकीं का ऽ व
ऐ सकॅू सुकाव।

खड्डु उठाऽ – अग्वाडि बढ़ा

स्वरोजगार की राह मा
जळमभूमि कि छांव मा
पहाड़ों की खुचळि मा
रीति रिवाज निभौण चला
खड्डु उठाऽ––––– अग्वाडि बढ़ा

गढकुमौं का मान मा
उत्तराखंड सम्मान मा
गढभाषा स्वाभिमान मा
हिमाळै अभिमान मा
खड्डु उठाऽ ––– अग्वाडि बढ़ा

हैरिभैरि सार मा
छैल पाखों धार मा
गौडी भैस्यूं गुठ्यार मा
द्यवतौं का मंडाण मा
खड्डु उठाऽ ––– अग्वाडि बढ़ा

घौर सुन्न पड़ी डंडयाळी मा
छज्जा की पठ्ठाली मा
सेरा रोपण्यूं सार मा
नौ नाजै की बार मा।
खड्डु उठाऽ––– अग्वाडि बढ़ा

घुघति का त्येवार मा
ईगास बग्वाळ मा
कोदे झंगोरे धांण मा
पहाड़ की पछांण मा।
खड्डु उठाऽ ––– अग्वाडि बढ़ा

ह्यूंद की लंबी रात मा
देवी द्यवतौं जात मा
भौज लैन भात मा
तिमला माळा पात मा।
खड्डु उठाऽ ––– अग्वाडि बढ़ा

पुरांणा दगड्यौं गैल मा
घुघती बसूति का खेल मा
उदस्यां मनै सास मा
दाना स्यांणौ की आश मा।
खड्डु उठाऽ ––––– अग्वाडि बढ़ा

बौंण पुंग्ण्यूं मोळयार मा
हैंसदा बुरांश धार मा

गौं मुलुक बर्यात मा
भेना–स्याळि का मजाक मा
मांगळों की भौंण मा
लौकदि कुयेडि सौंण मा।
खड्डु उठाऽ ––––– अग्वाडि बढ़ा

–अशोक जोशी, नारायबगड चमोली

न त हैसि सकणा छां न रवेऽ सकणा छां

न त हैसि सकणा छां न रवेऽ सकणा छां
हम पुटगा आँसू पुटगै घुटणा छां
यु परदेस हम खुणि तातु दूध सी ह्वेगे
न घूटि सकणां छां न थूकि सकणा छां
पीठ फेरि छै हमुन जौं डांड्यूं का जनै
ज्यान आफत मा ऐ त उनैइ भजणा छां
कख रैऽ सकद डाळि जलड़ौं बिगैर हैरि
रौं लौंफेणा फौंक्यूंम अब ग्वाळु खोजणा छां
आँखा घुर्याणान क्यो देखी बौड़द अपणौं तैं
घर–बौड़ा छन हुयां यनु क्यो नि स्वचणा छां
छौं घंघतोळ मा कब सुखिला दिन बौड़ला
जै कैमा जिकुड़ि को हम उमाळ खतणा छां
बोल्यूं मन्यां 'धरम' को अब घौरम रयां तुम
झूठा सुखऽ खातिर क्यो,अपणौं छ्वड़णा छां।।

–धर्मेन्द्र नेगी

कन मामारी फैलै यूँ चीन्यूंन

कन मामारी फैलै यूँ चीन्यूंन
बिमारी कै देखिन
पर यन भि
ये देखी, सूंणी
जैन मनखि लम्पसार
घैल करिन
बीमारी नौं कोरोना
भैर भितर संगति दौन
स्कूल कॉलेज पढै–लिखै
सबि चुप्प–मौन।
सैर गयां मनखि
घौर औणौ तरसणां
कखि कैगि आंखी जग्वाळ मा फफडांणी
क्वे विपदा मा पैदल भटकणां।

–आरती राणा छात्रा– पालाकुराली

सुन्दरकांड में बर्णित काथ

—डॉ0 मनोहर चन्द्र जोशी, प्रधानाचार्य(से0नि0)

हमार समाज में श्री रामचरितमानस क बौहौत विशेष महत्व छु। गोस्वामी तुलसीदास ज्यू द्वारा रचित यो एक लोक कल्याणकारी ग्रन्थ छु योई कारण आज लै हमार समाज में रामचरितमानसक अखंड पाठ श्रद्धा और भक्ति क साथ कराई जां। रामचरित मानस में सात कांड छन जनार अलग—अलग नाम छन, जनूंमें सुन्दरकांड क विशेष महत्व छु। ज्यादातर लोग सुन्दरकांड क पाठ मंगलबारा क दिन आपण घरों में या मंदिरों में करते रोंनी। हनुमान, सीता कि खोज में लंका गई, लंका त्रिकुटाचल पर्वत में बसी हुई छि। त्रिकुटाचल में तीन पर्वत छन एक सुवैल पर्वत जैक मैदान में राम—रावण युद्ध भौ, दुसर नील पर्वत जां राक्षसों क महल बणि छि और तिसर सुंदर पर्वत जां अशोक वाटिका बणि छि। यो अशोक बाटिका में हनुमान सीता दगाड़ भेट करनी। यो कांड में सीता कि खोज खास छु, सुन्दरपर्वत में बसी अशोकबाटिका में हनुमान ज्यू कि भेट सीताज्यू क दगाड़ हुना क कारण यो कांड क नाम सुदरकांड धरि गौ। सुन्दरकांड में हनुमान ज्यू द्वारा लंका में सीताज्यू कें अशोक बाटिका में जैबेर उनूंकें रामचन्द्रज्यू क संदेश पहुंचौनक बौहौत मार्मिक वर्णन और उनर द्वारा लंका दहन करिबेर श्री रामज्यू पास वापिस औंनक चित्रण करि राखौ। उसिक त सबै लोग सुन्दरकांड क पाठ करते रौंनी पर गायन करन में या लगातार दोहा, चौपाई पढ़ते रौंन में यो काथ भलीकै समझ में नि औंन, योई कारण सुन्दरकांड में वर्णित 60 दोहाओं दगाड़ लेखि चौपाईं में जो काथ छु, उ यो प्रकार छु—

किष्किंन्धाकांड में सीता ज्यू कि खोज करनै कि तैयारी करी जें, तब जामवंत हनुमानज्यू थें यो कौंनी कि तुम सीता कि खोज करिबेर उनूकें यांकि खबर बतैबेर वापिस लौटि आओ फिरि श्री राम ज्यू आपण बाहुबल द्वारा राक्षसों कें मारिबेर सीताज्यू कें वापिस लि आल।

जामवंताक यो सुन्दर बचन सुणिबेर हनुमान ज्यू कें बौहौत भल लागौ, और उनूंल यो कौ कि तुम लोग आपण दुःख कें सहन करते हुये कंदमूल फल खैबेर म्यार लौटन तक रुकि रया, जबतक कि मैं सीता ज्यू कें देखिबेर वापिस नि ऐ जों। यो काम जरूर होल किलैकि म्यार मन में विशेष खुशि हुनैं। यो कैबेर सबौंकें हाथ जोड़िबेर और मन में भगवान रामज्यू कें धारण करिबेर हनुमान खुशि हैबेर न्हैगै। समुद्राक किनार लै एक सुन्दर पर्वत छि हनुमान खेल—खेल में कुदिबेर उ पर्वताक मलि चढ़ि गै और बार—बार रामज्यू कें याद करिबेर बलवान हनुमान उ पर्वत बै तेजि क साथ उछलि गै। उनार उछलते हि उ पर्वत उई बखत पताल में धसि गै। तब हनुमान श्री रामचन्द्र ज्यू क अमोघ बाणै चारि बौहौत तेजि क साथ जान फैगै। तब समुद्रै ल उनूंकें रामज्यू क दूत समझिबेर मैनाक पर्वत थें कौ कि हे मैनाक तू हनुमानै कि थकावट कें दूर कर और इनुकें विश्राम करन दे। तब हनुमानै ल मैनाक पर्वत कें आपण हाथै ल स्पर्श करिबेर प्रणाम करौ और कौ कि हे भाई भगवान श्री रामज्यू क काम करि बिना मैंकें बिश्राम कांछ ? (1)

द्याप्तों ल पवनपुत्र हनुमान कें जाते हुए देखौ, उनरि बिशेष बल—बुद्धि कि परीक्षा ल्हिनै लिजि उनूंल सर्पों कि माता सुरसा कें वां भेजौ, वील ऐ बेर हनुमान ज्यू थें यो कौ कि आज द्याप्तों ल तुकें म्यर खानै लिजि भेजि राखौ, यो बात सुणिबेर पवनपुत्र हनुमान ज्यूल कौ कि मैं श्री राम ज्यूक काम करिऔं, फिरि लौटिबेर ऐजौंल किलैकि मैंकें सीता ज्यू क पत्त लगैबेर उनूंकें खबर दिन छ,फिरि मै ऐबेर त्यार मुख में घुसि जौंल और तु मैंकें खै लिये। हे माता मैं सांचि बुलानयौं ऐंल मैंकें जान दे। जब कोई लै बातै ल उनूकें जान नै दि तब हनुमान ज्यूल कौ कि ठीक छ, आब मैंकें खैल्हे। तब सुरसा ल योजन भरि (चार कोश) आपण मूंख फैला तब हनुमान ज्यूल आपण शरीर कें वीहै दुगुण ठुल करिल्हे, सुरसा ल तब सोल योजन ठुल मुख खोलि दे तब हनुमान बत्तीस योजना क हैग। सुरसा जतुक—जतुक आपण मूंख क आकार कें बढ़ाते जें हनुमान वीहै दुगुण रूप देखै दिनी तब वील सौ योजन(चार सौ कोश) आपण मूंख कें खोलौ तब हनुमान ज्यूल झटपट आपण बौहौत नान रूप बणें ल्हे और वीक मुख भितेर जैबेर फिरि भ्यार निकइ ऐ और वीथें सिर झुकैबेर बिदा मांगन फैट। तब सुरसा ल कौ कि मैंल तुमर बल और बुद्धि कि भेद पै हैलौ जैक लिजि मैंकें द्याप्तों ल यां भेजि राखौ। तुम रामचन्द्र ज्यू क सब काम करला किलैकि तुम बल और बुद्धि क भंडार छौ, यो आशीर्वाद दिबेर सुरसा वांबै न्हैगै, हनुमान लै वांबै खुशि हैबेर अघिल कै जान लागि गै। (2)

समुद्र में एक राक्षसी रौंछि जो कि आपणि माया

द्वारा अगास में उड़नेर वाल पक्षियों कि छाया कें पाणि में देखि बेर उनूंकें कें पकड़ि लींछि जै कारण ऊँ फिरि उड़ि नि सकछि और पाणि में छुटि जांछि ये प्रकार उ उड़नेर वाल पक्षियों कें खाई करछि, योई प्रकारक छल वील हनुमान ज्यू क दगाड़ लै करौ पर हनुमान वीक छल कें तुरन्त पछ्याणि गै और धीर–बीर हनुमान वीकें मारिबेर समुद्र पार गई, वां जैबेर उनूंल जंगलै कि सुन्दर शोभा देखै, जां भौंर मौ क लोभ में गुंजार करन लागि रौछि। अनेक प्रकाराक पेड़–पौंध फल–फूलों ल सुशोभित छि, पशु–पक्षियों कें देखिबेर ऊं बौहौत खुशि हैगै। सामणि में एक विशाल पर्वत देखिबेर हनुमान बिना डरि उ पर्वत में चढ़ि गै। शिवज्यू कौंनीं–हे उमा! यो सब में हनुमानै कि कोई बढ़ाई न्हां यो सब प्रभुक प्रताप छु जो कि काल कें लै खतम करि द्यौं। उ पर्वत में चढ़िबेर उनूंल लंका कें देखौ– उनूंकें एक बौहौत लम–चौड किला देखीनौ जैक बार में के कई नि जै सकीन। उ किला बौहौत ठुलछि वीक चारों तरफ बै समुद्र छि, सुनु कि चारदिवारी क उज्वाव फैल रौछि। बिचित्र प्रकाराक मणियों ल जड़ित सुनु कि चाहरदिवारी भितेर सुन्दर घर बणि छि, जनूमें चौराह, बजार, सुन्दर रास्त और गल्लि छन, सुन्दर नगर खूब भल सजि हुई छ। हाथि, घ्वाड़, खच्चर, पैदल और रथों कें को गणि सकों। अनेक रूपों क राक्षसों क दल छन, यो प्रकार उनरि यो बलवान सेना के बर्णन करन कठिन हैरौ। जंगव, बाग–बगिच, फुलबाड़ि, तलाब, कुँव, और नान–नान बावड़ी सुशोभित छन। मनुष्य, नाग,द्याप्तों और गंधर्वों कि कन्या आपण रूपैल मुनियों क मन कें लै मोहित करन लागि रई। कांई पर्वताकार विशाल शरीर वाल पहलवान गर्जना करन लागि रई जो कि अखाड़ों में आपस में लड़नीं और एक दुसार कें ललकारनीं। भयंकर शरीर वाल करोड़ों योद्धा बड़ि सावधानिल उ नगर कि चारों दिशाओं बै रखवालि करनीं। कतिलै दुष्ट राक्षस भेंसों, मैंसों, गोरूँ, गधों और बाकरों कें खान लागि रौछि। तुलसीदास ज्यूल इनार बार में यो थ्वाड़–बौहौत यो कारण लेखौ किलैकि यो सब श्री रामचन्द्र ज्यू क बाण रूपी तीर्थ में आपण शरीर कें छोड़ि बेर परमगति कें प्राप्त कराल। यो प्रकार नगर में बौहौत ज्यादा रखवालों कें देखिबेर हनुमान ज्यू ल मन में बिचार करौ कि आपण नानू–नान रूप धरिबेर राता क बखत नगर में प्रवेश करूंल। (3)

हनुमान ज्यू बौहौत नान(मच्छर) क रूप धरिबेर मानव रूप में लीला करनेर वाल भगवान श्री रामज्यू कें याद करिबेर लंका हौं जान लाग। लंका क द्वार थें लंकिनी नामै कि एक राक्षसी रौंछि, उ कौंन फैटि कि मैंथें बिना पुछिये कांहों जान लागि रौछै ?अरे मूर्ख तू मैंकें नि जाणनै, यांक जतुक लै चोर छन सब म्यार आहार छन मैं उनूंकें खै जां। तब महाकपि हनुमानै ल वीकें एक मुक्क मारि दि जै कारण उ खूनै कि उल्टि करते–करते जमीन में धुरि पड़ि। फिरि उ(लंकिनी)आफौ कै समावि बेर उठै और डरामारि हाथ जोड़िबेर प्रार्थना करन लागि और कौन फैटि– ब्रह्माज्यू ल जब रावण कें बरदान दे,तब जान बखत उनूंल मैंकें राक्षसों क बिनासै कि यो बात बतै कि जब कोई बानराक मारनैल तू ब्याकुल है जालि तो राक्षसों क अंत समझि लिये। हे तात म्यर यो पुण्य छु कि मैं श्री रामचन्द्रज्यू क दूत तुमुकें आपण आंखों क सामणि देखन लागि रयों। हे तात! स्वर्ग और मोक्षा क सारै सुखों कें तराजु एक पलड़ में घरि जाऔ और दुसार पलड़ में थ्वाड़ै देरक भल मैसक दगड़(सत्संगति) कें घरि जाओ तौ यो पलड़ ज्यादा भारि रौं मतलब यो छु कि सत्संगति चाहे थ्वाड़ै देरै कि किलैनि हो उ स्वर्ग और मोक्ष है लै ठुलि छु। (4)

तब लंकिनि ल हनुमान ज्यू थें कौ कि अयोध्यापति श्री रामचन्द्र ज्यू कें आपण मन में धरिबेर तुम नगर में प्रवेश करौ और आपण सब काम करौ। जैक लिजि श्री रामज्यू कि कृपा हैजें वीक लिजि बिष लै अमृत हैजां, शत्रु मित्र है जानीं, अथाह समुद्र गोरूँ क खुरों द्वारा बणि गड्ड बराबरि है जां, और सुमेरू पहाड़ लै एक माट क चुर जस हैजां। तब हनुमानज्यू ल आपण नानू–नान रूप धरौ और लंका नगरी में प्रवेश करौ। उनूंल वां जैबेर एक–एक महलै कि खोज करै, बौहौत ज्यादा योद्धा एथकै–उथकै देखी रौछि। फिरि उँ रावणाक महल में पुजि गै जो कि बौहौत बिचित्र बणि छि जैक बर्णन नै करि जै सकीन। हनुमान ज्यूल रावण कें उ महल में सिति हुई देखौपर वां सीता नि देखीन। फिरि उनूंकें एक सुन्दर महल और देखीनौ जैमें भगवान क एक सुन्दर मन्दिर बणि हुई छि। उ महल में श्री रामज्यू क आयुध (धनुश –बाण)क चिन्ह बणि छि जैकि शोभा क बर्णन नि करि जै सकीन, उ भवन में लागि हरि–हरि लुलसी क पौंधों कें देखिबेर हनुमान बौहौत आनन्दित हैगै। (5)

लंका त राक्षसों क निवासस्थान छु यां कोई सज्जन(साधु पुरूष) कसिक रों ? हनुमान ये प्रकार मनै–मन सोचन फैट तब उई बखत बिभीषण उठि गै। उठते ही उनूंल राम नाम कौ, यो सुणते ही हनुमान खुशि हैगै और उनूंकें सज्जन समझन फैट। तब उनूल यो बिचार करौ कि इनूँ दगाड़ जरूर परिचय करूंल किलै कि साधु पुरूष दगाड़

परिचय करियैल कोई नुकसान नि हुन बल्कि फैद हुंछ। तब एक बामण क रूप धरिबेर हनुमान ज्यूल उनूंकें अवाज दे, अवाज सुणते ही बिभीषण उनार पास आई और प्रणाम करिबेर कुशल पुछि और कौन लाग कि हे ब्राह्मणदेव आपण बार में सब समझैबेर बताओ। आफौं हरि भक्तों में कोइ छा ?किलैकि तुमुकें देखिबेर म्यार मन में बौहौत प्रेम उत्पन्न हुनां, या आफौं दीनों क दगाड़ प्रेम करनीं साक्षात श्री रामज्यू छा,जो कि मैंकें धरबैठि दर्शन दिबेर कृतार्थ करन्हों ऐरौछा। तब हनुमान ज्यूल रामचन्द्र ज्यू कि सारि काथ बतैबेर आपण नाम बता। यो सुणते ही द्विये श्री राम ज्यू क गुणगान करते–करते आनन्द मगन हैगै। (6)

बिभीषण कौंनी कि हे पवनपुत्र! म्यार बार में सुणौ, जसिक दांतों क बीच में जीभ रें उसिकै यां मैं रौं। हे तात मेंकें ये प्रकार अनाथ समझिबेर कभै सूर्यकुला क नाथ श्री राम मेरि लिजि लै आपणि कृपा कराल ? म्यर तामसी(राक्षसी) शरीर हुन पर कोई और उपाय लै न्हातन और नै मेरि श्री रामज्यू क चरणों में कोई प्रेम छु, पर हे हनुमान तुमारी यां औंन पर मैंकें यो विश्वास हैरौ कि श्री रामज्यू कि म्यार ऊपर जरूर कृपा छु किलैकि भगवानै कि कृपा बिना संत लै नि मिलि सकन। श्री रामज्यू ल म्यार लिजि कृपा करि राखै तबैत तुमूल लै आपण दर्शन मैंकें कराई। हनुमान ज्यू ल कौ कि हे बिभीषण! सुणौ यो भगवानै कि रीत छु कि उॅ सदा आपण सेवका क दगाड़ आपण प्रेम करि करनी। तुमि बताओ मैं लै कुलीन (ठुल बंश वाल) कां छौं, जाति क चंचल बानर छौं और सब प्रकार बिधिहीन छौं, यो लै कई जां कि जो रत्तिब्यान हमर नाम लै ल्हि ल्यौं तो उकें दिन भरि खाण लै नि मिलन। हे सखा! सुणौ, मैं यस अधम छुं परन्तु श्री रामज्यूल म्यार ऊपर लै कृपा करि राखै। ये प्रकार रामचन्द्र ज्यू क गुणों क बार में बताते–बताते हनुमान ज्यू क द्वियै आंखों बै आंसु औन फैगै। (7)

यास स्वभाव वाल भगवान(श्री राम) कें जाणते हुये लै जो संसाराक माया–मोह में भटकते रौं उ दुखि किलै नै होल। ये प्रकार श्री रामज्यू क गुणों क बर्णन करनै–करनै हनुमान कें परम शान्ति प्राप्त भै। तब बिभीषणै ल सीता ज्यूक बार में सब बात बताई कि उ लंका में कां और कै प्रकार रें। हनुमान ज्यू ल कौ कि हे भ्राता! सुणौ मैं माता जानकी क दर्शन करन चां। बिभीषणै ल माता जानकी क कै प्रकार दर्शन है सकाल ये सब युक्ति समझाई, तब हनुमान उनूंथें है बिदा ल्हि बेर फिरि उई मच्छर क जस (नानू–नान) रूप धरिबेर उ जाग में पुजि गै जां अशोक बन में सीता रौंन लागि रौछि। सीता कें देखिबेर हनुमानै ल उनूंकें मनैमन प्रणाम करौ। सारी रात उं सीता कें देखते रई, उनूंल देखौ कि सीता क सारै शरीर बौहौत दुबव हैगो, उनार ख्वर में जटाओं कि एक लट बणि गै और ऊं आपण मन में श्री रामज्यू कें याद करते रोंनी। सीता ज्यू आपण आंखों कें तलिकैं झुकें बेर आपण मन में श्री राम ज्यू चरणकमलों क ध्यान करन में लागि छि, सीता कें ये प्रकार दुखि देखिबेर हनुमान बौहौत दुखी हैगै। (8) **क्रमशः.....अगले अंक में.....**

–मो0 7579232500 ●●●

मेरू बचपन कु घर

तिबारी मा बैठयू छो में
सौचणूं छो एक बात,
का गैन होला सी दिन !
बैठयू छो उदास,
खौळा–चौक मा, खेल्या दिन ,
का गे होला आज,
आंखी मेरी भरी गैनी
देखी तिबार
बालापन का दिन बीत्यां जख
आज ह्येगि स्या खंध्वार
दै–दादा न खवांया जख,
भै बैंण्यूं कि याद
दग्ड्यों दगडी हँसी खुशी खेल्या कै त्यौहार
छाजा सज्यां रन्दा जख
कनु रौत्यालु चौमास
खुद लगणी मैतै तों दिनों की
कख हर्ची होलु मेरू सु मुलुक आज द्य
कातिक कु मैनु लगदू
दिवालियों की च बार
भैलु खेलेदूं यख
औजी बजोंदा ढोल की ताल
झुमैलों और गीतों की लगी बार
हंसी खुशी फैली रन्दी छे,
ये चौक तिबार
आज घास का बौटळा जम्या
मेरा चोक तिबार ।
बेटी–ब्वारी घास कु बणु– बणु जान्दा
बुड्या भग्यान अपरी छ्वीं बथ लांदा
मिली बाटी खान्दा सभी पल्यो और भात
कौदे की रोटी की त अलग ही छै बात ।
मन मेरी खुद्यैणू च
सोची–सोची बात
आंखी भरी गेनी मेरी
देख्यी अपरा गौ कु यु हाल द्य

–रिंकी काला, मयाली रूद्रप्रयाग

दूरी बनाण आज भौतै जरूरी छ

–डॉ० धारा बल्लभ पांडेय 'आलोक'

अरे दद–भुलियो, भै–बैणियो,
आज घर भतेर रौण जरूरी छ।
आपस में एक दूसरे हैबे,
दूरी बनाण आज
भौतै जरूरी छ।।
य कोरोना विषाणु छ,
एक फैलणी वायरस छ।
आज य दुनी में संक्रमित हैगो,
भौतै लोगों में हाथ लागणैल ऐगो।
आब कै हैं हाथ झन मिलाया,
दूर बैठी नमस्कार कौण,
भौतै जरूरी छ।
दूरी बनाण आज
भौतै जरूरी छ।।
ध्यान धरिया घर बे,
भ्यार झन निकलिया।
घर में लै दूर–दूर,
रणै कि कोशिश करिया।
हाथ बार–बार सापणैल,
बीस मिनट तक ध्वया।
फिर सैनिटाइजर लै,
हाथों में लगानै रया।
खाण हैबे पैली हाथ,
धुण भौतै जरूरी छ।
दूरी बनाण आज
भौतै जरूरी छ।।
मुख, आँख, कान, नाक पर,
हाथ बार–बार नि लगाण।
भीड़–भाड़ और पार्टी,
उत्सव में निजाण।
जरूरी हो तो मास्क लगै बेर,
सामान ल्यांहै जाओ।
और घर ले बेर पैकेट,
और हाथ भली कै धोओ।
छींक, खांसी, बुखार हुण पर,
डॉक्टर कै बताण,
भौतै जरूरी छ।
दूरी बनाण आज
भौतै जरूरी छ।।
घर सफाई हो,
हाथों में गंदगी ना हो।
लांकडाउनक दिनों क य,
बंद क उल्लंघन न हो।
मोदी जी ल हमर लिजी,
य मुहिम छेड़ी रैछ।
सब लोगों की रक्षा लिजी,
य अपील करी रैछ।
आज यैक पालन,
भौतै जरूरी छ।
दूरी बनाण आज,
भौतै जरूरी छ।।
जीवन अनमोल छ,
यैकि रक्षा करो।
अपण लिजी य,
नियमों का पालन करो।
हम स्वस्थ रोंल तो,
समाज देश लै स्वस्थ रोंल।
सब धर्म–जाति क,
समाज लै स्वस्थ हौल।
सबोंकि रक्षा लिजी घर में,
बंद रौण जरूरी छ।
दूरी बनाण आज,
भौतै जरूरी छ।।
भगवानैल य शरीर,
कुछ करणैं लिजी दिरौ।
जीवन में समाज व देशै कि,
सेवा लिजी दिरौ।
य शरीर रौल तो,
परिवार रौल।
गौं, गाड़, समाज,
देश व विदेश रौल।
यैकि लिजी आपण कें,
बचाण जरूरी छ।
दूरी बनाण आज,
भौतै जरूरी छ।।

–मो0 9410700432

नि भुलीन

–रमेश चन्द्र शाह

हौ जसि हौ नै, पाणि जस पाणि नै
डुबक, चुड़काणि, चैंस, ठठवाणि नै
के के नि पै हाल ! के के नि खै हाल !
कसिकै चैन न्हा, यो पराणि कैं।
रूड़ पड़ौ तो फुड़फुड़ाट
ह्यून लागौ, तो फुड़फुड़ाट
हद्द हैगे यो नरै हुणि
जब देखौ तब उई टिटाट !
कॉ हुणि गे उ पालङ क टपकि ?
कॉ हुणि गे उ जम्बू धुँङार
कॉ हुणि गे उ म्याल, उ कौतिक ?
कॉ हुं बिलाण उ रोज दिना त्यार ?
कस भै उ, जैल ह्यूना म्हैण में
पाख में से बेर घाम नि ताप
मैस भै, के भै ?ठठवाणि दगाड़
जैल नि खइ भै जरगा गाब
अघा मैसनैकि बात नि भुलीन
आम–बुजूनैकि याद नि भुलीन
कर हालौं छप्पन भोग कै, के हुँ ?
च्यूरौ गुड़ौक स्वाद नि भुलीन।

कतू दुखा छन

–श्याम सिंह कुटौला, अल्मोड़ा

किलै आयूँ यो दुणी में कतू दुखा छन।
कैकि मानू बात इजू कतू मुखा छन।।

रत्ती उठूँ रत्तिव्याण पाणी भरूंछू
फिरि सबना बिस्तरै में चहा पुजोंछू।।
गोठ जांछू पाण् औछूं सबै करन भै।
फिरि सबना मुखलै इजू कल्यौ धरन भै।।
कैकी करूँ मनकसी कतू छना मन।
किलै आयूँ,,,,,,,

जसी –तसी खवैबेरा जाणी दफ्तरा ।
पन्यानी में तब लागूं म्यरो आफरा।।
भान माँजा प्वछ लगै टुटी कमरा।
यसीकै काटीगै इजू आदू उमरा ।।
खट्ट –खटा किल ठोकनी उदासी गोठेपन।
कैकि मानू,,,,,

भ्यार बादी गोरू –भैंस गोठ पोछुछूँ।
नवै –धुवै उनरि लै मनैकी करौंछूँ।।
कसई मिकणी लागूं मैं लै भैंस छूँ।
को समझूँ म्यर मनैकी मैं लै मैंस छूँ।।
बुढ़ा सासू –सौराको नौराट भितरपन।
किलै आयूं,,,,,

जसी –तसी दिन काटो रात ऐ जैछो।
फिरी चुलैपना इजू रात कटैंछो।।
सबूँ खवै सिती गयी आपूँ नि आया।
को समझूँ म्यर दुख कै लागें दाया।।
सुर पीबेरा लोटी रई बलि ऊॅबाटैपन ।
किलै आयूँ,,,,,,

यो आदुका रात इजा कैक घर जाँ।
कैकनी यो रात उठै संग में लि जाँ।।
कॉ हुनेला को बाटै में ऊँ लोटी रई।
को नाई में ऊँ मेरी इज्जत बगोंनई।।
सुणिया अनसुणी हैगी यो भितराजन।
कैकि मानू,,,,,

छ्यूल बाई हेरी ल्यायों जसी –तसी मैं।
घरै में धिराट हैरै ढ़वाला बणी मैं।।
इनूकें घुराट फैरौ मैं कैं नीन कॉ ?
हे ईश्वरा ! बतै दियो मैं कॉहुणी जाँ ?
के परा संतोष करूं कै में लगों मन।
किलै आयूँ यो दुणी में कतू दुखा छन।।

–मो0 6396124440

कोरोनाः हंसिकायें

–देवकी नंदन भट्ट 'मयंक', हल्द्वानी

1. छोंक–छांक, खांशी–खुशी–
यनुं है बे रया दूर पोथी !
चाहे कसि लै हूर हो–
दूर–दूर बै घूर पोथी।।

2. जब बै 'लॉकडाउन' हौछ–
बुढ़ि आम 'लौकी–डावन' भै गे !
बुबुल कौय–भिं–ऐजा !
द्वियै 'कोरन्टाइन' है जूॅल !
आमल कौय–तुम यौस कौला जब–
मैं 'क्वैरावक्–डावन' न्हैं जूॅल !
बुबुल कौय–
हाई ! आब यौ उमर में यकैलै कां जालि तू ?
आ, द्वियै झांणि 'भकारा–तावन' भै जूॅल।

3. 'लौकडाउन' क 'ब्या' छु !
च्यौल कश्मीर, चेलि यां छ !
तुमुकैं सपरिवार न्यौत छु !
'सोशल–डिस्टैंस' करि बे आया–
खबरदार रैया !
घर बै खांण बनै बेर ल्याया।

4. सैंणि ल मैंस हैंति कौय–
लियो छि र्‌वाट खै बेर–
पौरा–गोठ 'से' जाओ !
तुमर बिस्तर भैंस दिगै लगै रौ–
बैं 'क्वारंटाउन' है जाओ !

5. 'सोशल–डिस्टेंस' करो कौय इनूॅल–
हमूल करि दी !
'लोकडाउन' में–
च्यौलक् 'ब्या' कर बेर–
ज्वान ब्वारी मैत भजै दी !

6. जब बै 'क्वारंटाउन' है रौ–
इनरि मत्ति लै हरण है रै !
पैंलि भौत्तै खुशि है रौंछि–
आब जै शरमै–मरण है रै !

7. चैति कि 'भिटौली' गई–
चेलियों कि सार–पतार !
झन फरकिये रे ! 'कोरोना' तू अलैबेर–
तील खै दी हमार तीज–त्यार !

8. पैंलि चेलि सौरास जांण बखत–
रूंनै–रूंनै–
ढोक–भिटोई करछि !
आब जांणि–
माया जाल कां न्हैं गे–
चेलि 'कोरोना' डरल
दूरै बटि 'टा–टा' कै गे।

9. पैंलि सैंणियां हर म्हैंण–
छौं–छूत' में 'क्वारंटाइन–हौंछि !
अब के भागी !
अंधेरै है गो–
'कोरोना' मैंसों कैं लै
'क्वारंटाइन' कर गो !

10. यौ 'बेरूजगारी' मार में–
'लॉकडाउन' काव लैगो !
तनखा जो आदु मिल छि–
उकैं 'सेनिटाइजर' खै गो।

11. पैंलि गौं में 'बैसि' हौंछि'–
जागरि लागछि धुंणिम् !
आब क्याप्प जै है रौ– 'गौं' में 'क्वारंटाउन' लैरौ
लोग भै रैईं कुंणम् !

12. वीक चेलि दिगे–
म्यौर च्यौल क 'लॉकडाउन' तय है गो !
शुभ लगन सुझि गो–
चैत क म्हैंणम–
14 दिन क् 'क्वारंटाउन' छु।
वीक बाद 'सोशल–डिस्टैंस' बनै बेर–
च्यौल–ब्वारि कैं 'गोवा' जांण छु !

–मो0 9917441019 ●●●

कोरोना

–भोपाल सिंह बिष्ट 'कलियुगी', हल्द्वानी

कोरोना बै बिल्कुल लै डरोना !
मन में धीर धरोना
मैं ज्योति बिन्द स्वरूप आत्मा छु !
मैं एक शान्त स्वरूप आत्मा छु !
मैं आनन्द स्वरूप आत्मा छु !
जकैं क्वे लै वायरस नी मारि सकन
रात्ति ब्याण उठि भेर ध्यान करोना।।
कोरोना बै .....
आज कतुक वर्षा बाद.....
मिली रौ नान–तिना कें
मैं–बाबु क साथ
नतरि मैं–बाब डयूटि
और नान–तिन ईस्कूल
कॉ छी कै क् लै कैकी याद !
आज मौक मिली रौ
आपण घर ऑगण में
हॅसी–ठिठोली करोना।।
कोरोना बै .....
आज पूरी मनखी जात पर
य महामारी छै रै
सबे कूनी य बिमारी
चाईना क् वुहान शहर बै ऐरे
पश्चिमी देशों में जैल
मचै है भयंकर तबाही
आजि तक क्वे लै देश नी बणै णै
एईक वैक्सीन या दवाई
ऐक बचाव क् छ मात्र एक उपचार
'सोशियल डिस्टेन्सिंग'
तो सबै मिलि भेर
सरकारे आदेशों क्
और लॉकडाउन क् पालन करोना।।
कोरोना बै बिल्कुल डरोना .....
जो एसि विषम परिस्थिति में लै
दीनी हम सब क साथ
सैनिक, पुलिस, डाक्टर–नर्स, सफाई कर्मी
सेवा में रत छन जिनार हाथ
आज इन 'कोरोना–वारियर्स' पर पथराव हूना !
और क्वे इनन पर थूकना !
जो आपणि जान जोखिम में डालि.....
हमरि जान बचूना !
अरे ! अघिन बड़ि भेर
तालि–थालि बजे भेर
कम से कम .....
इनर आभार त् व्यक्त करोना
कोरोना बै बिल्कुल डरोना .....
मन में धीर धरोना !
मैं ''कलियुगी'' कि छू
सबूं हूॅ नमस्कार !
य लड़ाई कें जितणा लिजी अब
सब है जाओ तैयार !
मुख में महाव लगाओ ना !
बार–बार हाथ धोवो ना !
घर बै भ्यार निकवो ना !
द्वी गजे कि दूरी धरोना !
तबै भाजल य कोरोना ।।

चिट्टिरसैन

–रमेश चन्द्र शाह

डान काना ऽ नाचणा में
भिं–खुटी नि रै।
क्वै नि हो यस डाल–बयाल, जमैं
कभै नै कभै
यो चुटी नि रै।
तुम कौला यो अघा बखतैकि
बात के कूनौ।
चिट्टीससैन उस आब कॉ रै गॅई
किलै बतूनौ ?
ज्यूनै छुॅ आइ लै मैं
मकैं तुम कूण दियौ
तुमरि खबर–बात आइ लै तुमन कैं
उसिकैं पौंचूनेर
मैं इ छुॅ, सुण ल्हियौ।

कोरोनावायरस

–मंजू बिष्ट,
गाजियाबाद उत्तर प्रदेश

कोरोनावायरस सारी दुणी में,
त्वैल मचौ रौ हाहाकार।
काम–धाम चौपट कर हैली,
उज्याड़ी हैयी मनखियों'क घर–बार।।
झींस जस यो वाइरस छ,
सबै आपु कै बचै रख्यिा।
आमा– बुबु, नान ठुल,
आपणी कुड़ी भित्र रैया।।
आंख, नाख, और मुखके,
हाथों लै ना तुम छूंया।
ठंड जस लागल तुमके,
अदरक, तुलसी काड़ प्यिा।।
रगड़–रगड़ बैर आपुण हाथों कै,
साबुन लै धोते रैया।
गौं मनखियां है दूरी बणैया,
आपणी घर– कुड़ी बचौ रख्यिा।।
जो देख्यीणी कोरोना लछण,
दाज्यू तुम ना डर्यिा।
स्वास्थ्य सेवा'क मनखी बुलै बेर,
आपु कै दिखै ल्यिा।।
आपु बच्यिा महामारी लै,
देवभूमि कै बचै रख्यिा।
लॉकडाउन में भारत भूमि छ,
म्यर भारत'क दगड़ रैया।।
सबै मिली बेर वचन ल्हिया,
लॉकडाउन में सबै रूॅला।
देशक सांच मनखी बणबेर,
आपुण फर्ज पुर करला।।

कोरोनाक दिन

–केशरसिंह डंग्सेरा बिष्ट, तकुल्टी, द्वाराहाट

(केशरसिंह डंगसेरा बिष्ट जमीन से जुड़े जन्मजात कवि हैं। उनकी लेखन शैली और वाक्य विन्यास उन्हें एक शीर्षस्थ साहित्यकार की श्रेणी में स्थापित करते हैं। 'हरूहीत मालू' खण्ड काव्य उनकी काव्य प्रतिभा का एक श्रेष्ठ उदाहरण हैं)
–सम्पादक

द्वाराहाट बटि पश्चिम दिशा हणि 10 किलोमीटर दूर एक पहाड़ी छू जैक तिराइ चारों दिशाओं में चार गौं बसी छें। हर गौं में लगभग सौ–सौ मवॉस रनी। पहाड़ी में दश–पन्दर दुकान, इण्टर कौलेज, प्रायमरी पाठशाला, पोस्ट औफिस, दूदकि डेरी आदि छैं। लाकडाउनक टैंम पर हर गौंक द्वी–द्वी, चार–चार लोग गों–घरों में ऐ रई। वजारक एक दुकान में चार–पॉच लोग भै रई। एक गों बटि एक स्येंणि लै दुकान में ऐंछ और केंछ–

यों देशन बटि घरूं हणि आण लैगीं। तुम इनूकणि घर किलै आण दिमछा। यों इपन वॉ कणि लै बीमारी सरेंल। देशन जहाणी इनूकणि फौरी बाधोव लाग, घर कुड़ि बज्यै बेर न्हे गाय। आज चैन हैगोछौ इनूकणि घर ?पुराण लोग कॅछी तलि हणि नि सरन यों तलि हणि गाय। यॉ लै मोलै खाण हय वॉ लै मोलै खाण हय कॅछी। आज इनूकणि देशनक खहाणि निपचन है गन्हलौ ?

दुकान में बैठी एक मैंसल जबाब देछ– वूँ आपण घर आण लै रई काखी ! हम उनूहाणि न आवो जै के कै सकनू। जैल पहाड़क गौंनू में मकान ठिक–ठाक बनै रई वीं आनी, जैक कुड़ खानर है गई वूँ त देशन और लै परेशान छैं। गोंनू वाव सोचण लैरी देशन बै आइयॉ हैबेर बचुल, जो देशन छैं, वूँ सोचण लैरी पहाड़ जैबेर बचुल।

सब आपणि–आपणि फिकर में छैं कि कथें हाम जै कोरोनाक चपेट में न ऐ जों। छोटि–मोटि नौकरी और मजदूरी करि बेर पेट पावणियॉक मैं गाड़–मैं गाड़ हैरै। जेब में पैंस नहैं भतेर राशन, सागपात नहैं भ्यार जाण नहैं, ऐगो पिनकटिक मरण। दुनी में लाखों मनखी मरिगो, लाखों कोरोनाल बीमार छैं। हमर देश में लै रोज बीमारोंकि अनाधुन बढ़ोत्तरी हण लैरै आजि बीमारी जाणि कभणि तक रेंछ। दश साल तक लै रै सकींछ। य बीमारी ऑखॉ बाट लै सरी, सॉसल लै, खॉसल लै, दगड़ै रणल लै, हाथ मिलाणल लै। तबै हिन्दू धरम में नमस्ते चली छी। वानप्रस्थ, सन्यासक विधान छी, मांस भक्षण निषेध छी। जीवूँ पर दया करछी, बाघ–बाकर दगड़ै पाणि पिंछी, जप–तप करछी, जौ–तिल–घ्योंक होम करछी, जैल वातावरण लै शुद्ध रोंछी। आफी रोगक बचाव है जॉछी। देशन बटि आइयॉ हैबेर दूर–दूर रयै काखी ! यै यैक बचाव छू बस।

पुराण बुड़बाड़ि बतॉछी कि लगभग 100 साल पैली एक बखत पहाड़ में हैज हौछ बल। लोग आपण घरक बीमारों कणि छोड़ि बेर गध्यारॉ पन, उड्यारों पन, कें दूर खेतों में छप्पर बनै बेर रई बल। रात हणि सानीसानि ऐ बेर गों पन बटि गदू–लौकि , चिचन–त्वर्यॉ, घ्वाग–काकड़ टोड़ि लिजॉछि। ग्यों भट भुटि बेर क्वरै गल्यॉछी। जो हैजक बीमार मरि गया उनूकड़ि घरक नजीक बाड़–ख्वड़ॉ में खड्यै दिंछी। क्वे कैहणि बुलाछी लै नै। जब हैजकि बीमारीक थिरथाम हौछ तब आपण गों–घरों में आई। तहैं लै गोंनुकि आबादी आदुक है गोछी बल।

प्रकृति हणि क्वे नि जितन चाहे क्वे कतुै जोर लगै लियो। आ्ब आज देखो भौत देशोंल अणुबम बनै हैलीं। जब कैदिन उनूमें आफी विस्फोट हैजॉ। तहें नि मरलौ मनखी और जीव–जन्तु। कम्पनि खोलुल कबेर सब सोचनी गैस रिसाव है जा्ल कबेर जै के सोचनी। गैस रिसि गई भोतै प्राणी मरि जानी। मनखी आपणि जोतो जिबाइन आफी फॅसि जॉ। विज्ञानल विनाश लै हैजॉ। जानवर उज्याड़ खैदयों कबेर उनर गिच पर मुहाव लगानी आज मनखियक गिच पर मुहाव लैरो, कतनि अणहोति हैरै ? आब घरों में क्वड़म जस भैटी रौल मनखी। जिन्दगी निसिरि हैगे।

आब ऐ गई मनखियक मुहाव लगाणी दिन।
मनखी कणि भुकतिस घरों में गोठयाणी दिन।
करोड़ो मनखियोंक नौकरी छुटाणी दिन।
परदेश बटि फजित है आपणि थातम आणी दिन।

आजि ऐ गई गध्यार और उड्यारों में रणी दिन।
बेंडु–तिमिल, हिसाउ–किल्मौंड़, गेठि–क्याव खाणी दिन।
तितिर–च्याखुड़, ग्यॉज–गढ़्यर, मॉछा कित चाणी दिन।
ग्यों–भट भुटि बेर क्वरै गल्याणी दिन।
आजि ऐ गई बुढ़–बाड़िक सन्यास पर जाणी दिन।
जमान कणि दश–बीस साल पछिन कै लिजाणी दिन।

दुनी में नई–नई विषाणु कैं फैलानी यों।
चमडूचड़, गौल–स्याप, मिनुक–छिपाड़ खानी यों।
गोरु–भैंस–ऊँट भौतै जीवों कें कटानी यों।
ऐटम बम विनाशक मिसाइल बनानी यों।
लाइलाज बीमारियोंल दुनी कें हलकानी यों।
आपण दगड़ दैज में औरों कणि लिजानी यों।
मैं ठुल मैं ठुल कनें दुनी उजड़ानी यों।
आपण हातल आपण लिजी खड्यर लै बनानी यों।
यक्कै बात बाकि रैगे विश्वयुद्ध करानी यों।

●●●

बसंत

–गीतेश सिंह नेगी, सूरत (गुजरात)

कबी त आलु बसंत
म्यार मुल्क मा बी
बिकास बणिक
ह्वाला स्वील सुपिन्या साखियॉ का
बरसूं बिटि कथगौं की टक्क लगीं च
आला वू बौड़िक जब धार मा
तोड़िक जाल माया भ्रम का
ह्वालु उदंकार, रौल्युं–पंदैरौं मा
चौदिश गौं–घार मा
तब्बी आली मौळ्यार डांडी कांठ्यूं मा
बासली घुगती फिर पुंगड्यूं–स्यारयूं–सगोंड्यूं मा
आली ज्वनि फिर दाना भ्याल पाखौं मा
ब्वालला चखुला काफळ पाको
फिर डाळी डाळीयूं मा
खेल्ला नौना फिर फूल पातियूं मा
चौक खल्याण मुल–मुल हैंसला
गीत ग्वेर फिर डांडीयूं मा लगाला
बांसोळ बजै क रोल्युं रिझाला
बळदौं का खांकर दैं मा खमणाला
सासू–ब्वारी गीत गंजळि दगड़ी लगाला
गौं–गौं मा ह्वालु रूजगार
नौना शिक्षित बेरुजगार नि राला
नि रालू पलायन फिर पहाड़ मा
विनाश कु रागस बणिक
कब्बि त आलु बसंत, म्यार मुल्क मा बी
बिकास बणिक।

बसंत

–दिनेश भट्ट, पिथौरागढ़

छाई रौ बसन्त आज
बौलि रौ बसन्त आज
कोयल कि कूक सुण्
न्योलि को बासन आज
हरि–भरि धर्ति ले ओड़ि रङवालि लाल
ब्योलि बनि, कैहिन् करयो गजब सिंगार आज
बुड़ा–बुड़ा पेड़न में आइ गै ज्वानि आज
जङ लाग्या साजन् में, कसो यो झंकार आज
तन–मन में बाजन् लाग्या कसा–कसा साज–बाज
छाई रौ बसन्त आज
बौलि रौ बसन्त आज
हाङ–फाङ हर्यालि, कलि–कलि हॅसछि आज
फूलन कि बर्खा भइ, झरि ग्यो केसर–पराग
बचि सकौ त बचो यारो, कसिकै बचला आज
छाई रौ बसन्त आज
हाइ रे बसन्त आज।

विनम्र श्रद्धांजलि

उत्तराखंडी भाषाओं की पत्रिका 'कुमगढ़' का यह पुष्प भारत माता के उन सच्चे सपूतों व अमर लालों को समर्पित है जिन्होंने धोखेबाज दुश्मन के दांत खट्टे करते हुए उसे ढेर कर निःशस्त्र ही पुरुषार्थ दिखाते हुए विषम परिस्थितियों में लद्दाख में देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। 'कुमगढ़' की विनम्र श्रद्धांजलि !

–संपादक

कोरोना बैरी हैगो हमार

–नन्दा वल्लभ पाण्डे, ज्यालीकोट (नैनीताल)

कोरोना बैरी हैगो हमार,
यैले सबुकैं करिहालो लाचार,
जाग जाग यैले है गईं बीमार,
कैंकें खांसी, सर्दी–जुकाम,
और कैंकें ऐगो बुखार।
सारी दुणि में यैका कारण पड़ि गै हाहाकार,
कोरोना बैरी हैगो हमार।
कोरोना कारण वातावरण हैगो खराब,
सरकार ल देश में लौकडाउन करि हालों
भाई बंधू अब जन जाया घर बटि भ्यार,
कोरोना बैरी हैगो हमार।
बस, रेलगाड़ी, हवाई जहाज की थमि गै रफ्तार,
बन्द है गई स्कूल कॉलेज, फैक्ट्री, दफ्तर और बाजार,
गरीब, कुली मजदूर, सब है गई बेरोजगार,
बहुत जाणी इथां, उथां फंसि गई भ्यार,
कोरोना बैरी हैगो हमार।
यो कस कलयुग आयो, छुटी गई तीर्थ व्रत और त्यार,
सब बन्द है गईं, मन्दिर मस्जिद और गुरुद्वार,
कोरोना बैरी हैगो हमार।
भाई बन्धो अब आपण स्वास्थ्य क खुद धरो ध्यान,
बखत–बखत पर ध्वै लियो साबुणल आपण हाथ,
आपण मुख में अब लगाओं कपड़ व रूमाल,
सब लोग आपस में दूर–दूर रया
दूर बटि करिया सब थैं नमस्कार
घबराओं झन बल्कि रवौ सावधान
सरकार क दिई सुझाव क करो सम्मान
कोरोना भगौना लिजी छेड़ों अभियान,
देशवासी भाई बन्धो जन होवो हिम्मतहार,
सबजाणी लगिपड़ि बेर,
कोरोना कैं खदेड़ों दुणि है भ्यार।
कोरोना रूपी दैत्य ल करि होलों खूब उत्पात
आदि शक्ति जगदम्बा माता कैं हम करनूँ पुकार,
मैय्या जल्दी प्रकट हैबेर करो यो दैत्यक संहार,
कोरोना बैरी हैगो हमार।
यैले सबुकैं करिहालो लाचार।

शेर दा अनपढ़

–घनानन्द पाण्डेय 'मेघ', लखनऊ

कसिके ल्यखूं गीत मैं हो,त्यरि मुखड़ी याद ऊंची
शेरादात्यरी कविता,घड़ी घड़ी याद ऊंछी
बात त्यरी खट्टी मिट्ठी,भौतै याद
रूंछी
त्यरि कविता सुणी सुणी आजि ले हंसूछी
आजि लें हंसूंछी हो,त्यरि मुड़ी याद ऊंछी
हंसूनै हंसूने शेरादा,बात बात में रुलूंछे
कविता को मिठो पाणी,सबूंकें पिलूंछे
सबूंकें पिलूंछै हों,त्यरि मुखड़ि याद ऊंछी
अनपढ़ ले पढ़ै राखी,ठुल ठुला विद्वान
तुई छै विद्वान भौतै, तुई छै महान
तुई छै महान हो,त्यरि मुखड़ी याद ऊंछी
नी भुलीनी त्यरि बाणी,नी भुल्यूं अनार
त्यरि कविता सुणी सुणी,ऐ जांछी बहार
ऐ जांछी बहार हो त्यरि मुखड़ी याद में ऊंछी
कविता में कवि कविता को,धर्म तू
बतूंछे
कविता यो कसीहूंछी,मर्म तू बतूंछे
मर्म तू बतूंछे हो,त्यरि मुखड़ी याद ऊंची
कसिके ल्यखूं गीत में हो ,,,,,,,,,,,
शेरदा त्यरी कविता,,,,,,,,

–मो0 9415426034

गीत

–बंसीधर पाठक 'जिज्ञासु', लखनऊ

क्वे के दियौ बसन्त थैं यां नि आयी कर,
उदेखिया ज्यू दगै माया नि लायी कर।
जै बण में फूल कैं फूल कान जौ बुड़ौं,
मेरि आंखी, तू उ बण तरफ नि चायी कर।
जति मधुर–मधुर बासैकि मन्दि पौन चलें,
ओ म्यार मना ! तू उति कभैं नि जायी कर।
बिलकुलै मैं भुलै दिण चानू जैक नौं,
अवे न्यौली ! तू वीकि रट नि लगायी कर।
जै मैंस कैं त्योर भरोस न्हाति रत्ति भर,
भुलि बेर लै तू वीकि सौं नि खायी कर।
सुआ ! सुख में भलै नि न्यौत तू 'जिज्ञासु' कैं,
लेकिन टीट–पीड़ में रोजै बुलायी कर।

नीदेकि सजा

—नारायण सिंह मेहरा, हल्द्वानी

'बीरबल के हो, महावत आ या निऐ?'' अकबरल् पूछा, 'नै हजूर ! आजि नि पुजि। मैल आपण कोरोना हाथिक् लिजि एक नई महावतक् बन्दोबस्त करि हाला। बॉकि सारे खांण–पिंणक समान, टैंट सहित शिकार करनक समानौंक बन्दोबस्त करि हाला। सब आदिम लै तैयार छन। बस चलनेकि तैयारी छू।' बीरबल जवाब दे।

तबै हॉफते हुए बीरबलक् महावत सिराज उपस्थित हैगा। हाथ जोड़ते हुए गिड़गिड़ाना– हजूर ! देरिक लिजि क्षमा चानू। रातभर उन्त रनक् कारण रत्तै ऑख लागि गे। भविष्य में यसी गलती नि होलि।'

अबकर उथें भौत नाराज छी। किलैकि उनूकें शिकार हुणि जान में डेढ़ घन्टकि देरी हैगे। अब तक उनूकें जगंलक् सरहद में पूजि जान चैंछी।

अकबरल आपण मन्त्री कैं आदेश दे– 'य बहानेबाज, लापरवाह महावतक् सजा यई छू कि तैकें तीन दिन तक केई हालत में नि सितन दी जाये' और अकबरक् काफिला शिकार हुणि प्रस्थान करिगा।

घनघोर जंगल में शिकार तू भौत छी। घर अति चौकन्न छी और दूरैबै भाजि जॉछी। द्वि दिन–रात में केवल एक खरगोश और एक मुर्ग हाथ पड़ा। जैकें उनूल रात कें कैम्प मेंई पकै खै ले। भाग्यवश तिसार दिन रत्तैब्यांण बीरबलल् भागते हुए एक हिरण ठसकै दे। अकबर कें संतोष हो कि चलो अन्त में कुछ त् हाथ आ।

अघिन दिन दरबार में न्याय सभा छी। समस्त मंत्रीगण अधिकारी, प्रजा व आपण–आपण समस्याओं कें लिबेर आयी न्याय पानाक् लिजि अनेकों लोग उपस्थित छी।

अकबर भौते न्यायप्रिय बादशाह छी। लोगों के उनर न्याय में भारि विश्वास छी, पर अकबर न्याय सभा में नि ऐ सक्। सभाक् समय समाप्त हुन पर प्रधान मन्त्रिल सबू थें क्षमा मॉगते हुए अघिल दिन औनक आदेश दे।

अघिन दिन दरबार खचा–खच भरीन छी। अकबर समय पर उपस्थित ह्वे गयीं। दरबार प्रारम्भ होते ही लोगोंक् समस्याओंक् समाधान हुण फैगा। यतुक मैई अकबर कें उ महावतकि याद ऐ। जैक विलम्ब में औन पर तीन दिन तक नि सितनक् आदेश बादशाहल् दैछी। उ महावत दरबार में उपस्थित छी। पूछन पर मंत्रिल जवाब दे–'हजूर ! सजायाफ्ता ल आपणि सजा पुरि करि हाली पर, वील तिहरि रात आदुक मिनटेकि झपकी लगै ली। येक लिजि के आज्ञा छू?'

सुनिबेर अकबर कें गुस्स आ, वील तुरन्त आदेश ठोकि दे कि तू शैतान कणि दोबारा तीन तक नि सितनेकि सजा दी जान। आज्ञाक पालन हुण चैं।

दरबार में बीरबल लै मौजूद छी। उ उठा और तालि बजाते हुए अकबरेकि न्याय प्रियताक् सराहना करते हुए बुलाण– 'हजूर ! मैंलै आपूंक द्वारा दी सजाक् समर्थन करनू। य अपराधि कैं यसी सजा दिन चैं। महाराज ! बहान करना कि ईज भौते बिमार छू। विक देख–रेख और दवा–पाणिक् कारण रातभर जागन पड़ा, यई कारण रत्तैब्याण नीदेकि झपकी ऐगे। हजूर ! यदि बेलि य बहानेबाज कें न्याय सभा में यई फैसल हुन्त यकें ए एक रातेकि नीदक मौक नि मिल सकछी और लगातार छः दिनक् सजा भोगते रौन।'

अकबर बुलाणा– 'होई बीरबल मैं बेलि राज–दरबार में नि ऐ सक्। किलैंकि द्विदिन–रात लगातार जंगल में भटकते कारण मैं भौत थकि गछी। जैक कारण में दोपहर तक सितये रै.....। ओह ! बीरबल.....तुमरि चतुराईपूर्ण बात मेरि समझ में ऐगे। ऑखिर तुमूल मेरि गलती पकड़ि ली। मैं क्षमा चानू। असल में यसि समस्या हरएककि जीवन में कभै न कभै औनै छू। त् महावत विचार लै कोई समस्या में पड़ि गहुनियल। अपराध सबूँक बराबर हूँ, य में नान–ठुल नि देखि जॉ। त् महावत कैं सजा बै मुक्त करि जॉ। तीन दिनेकि नीद नि निकालनेकि एवज में तैकें खजा्न बै तीस असर्फी दि दी जावो और बीरबल आपकें भौत–भौत धन्यवाद छूं कि आपूल मिकैं गलत न्याय करन है बचा दें।

बीरबल हाथ जोड़ते हुए मुस्कुरैगा।

—मो0 9761120666 ●●●

हार्दिक श्रद्धांजलि

पछिल दिनों कुमाउनी भाषा कें आपणि कविताओं और गीतोंल छजूंणी 'हीरा', सबूंक 'हिरदा', हीरा सिंह राणा असमय यो दुनीं कें छोड़ि बेर परलोक हुं सिधारि गईं। 'कुमगढ़' पत्रिका बै लै उं जुड़ी हुई छीं। 'कुमगढ़' परिवारकि हर्दिक श्रद्धांजलि।

—संपादक

उजाळै आस

—जगमोहन सिंह जयाड़ा "जिज्ञासू", नई दिल्ली

उत्तराखण्ड आज पलायन की पिड़ा सी प्रभावित छ। अतीत मा लोग अपणु जीवनयापन खेती पाती अर पशुधन का माध्यम सी करदा था। अस्थाई पलायन करिक कुछ समय का खातिर मसूरी, देरादूण, नैनीताल जान्दा था पर बौड़िक काम धंधा का बग्त गौं ऐ जान्दा था। चारधाम पैदल यात्रा का बग्त यात्रियौं सी कुछ आय भि ह्वे जांदि थै। खेती किसाणि उबरि ठीक तरौं होण का कारण बजार की चीज की जरुर्वत कम हि पड़दि थै। शिक्षा का प्रसार का कारण लोग पढ़ि लिखिक धीरे धीरे सैरु की तरफां पलायन करिक जाण लग्यन। पलायन कु दौर शुरु ह्वे त काफी आवादी पहाड़ बिटि सैरु मा स्थाई तौर फर पलायन करिगी।

हर क्वी चान्दु रोजगार अपणा राज्य मा मिलि जौ अर पलायन न कन्न पड़ु। यीं चाह मा उत्तराखण्ड्यौंन अलग राज्य उत्तराखण्ड की मांग अर आन्दोलन शुरु करि। लम्बा संघर्ष अर बलिदान का बाद 9 नवम्बर, 2000 मा उत्तराखण्ड राज्य बणि। सब्यौं का मन मा एक हि बात थै, राज्य बण्न का बाद पहाड़ मा हि रोजगार मिललु अर पलायन रुकलु। राज्य निर्माण का बीस बरस पूरा ह्वेग्यन पर यनु कुछ नजर नि आई। पलायन लगातार जारी रै अर गौं बंजेणा शुरु ह्वेग्यन। सरकारन पलायन आयोग भि बणाई अर पलायन रोकण की नीति भि बण्नि ह्वलि।

आज कोरोना महामारी का कारण देश भर का प्रवासी अपणा राज्य मा लौटणा छन। हमारा उत्तराखण्डी प्रवासी भि लौटिक अपणा उत्तराखण्ड पौंछिग्यन। अपणा घर कूड़ौं, चौक की सफै करिक लोग घर तैं आवाद कन्ना छन। बांजा पुंगड़ौं मा आड़ा केड़ा काटिक, हौळ लगैक लोग खेती पाती की शुरुवात कन्ना छन। जथ्गा भि प्रवासी उत्तराखण्ड ऐन ऊ कै न कै काम का सल्लि छन । बड़ी जनसंख्या लौटण का कारण मांग भि बढ़लि अर रोजगार सृजन भि होलु। सरकार स्वरोजगार, षि व्यवसाय, उद्योग, पशु पालन, पर्यटन का खातिर मदद करिक बेरोजगारु तैं रोजगार की संभावना पैदा करि सक्दि। अबरि सुअवसर छ, पैल करिक उत्तराखण्ड मा पलायन की पिड़ा कु अंत ह्वे सक्दु।

मनखि अपणि जिंदगी मा सदा "उजाळै आस" करदु। आज आस जगणि छ, हर उत्तराखण्डी का मन मा। प्रवास की जिंदगी कब्बि भलि नि ह्वन्दि। बिना बुलैयां लाखों उत्तराखण्डी अपणा घर बौड़ा ह्वयां छन। सब्बि अपणा पहाड़ मा रुकिक जीवनयापन का खातिर तरौं तरौं का काम कल्ला त पहाड़ मा चौल पैल अर रौनक रलि। सदा चर्चा ह्वन्दि थै पाड़ की जवानी अर पाणी पाड़ का काम नि औन्दि। आज पाड़ की जवानि लौटिक पाड़ ऐगि, अब जतन करयुं चौन्दु पाड़ मा सुख समृद्धि कु संचार हो। पाड़ मा पलायन की पिड़ा कु अंत सब्बि उत्तराखण्ड्यौं का मन मा "उजाळै आस" जगौ।

—मो0 9654972366 ●●●

कमाउनी हाइकु

—डॉ0 हेमचन्द्र दुबे, गरुड़ बागेश्वर

1.
अब जमान
पैली जस नि रौय
बखतै बात

2.
काफोव मिठ
रसिल हिंसाव यॉ
यैं भैट जाओ

3.
जो लै लेखी छु
उ है बेर रौल यॉ
भरौस धरो

4.
हमार घर
सबसे भाल दोस्त
नाराज नै य

5.
जो बाट देख
उ भल लागूं हिटो
मंजिल कसि?

6.
हम तुम लै
यपटि गीन दुनि
स्वार्थ वश छु

7.
जब सोचण
तब करम करो
के तो मिलल ?

कुमाउनी इंटरव्यू

हमार कुमाउनी रचनाकार : हेमंत बिष्ट

–प्रस्तुतिः राजेंद्र ढैला, काठगोदाम

आज मैं आपूं सब लोगना लिजी उनर परिचय ल्हीबेर आरयूं जनर परिचय आपूं कें पैलियै पत्त छ लेकिन उनार बार में जणनैकि लालसा मैंकें, आपूं कें और हम जा्स सबै लोगन कें छ। उसिक तो हर रचनाकार आपुण आप में एक गौरव हूँ। लेकिन फिरलै कुछ लोग खास हुनी। वी खासन् में आज आपूं लोगना सामणी बात हुण लागरै राष्ट्रीय स्तराक् कवि, लेखक, गीतकार, मंच संचालक श्रीमान हेमंत बिष्ट ज्यूकि। इनार बार में अगर लिखी या जाणी जाओ तो कतुकै किताब भरी जा्ल। लेकिन संक्षेप में लिखण–कूंण मुश्किल हैरौ।

◆जन्म, शिक्षा व कार्यक्षेत्र ● आदरणीय हेमंत बिष्ट दाज्यूक् जन्म ईजा जीवंती बिष्ट बौज्यू श्री जगत सिंह बिष्ट ज्यू वाँ खुरपाताल, नैनताल में भौ। इनून शिक्षा में एम एस सी बाद बी एड करौ और राजकीय विद्यालय में प्रवक्ता पद पर नियुक्त भयी। प्रस्तुत छन इनन् दगड़ी हैई बातचीताक् कुछ अंश...

सवाल01◆ दाज्यू आपूं एक मंच संचालक, कवि, लेखक, नाट्यकर्मी छा कोई नवोदित कलाकार, लेख्वार, मंच संचालक् ऐबेर आपण काम में सुधार करणा लिजी के सुझाव मांगलौ तो कि कूंछा?
जवाब● हर व्यक्ति में आपणि विशेषता हैं जो दुहर में नि हुनि। मैं यैई कुनू आपणि विशेषता कें और मजबूत करौ। आपणि प्रस्तुति में मौलिकता धरौ। दुहरांकि नकल लंब समय तक नि रूनि और अध्ययन लगातार करते रओ। उई आत्मविश्वास भरूँ।

सवाल02◆ उ तीन मनखियों नाम बताओ जनूल आपूं कें प्रभावित करौ?
जवाब● जब 5–6 सालौक छी पैल बार शेरदा अनपढ़ कें मंच में कविता सुणूंन देखौ,सुणौ। यस प्रभाव पड़ौ कि उई उमर में तुकबंदी शुरू करिदे। २)जरा ठुल भयूं तो जसदेव सिंह ज्यू कें कमेंट्री करण सुणों, सुर उथां कै न्हैं गई। ३)अशोक चक्रधर ज्यू कें संचालन करण सुणो तो बड़ प्रभाव पड़ौ।
सवाल03◆ खास शौक के–के छन आपुण?
जवाब● पढन–लिखण, गीत–संगीत, नाटक और खेल।
सवाल04◆ आपूं कें साहित्य लिखणैकि प्रेरणा काँ बटी मिलै?
जवाब● हम आठ भै–बैणीं छां। सात ठुल दिदी,अठूँ मैं। छटूँ नम्बरेकि दिदि दिव्यांग छ। ना्नछना कांईं बै लै कोई किताब मिलि गई तो हम चार–पाँच भै बैणीं दगाड़ै उकें पढछियाँ। बारि–बारिल एक पढौल सब सुणाल। फिर आपस में लै नई रचना लिखिबेर सुणूनेर भै।

सवाल05◆ अछा गीत–संगीत, खेल और कलाकारी?
जवाब● बाबू शास्त्रीय संगीत,भजन और होलि गैनेर भै। भौत भा्ल खिलाड़ी भै। और इज होलियों में स्वांगेकि लोकप्रिय कलाकार भै। रत्याली में सब भै –बैणिंयों कें ऋषि, मुनि, राम–लक्ष्मण, सीता, हनुमान बणैंबेर प्रहसन करूंण। कतू दिन पैली बटी रामबांस कुट बेर जटा, दाड़ी, मूँछ, बणूंण। चमकिल कागजोंन मुकुट आदि बणूंण, वील रूची बढते रै।

सवाल06◆ आपूं को विधा में लिखण पसंद करछा?
जवाब● मैंन हास्य कविता बटी लिखण शुरू करौ फिर संस्मरण, कहानि, गीत पसंद बड़ते गई।

सवाल07◆ आपूंल भौत हिंदी कुमाउनी गीत लिखी को–को छन्?
जवाब● उत्तराखंड राज्य गीत,उत्तराखंड पोषण गीत जो बाद में नीति आयोगल राष्ट्रीय स्तराक् लिजी लै (गायक रणबीर चौहान IAS),मतदानाक् लिजी प्रेरक गीत जो माया उपाध्याय ज्यूल गा(प्रथम आ),नैनादेवी मैय्या'कि आरती जैक संगीत श्री विसंभर नाथ साह सखा, श्री शंकर राय चौधरी,डॉ. विजय कृष्ण ज्यूल दे। यौ आरती रोज संध्या काल में बाजैं। यैक अलावा उत्तराखंडाक् लोक देवताओं'कि गाथा,नंदा गाथा, राजुला मालुशाही आदिआदि। और उत्तराखंडी लोकगीत जो याँक् लगभग सबै प्रतिष्ठित गायकों'ल गै राखी यौ म्यार लिजी भौत खुशी बात छ।

सवाल08◆ कुमाउनी में प्रकाशित किताबों, रचनाओं नाम बताओ धैं आपुण?
जवाब● 'पहाड़ाक क्वीड़–पहाड़ेकि पीड़' महात्मा गांधी विश्वविद्यालय वरधा मेरी जनपदीय कविताएं (संपादक–श्री विद्यानिवास मिश्र व श्री बटरोही), संयुक्त काव्य संग्रह 'किरमोई तराण' संपादक–बालम सिंह जनौटी। काव्य संकलन संपादक–गजेंद्र बटोही, गद्य संकलन संपादक–देवांशु आदि।

सवाल09◆ यैक अलावा जमें संतोष मिलौ?
जवाब● मैं विज्ञान विषयक प्रवक्ता छूँ लेकिन विज्ञान पुस्तक लेखनाक अलावा हमार कोर्स'कि हिंदी'क किताबों में म्यर प्रकरण छन। और हालै में मुख्यमंत्री जी'क निर्देशोंल, आयुक्त कुमाऊँ श्री राजीव रौतेला जी और अपर निदेशक मुकुल सती निर्देशों में, मैंन कक्षा एक बै पाँच तकाक् कुमाउनी पाठ्य पुस्तकों में संदर्भ व परामर्श दे।

सवाल10◆ हिंदी कवि सम्मेलनों में काँ–काँ, कै–कै दगै प्रतिभाग करौ?
जवाब● मैं भाग्यशाली छूँ, मैंकें उत्तराखंड शासन, संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश/उत्तराखंड, राजभवन उत्तर प्रदेश, दूरदर्शन उ०प्र0/उत्तराखंड, आकाशवाणी,26 जनवरी,15 अगस्त और साहित्य अकादमी आदि आदि सरकारि व प्राईवेट संस्थाओं बटिक अवसर मिलते रौ। जमें श्रद्धेय काका हाथरसी, ब्रजेंद्र अवस्थी, गोपाल दास नीरज, ओमप्रकाश आदित्य, अदम गोंडवी, महेश्वर तिवारी, त्रिलोचन, जैमिनी, हरियाणवी, अशोक चक्रधर, वशीर वद्र,अरुण जैमिनी, गोविंद व्यास,संतोष आनंद, वसीम बरेलवी, मुनव्वर राणा, जी आदिआदि लगभग सबै कवियों दगै कविता पाठ संचालन'क मौक मिलौ।

सवाल11◆ संचालन और काँ–काँ करौ?
जवाब● आपूं लोगों शुभकामनाओं'ल भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला प्रगति मैदान प्रारंभ बटिक बै लगातार, विंटर गेम्स ऑली,अंतरराष्ट्रीय योग महोत्सव, हिंदी भाषी राज्यों'क मुख्यमंत्री सम्मेलन मुंबई, बसंतोत्सव देहरादून,भारत भारती उत्सव,राज्योत्सव, माननीय मोदी जीक केदारनाथ कार्यक्रम आदिआदि।
और खेलों में देहरादून स्टेडियम उद्घाटन,4– Nation TT-Champion ship और कई–कई विभागों'कि राष्ट्रीय संगोष्ठी...।

सवाल12◆ अक्सर आपुण ब्र में कई जाँ कि आपूं हास्य कविता लै करछा त बड़ि शिष्टता'क साथ करछा ठुल–ठुल कवि और बल्ली सिंह चीमा ज्यू यौ बात मंच बै कूंनी। येक पछिल के कहाणि छ?
जवाब● शुरू में कविता शेरदा बै सुणी,स्वाभाविक रूपल हास्य प्रधान कविता करीं। लेकिन हमार गुरूजी लोग ताराचंद्र त्रिपाठी सर, बटरोही सर, पंकज बिष्ट ज्यू, शैलेष मटियानी ज्यूक सामणी जबलै कविता पढी उनूल यतुक मर्यादित बणै दे कि एक स्तर बै तली जाणेंकि न हिम्मत हुनि,न जा्न।

सवाल13◆ आपूंकें कयी पुरस्कार सम्मान मिली छन उनार विषय में बताओ?
जवाब● राजेंद्र ! पुरस्कार, सम्मान तो आपण स्रोता, जनता,आपण गुरु लोग, माता–पिता जो सम्मान दिनी उमें संतोष हुण चौं। लेकिन आपूं सब लोगों'क आशीर्वादल 1–शिक्षाक क्षेत्र में 'राष्ट्रपति पुरस्कार' (डॉ.अब्दुल कलाम ज्यूक हाथों 2002),२–मानव संसाधन मंत्रालय–'युवा पुरस्कार' 1994–95, ३–आचार्य नरेंद्र देव निधी पुरस्कार–'शिक्षा से समाजोत्थान' 1989, ४–'प्रताप भैया सम्मान'–2014, ५–कला संसति क्षेत्र में मोहन उप्रेती शोध

संस्थान अल्मोड़ा द्वारा 'कौस्तुभ सम्मान' 2016, ६–महादेवी वर्मा सृजन पीठ द्वारा 'राज्य गीत लेखन' हेतु सम्मान, ७– राजभाषा सम्मान, 8–केंट नैनीतालक स्वच्छता एम्बेसडर, ९– नैनीताल जनपदक् डिजिटल इंडिया सेलिब्रिटी आदिआदि।

सवाल14◆ लेखन में और के उपलब्धि छन्?
जवाब● कई फिल्म, कई वृत्त चित्र, कई गीत–नृत्य नाटिका और कई नाटकों लिजी गीत संगीत।
सवाल15◆ कुमाउनी बोली भाषा कें बढाव दिणेकि आवश्यकता किलै छ?
जवाब● क्वे जमा्न में सारि दुणीं में 12000 हैं जादे भाषाएं छी, तब लिखी न जांछी तो सब लोक भाषाई भै। अमेरिका'क ह्यूस्टन में एक सोसायटी छ–अधीनोलोग, यौ हर 10 साल में सर्वेक्षण करैं। सर्वेक्षण में पत्त चलौ सन 2000 तक 6542 भाषाई रै गई, हर महैंण 5 भाषा विलुप्त हुनई। भारत में 600 भाषा छन जो विलुप्त हुनई। यसै रयो तो आघिल 50 बै 100 सालों तक हिंदी कुमाउनी में लै आँच आलि। यैक लिजी उनूल एक माप दण्ड बणै राखौ–जो भाषा कें बुबु बुलानी,बा्ब लै बुलानी, बच्च कभै–कभै बुलानी समझ ल्हिनी उ भाषा कें कोई संकट न्हॉ। लेकिन जो भाषा कें बुबु बुलानी,बा्ब नि बुलान या भौत कम बुलानी, बच्च नि समझन, नि बुलान उ भाषा विलुप्ति'क कगार में छ। और जो भाषा कें बुबु नि बुलान,बाब् नि बुलान और बच्च लै नि बुलान उकें उ विलुप्त माननी। तो मैं त कुनूं आई बुबु बुलानी,बाबों'ल लै आपण घर में जरूर पहाड़ि बुलाण चौं ताकि न्ानतीनों लिजी हमरि भाषा अपरिचित नि हो।

सवाल16◆ आपुणि मनपसंद किताब को छ?
जवाब● मैं क्ये सब्बै जाणी रामचरित मानस देखिबेर अचंभित हुन्याल। एक–एक पात्र और जतुक बार उ पात्र ऊं, पुराणि घटना दगड़ि वीक अंतर्संबंध पुर घटना क्रमक खाका कसिक खींच दी हुनेल उ महाकवि'ल?

सवाल17◆ कै कें देखिबेर प्रभावित छा आपूं?
जवाब● देखो राजेंद्र! हर आदमीकि खासियत हैं। अलग–अलग श्टील हम सब साहित्य कें देखनू। मैं तो जो लेखक, कवि कें देखनू उकें देखिबेर अचंभित है जानू। हर युग में आपणि–आपणि विशेषता ल्हीबेर कवि कविता करूँ तबै त उ प्रतिष्ठित हूँ गुमानी युग बै ल्हीबेर आज तक सब वंदनीय और अनुकरणीय छन। आजैकि परिस्थितियों में जो धारदार कविता नयी पीढीक लोग लिखनयी उलै आदरणीय छन।

सवाल18◆ दाज्यू उ लोगन'कें के संदेश दिण चाला जो हेमंत बिष्ट जा्स बणन चानी?
जवाब● (हँसते हुए) राजेंद्र मैं जस क्ये बणन्? क्वे योग्यतम व्यक्ति बणनक् सपन देखण चौं।
सवाल19◆ ना ना अगर क्वे तुमी जस बणन चाँ तो?
जवाब● (संकोच करते हुए) खूब अध्ययन करिबेर आत्म विश्वासा'क साथ संचालन। जतुक जरूरत भै उहैं एक शब्द जादा नै। सामणी भैटी हर स्रोता कें आपूं हैं जादे योग्य मानिबेर कैकी भावना कें ठेस न पुजो यौ कोशिश रूण चौं।

सवाल20◆ आपणि जिंदगी'क एक यादगार किस्स जो सबन दगै साझा करण चाला?
जवाब● 1991 में म्यर भौ और इज टीवी देखनाछी। म्यर भौ बुलाण ''आमा तू क्ये समजनैछै यौ टीवी में जो यौ लोग करनी उस म्यर पापा (बाबू) लै कर सकनी।'' इज हँसण लागि बिलकुल बाबू तुमार बा्बलै कराल् द्वीयै न्ानतीनों'क ख्वर मलाशते हुए इज बुलाणि। भ्यार पोस्पमैनल धात लगै। मैं भ्यार गयूँ एक तार आई भै, तार में लिखी भै दूरदर्शन के सरस्वती कार्यक्रम में आपका,काका हाथरसी जी व प्रमोद जोशी जी का कार्यक्रम है। आपणि औलाद, आपण मैंबाप सच्च मनल जे कौल उ हैबेर रौल।

सवाल21◆अछा आपूं कें पहाड़ि भोजन में के भल लागौं?
जवाब● काकड़ौक रैत और मासा्क बा्ड़।

सवाल22◆ टीवी में'क पसंदीदा कार्यक्रम?
जवाब● गीत–संगीत'कि प्रतियोगिता वा्ल कार्यक्रम।

सवाल23◆ साहित्य के छ?
जवाब● मानवीय जीवन'क चित्र।

सवाल24◆ कोई व्यक्ति विशेष जकें देखिबेर प्रभावित छा?
जवाब●डॉ.ए पी जे अब्दुल कलाम।

–मो0 9719417182 ●●●

आण लाग

–खुशी भट्ट 'खुशी',
कक्षा–8, रेनबो स्कूल, हल्द्वानी

1. यौस कपड़ौ क नाम बताओ।
खरीदनी वाल पैर नि–पाओ।।
पैरंणि वाल देखि नि–पाओ।
आण–लाग द्योरा ! तुम बताओ।।

2. भ्यार–भ्यार ग्योर म्वौट् छु बगल।
पेटम दाड़ि न्कि छु श क ल ।।
दाड़ि भितेर रौं ग्वौर स पू त।
बिन गोरू–भैंस क् पियो दूध।।

3. ना कभैं बोई, ना कभैं ख्वाप।
रम'दा क् ख्वार्म जाम गिं ध्वाग।।

4. एक साग क नाम बताओ।
मैं लै खानूं तु लै खाओ।।
'ताल' लै उमें 'चॉबि' लै उमें।
आओ धैं सासु ! आंण लगाओ।।

5. पॉछ ऑखरोंक म्यौर छु नाम।
उल्ट लै सुल्ट एक समान।।
भाषा छु मैं भौत दूरै की।
जो बतालौ ऊ 'हनुमान'।।

6. गिलास क भितेर उज्यावै–उज्याव।
दिन भरि 'से' रौं, रातम मुच्छाव।।

7. ना पॉख ना फॉक, ना यॉक ना वॉक।
फिर उड़ुं, आसमान, देखो धैं कतु गुमान।।

8. ना फूल ना फल छु, रस भरि ग्ल ग्ल छुं।
ना क्वे रस ना रसगुल छुं, बताओ गुलाब सिंह मैं के छु।।

9. तीन आंखरोंक म्यौर छु नाम।
उल्ट लै सुल्ट एक समान।।
औंनू औंणक–जांणक काम।
न सड़क में जानूॅ न लगूंनूॅ जाम।।

10. बीसों क् मुनौव कट–कट काटि।
ना मारा मारी, ना खूनकि धारी।।

उत्तर– 1. कफन 2.नारीयल 3.मुनावाक बाल 4. लौकी–लॉक+की 5. मलयालम 6.बिजुलिक बल्ब 7.पतंग 8.गुलाब जामुन 9.हवाई जहाज 10.हात खुटांक नाखून

चा

–हरपाल सिंह भण्डारी

चा मेरी पछाण छः, चा मेरी रसाण छ।
बिना चा कू रयोंदू भी नी, चा त ज्यू प्राण छ।।
सुबेर उठी तैं सिरवाणा परैं, डळबुळू गिलास चैंदू।
कल्यो रोठी दगड़ा तब, चा कू पूरू साथ चैंदू।।
ऑफिस मां पौंछदी बिथ्या, कुळा भर चा कू चैंदू।
चा परैं जू चर्चा होंदी, वीं चर्चा मां मैं भी रैंदू।।
घौर, बौण, पुंगड़ा, सारी, चलणी छ या चा बिचारी।
एक गिलास पेक तैं, उतर जांदी थौक सारी।।
बचपन का दिन्नु की चा, दादा तैं दियोण थै।
दादा सनै देण सी पैली, बाठा मां चख्योंण थै।।
स्कुल्या दिन्नु की चा, गुरूजीयों तैं लियोण थै।
गुरूजीयों का नौं परैं, एक अफु पियोण थै।।
मैं भी भारी सौकीन छौं चा कू, कबारी त पिलौण छ।
अब नौकरी का दिन्नु की चा, सब्बू तैं मंगौण छ।।
चा मेरी पछाण छः, चा मेरी रसाण छ।
बिना चा कू रयोंदू भी नी, चा त ज्यू प्राण छ।।

भुखण्याँ तैं लुकण्यां लिगि

– डॉ0 सत्यानन्द बडोनी, देहरादून

नितेन्द्र ह्यूँन्द मा अपणि ब्वारी रमा तैं कुछ मैंनौ खातिर दिल्ली लिगि थौं। ह्यूँन्द खतम ह्वै तऽ उ अपणि ब्वारी तैं घौऽर लैगि। चार–पाँच मैंना रमा दिल्ली क्या रै वीकूं दीमाग सातां आसमान पर पौंछगि। वींन घौऽर ऐक सब्यौं तैं सेवा–सौंळि लगै तऽ छैंछ पर! खुट्यों छ्वीं तैं नि, बल्कि नमस्ते करिक। सबि ठग्याँ सि रैगिन कि यीं ब्वारी तैं ह्वै तऽ ह्वै क्य छः। घौऽर वीटि तऽ ठीक–ठाक गै थै पर! यीं तैं इन क्य ह्वैं। कैं यीं परैं दिल्ली कु भूत तऽ नि लगि। छन्दी–खान्दी ब्वारी थै, याँक भेजि हम्न या दिल्ली.....।

खैर इन छ्वी बि फुण्ड फूका, कुछेक दिन घौऽर फुण्ड रालि तऽ फिर पैलि तरौं ह्वै जालि। तनि चित्त था बुझौणा ऊ। पर! सुबेर तऽ हद ह्वैगि जब वीन अपणा आदमि तैं वेकु नौ लितैं भट्याई कि ''नितेन्द्र! चाय रखी है, पी लो।'' नितेन्द्रै कि बैन जब इन सुणि तऽ वा हंटाणेगि.....। नि.. ते.... न्द्र..... .इन मरि यींकु.....आदमि कु नौं छ लेणि। कन्न बिजोक पड़ि यीं दुन्याँ तैं।'' वा बरणांण हि थै लगि तबर्यों वेका बाबा जीऽन बोलि ''किलै तेरू सुबेर राति–काळि ककडाट मचायूँ.....?'' ''वींन बोलि ''ककड़ाट तऽ मचगि.....। वार तुमारि ब्वारी दिल्ली जु थै जायीं....., अंगरेज्यांण बणगि तुमारि ब्वारी.....।''

''पर भै आखिर मा क्य ह्वै, किलै छः तू पितेणि।'' '' दऽ! नि सुणि तुमुन, तुमारि ब्वारी नितेन्द्र तैं नौ लितैं छः भट्याँणि.....।'' वेकि माँऽन ब्वारी जनैं हाथ हलैक बोलि। तबर्यों नितेन्द्रऽन बोलि '' माँ किलै तू सुधिमूदि पितैणि। तुमारू जमानु गै, अब नयूं जमानु ऐगि, इन सब कुछ चल्दु।''

वेकि माँऽन बोलि '' सब कुछ त्वै मास्त तैं।, तु बि ब्वारी कि धड्वै छः लगणु। धिक्कार त्वै मास्त तैं, जनानी कु गुलाम माचु.....।''

तबर्यों वेका बाबाजीऽन बोलि ''अर्रे भै वेकि जनानि छ बोनि वैतैं, जु सकु स्यू बोलु.....। तू सुधि–मूदि छ ककड़ाट कनि।''

''हाँ बाबाजी यीई तऽ बोनु छौं मैं माँ तैं'' नितेन्द्रऽन अपणा बाबाजी जनै आँखौं झपकैक बोलि।

वैका बाबाजीऽन वैकि माँ जथैं आँखा दिखे बोलि '' यार तू बि तऽ .....अर्रे भै वैकि जनानि छ उ वै पर जुता मारू चा कुछ करू। सै तऽ छः बोन्नु ऊ। तु बि यार प्यारी कि माँ.....।'' अर प्यच थुकि वैका बाबाजीऽन चौक उद् कि बांजा पड्यान ये जमाना तैं अर अफि गिच्चा भितर बोन्न लगिन कि ''फुण्ड धोल्याँ माचु, द्वी कौडि का, चरकण्ड।''

हमारा देख्दा–देखदि अपणा बड़ों कु नौं बर्जदा था लोग। यखमां जनान्यों कु नौं सबसी पैलि थौ। अपणा गौं का दाना–सयाणौं, खासकरिक् सास– ससुरा, जेठ–जिठाण्यों मम्य सास–ससुर कु नौं बर्जणु अपणा आप मा रीति–रिवाज कु एक हिस्सा थौ, नौं बर्जणु अपणा दाना–सयणौं तैं इज्जत देण सि थै तन तऽ कुछ लोगू कु मानणु छ कि जैका होला तैका हि तऽ नौं लेला। बिल्कुल सै बात छ। पर! अपणा बडों कु नौं बर्जणु हमारि जाति अर थाति कि प्रथा छ इखि मा तऽ हम सबसि अग्वाड़ि छन।

दूर किलै जाण, माँ बि धण्याँ तैं लण्याँ, तारीख तैं लारिख, जूँ तैं ढ़िन्ढू , आम तैं चुप्याळा, सदा तैं अदा, उमा तैं समां गुमां तैं सुमा न जाणि क्य–क्या बोल्दी थै। मैं तबरि तऽ छोटु थौ, आखर ज्ञान तऽ छौ ना। पर! जैं जबरि बीटि स्कूल जाण लग्यौं हौर हबरि–हबरि बड़ी दर्जा मा जाणु रयौं तऽ तब इछि इन जाणि सक्यौं कि माँ इन किलै बोल्दी होलि? खूब बड़ा तलै बि मैंन तारीख तैं लारीख, धण्याँ तैं लण्याँ, जूँ तैं ढ़िन्ढू , आम तैं चुप्याळा नऽ जाणि क्य–क्या बोलि। कै दिन तक तऽ मैंन स्कूलै कौपी परै तारीख तैं लारिख लिखणु रयौं। एक दिन तऽ मास्टरजीऽन लारीख लिखण पर् चटकै हि दीनि.....कि लारीख नि तारीख लिख दौं। एक घड़ी तऽ मैं खौळैग्यों कि माँ का बाना मैंन गुरजी कि मार खैलि अर बिज्जति अलग ह्वैगि।

घौऽर ऐतैं माँ पूछि '' माँ तु तारीख तैं लारीख, धण्याँ तैं लण्याँ, किलै बोल्दी तेरा बाना तऽ मैंन आज तारीख तैं लारीख, लिखण पर गुरजी कि चटकताळि जैं खय्यालि।''

माँ एक घड़ी चुप ह्वैगि अर मयाळु आँख्योंन मैं जनै हेरि अर मेरू मुंड मलास्दी– मलास्दी मेरि भुक्की पी तैं मयाळूपन्न सि बोलि ''मेरि पोथली! मैं जांणि–बुझि तैं तऽ नि बोल्दों इन। याँ का पिछाड़ी क्वी खास बात छः'' मैंन बोलि '' इन क्य खास बात छः?''

माँऽन बोलि ''हमारा गढ़वाळ मा अपणा दाना–सयाणौं

कु नौं नि लेन्दन। ऊँकु नौं लेणु वर्जित छः। ऊँका मान–सम्मान का खातिर इन रिवाज साक्यों पैलि बीटि छ। जौंका नौं अपणा पुराणां लोगु तरौं होन्दू थौ तऽ बेटी–ब्वारी ऊँकु नौं नि लेन्दी थै, तब जैक इन बोल्दिन। लारीख वाळि बात स्यू बि त्वैं तैं बिगौंदौं।''

इनैं–उनैं नजर लगै कि कैं क्वी सुंणि नि ल्यौ माँऽन फिर बोलि कि ''त तैं ल इलै बोल्दौं कि तेरा दादाजी कु नौं तारादत्त थौ। इलै तारीख तैं लारीख, तार तैं लार बोल्दौं, तेरा बड़ाजी कु नौ सदा थौ इलै सदा कि जगा परै अदा बोल्दौ। इनि गौंमा कैकु नौं धनंज्जय रै होलु तऽ धण्याँ तैं लण्याँ, जूं तैं ढिन्डू इलै कि सैत मा कैकु नौं जूंवाराम रै होलु तऽ जूं तैं ढिन्डू यांक बोल्दन। आम तैं चुप्याळा यान बोल्दन कि क्वी हमारा गौं मा अम्बादत्त रै होला तऽ आम तैं आम नि बोलिक चुप्याळा बोल्दन।''

क्य सोच थै हमारा पुराणा लोगु कि। मान–सम्मान कन्नु सिखून तऽ हमारा पुराणा लोगु का चलायाँ बाटा सि सिखून। ऊँकि या बात अजौं तलैं घौऽर–गौं मा ज्यूँदी छ, सि इछि बिसन लगिन जु नई ब्वारी छन। हम पच्छमी संस्कृति जथैं जांण लगिन। अब ऐ तैं विकास बोला चा कुछ हौर........।

खैर नौ वर्जणु हमारा गढ़वाल मा एक सुन्दर रिवाज छ। एक दिन माँऽन तऽ बोलि '' ब्याळि रात भुखण्याँ तैं लुकण्यां लिगि लारि–लारि रिंगण्याँ उद।'' एक घड़ी मैं बि चकरैग्यों कि आखिर मा या क्य भाशा छ। माँऽन बोलि यॉ कु मतलब कुत्ता तैं बाघ लिगि धारि–धारि घट्ट उद। इन किलै? माँ तैं पूछि तऽ माँऽन बोलि'' कैकु नौ कुत्ताराम या कुकर्या रै होलु तऽ वेतैं भुखण्याँ, बाघ तैं लुकण्याँ, किलै कि बाघ लुकि तैं मार करदु अर दगड़ा–दगड़ि कैकु नौं बाघम्बर रै होलु तऽ बाघ तैं लुकण्याँ बोलि दीनि। लारि–लारि कु मतलब धारि–धारि। धरि कैकु नौं रै होलु तऽ वातैं लारि–लारि बोलि दीनि। इनि घट्ट तैं रिंगण्याँ बोलि दीनि। कैकु नौं घठू रै होलु तऽ घट्ट तैं रिंगण्याँ बोलि दीनि अर वीई ऊँकि आदत बणंगि। इनि राधा तैं आदा। राधा भैजी तैं तबि तऽ बोल्दिन पुराणि ब्वारी आदा जैठा जी। जगदेश्वर बड़ाजी तैं फकतेश्वर ससुरा जी बोल्दिन पुराणि ब्वारी। इनि प्रेमनगर तैं लरेमनगर, किलै कि पल्या खोळौ प्रेम भैजी कु नौ प्रेम जु छ। इनि नऽ जाणि कनि–कनि बात अर अलग हि शब्दावलि बणगि हमारि।

अपणा बड़ों कु मान–सम्मान कन्नू कै तैं सिखणु हो तऽ हमारि ब्वारियों सि सिखुन। कबि ऊँकि हम मखोल बि उड़ै देन्दन पर! उ अपणि बात परै अड़िग रन्दन। उ अपणा दाना–सयांणौं कु नौं वर्जण मा अपणि शान समझ्दन। यी छन हमारि ब्वारी। यूँ ब्वार्यों तैं एक दॉ नि कै दॉकु प्रणाम होयुं चैन्दु।

कबि नौं वर्जणा चक्कर मा हमारि ब्वारी लोगु का मखोल बणिं जान्दिन। नौं हि नि छौं वर्जणैं कि बि हमारि यख एक भलि प्रथा छ। मम्या ससुरै कि छैल–छौं बि वर्जित छ हमारा यख। अंणजाणि मा छौं ह्वैगि तऽ बड़ा तैं नहैण पड़्दु चा ह्यूँद हो या रूड़्यौं का दिन। छौं का चक्कर मा तऽ सर्वा भैजी वे चौकला मा बि नि बैठद्न जैमा क्वी ब्वारी हो बैठीं। क्य मान–मर्यादा थै पैलि हमारि। आज हम अंगरेज बणगिन। भुलग्यां हम अपणौं का सैंत्याँ–पाळ्याँ रीति–रिवाजु तैं। अब तऽ हम अपणा आदमि कु नौं बडि शान सि लेणां छन। बै–बुबा, बड़ा–बड़ी, चाचा–चाची कु नौ लेण लगिन हम। इन बोल्दी दॉ दॉतू तैं अलग निपोड़्दन। यीई हमारि विकासै कि बात छ।

जै समाज का रीति–रिवाज जथा समृद्ध होला, उतगि ऊ समाज मजबूत होलु। इन हमारा पुराणा लोगु कु मानणु छ। कनि दूरदृश्टि थै ऊँकि, अर कन्ना उच्च विचार था हमारा पुराणा लोगु का। उमा क्वी डिग्री नि होन्दी थै। अनपढ़ होन्दा था सि। पर! एक सुन्दर प्रबन्धन होन्दु थौ उमा। ऊँका बताया आणां–पखाणां परैं हम पढ़्या–लिख्याँ आज पीएचडी छन कन्न लग्याँ । ऊँका बताया तीज–त्यूहारू का पूण्य प्रताप सि हि आज हमारि पच्छॉण देश–मुल्क मा बणिं छ। जैन अपणा दाना–सयाणौं कु मान–सम्मान करि वे तैं अफि सम्मान मिल्दु। यखमा मैं इनु नि बोन्नु कि हर जगा मा अपणा दाना– सयाणौं कु नौं नि ल्या, जख मा ज्वरत छ वखमा जरूर ऊँकु नौं ल्या पर! ऊँका सामणि नि ल्या। घत्तमत देखि तैं नौं वर्ज्य चैन्दू। यीई तऽ हमारि होश्यारी छ।

तन तऽ जैका होला तैका हि तऽ नौं लेला। जैका होला हि ना, नाट होलि, ऊँन कखन कैकु नौं लैण। कबि जैं इछि घडी ऊ जरूर इन बातुन हमारा खौळ तऽ ह्वै जान्दन...पर! सोचा दौं, ऊँका बारा मा कन्ना मनखि छन उ। हमारू कुमौं हो या गढ़वाळ, जौनसार हो या जौनपुर चा हो बंगाणि, रवॉल्टी या भोट्या सबका अपणा–अपणा सुन्दर रीति–रिवाज छन जौंकि अफि मा एक शान छ। कल्पना हि

नि करि सकद्न कि यूँ सबि का मिन्न सि हमारि संस्कृति मा कथा श्रीवृद्धि होन्दी अर जु सारा गौं–मुल्म मा अपणि सुन्दर छवि फैलौणां छन। यूँ बातु का हि तऽ हम धनी छन।

हमारि सबि धाण्यौं मा मांगलिक कि हि सोच छ। सुबेर या ब्याख्न दियासळै कु इस्तेमाल करदा था हम। हैका घौऽर सि छिलकौं या केड़ौं पर आग लौन्दा था हम। घौऽर मा तऽ दियासळै रन्दी थै, पर! ऊँकि सोच तऽ देखा दौं .....। हैका घौऽर सि छिलकौं या केड़ौं परै आग लिजाणु सुबेर व ब्याख्न सबि कि राजि–खुशी पुछि तैं छपछपि पड़दि थै। वाहः कनि सोच थै हमारा दाना–सयाणौं कि.....। हरेक कन्न–बोन्न–चन्न मा मांगलिक सोच। आग भभराण मा बि मांगलिक सोच कि क्वी सुमिन होलु लग्युं। गळा बाडुळि लगि तऽ अपणौं कि याद ऐ जान्दी, अर खुट्यों पराज लगि तऽ ऊँकि सुखै व राजि–खुशी का खातिर भगवान तैं याद करदा था। पर! आज हम इन किलै ह्वैन ? सारी छ्वी जन आज इत्हास ह्वैगिन.....।

मोरू का सगांड पुराना जमाना मा उच्चा नि निस्सा होन्दा था। किलै कि लोग झुकि तैं भितर जान्दा था य बि प्रणाम अर सेवा लगौंणै कि अपणा आप मा एक अलग हि रिवाज थौ। मठ–मन्दिरू का बि मोर निसा होन्दन कि आदमि अणजाणि मा सहि प्रणाम करिक मन्दिर मा सिर झुकेक जै सकु। वाहः क्य दिमाग थौ हमारा पुराणां लोगु कु। बड़ि दूरदृश्टि कि सोच थै ऊँकि। हो बि किलै ना .... जब बच्चा माँ का गर्भ सि ये भौतिक संसार मा औन्दु तऽ उ बि तऽ प्रणाम करिक यीं दुन्याँ मा औन्दु। बड़ा कृपालु छन भगवान जी। उ बक्त–बिबक्त हमतैं यख–वख, जख–तख कुछ नऽ कुछ समझौण अर बिंगौण परै हि रन्दा लग्याँ।

खैर बात थै नौं वर्जण वाळि, यखमा आज हम तैं मनन कन्नैं ज्वरत छ। हम आज नऽ जाणि कख जाणा छन पता हि नि छ। बात वीई ह्वै कि आनन्द कि खोज पागल पथिक। हमतैं अपणां पुराणा लोगु का चलायां बाटा मा चल्युं चैन्दू। हम आज जु छाँ सब ऊँका हि पूण्य प्रताप सि छन। झौगलि द्वी, मुखड़ि स्वी वाळि छ्वी कतै नि होयीं चैन्दी।

–मो0 9411535904 ●●●

पांच कणिक

–ज्ञान पन्त, इन्दिरानगर, लखनऊ

एक
हे मोटर !
त्यार ख्वार बज्जर पड़ि जौ।
घर बटि लखनौ त ऽ नजीक बणै देछ
मगर लखनौ बटि घर
कत्थप पुजै देछ।

तीन
दिगौ लालि !
कास दान छन यो रेल–गाड़िक
जो रत्तैब्याण पहाड़ोंक मुख देखें !

द्वि
बिजुली !
कभै–कभै तू न्है जायी कर
तबै यो शहर लै
गौं जस लागौल।

चार
घुघुती !
तू बासण छाड़ि दे पोथी ऽ !
तेरि घू–घू सुणनेर
आब गौं में क्वे न्हॉ।

पॉच
अघिल–पछिल
तलि–मलि
इथां–उथां
शहरन में जॉ लै देखॅछा
मकानै मकान
जमीन त ऽ कती छयी न्हॉ
मैं सोचूं
जमीन देखॅणा लिजी
हमन कैं आपण गौं जॉण पड़ौल।

झोड़ा निहुना

राजेन्द्र सिंह बिष्ट, कूर्मांचलनगर, लखनऊ

झोड़ा निहुना–बौला नि हुना
खेतों में रोपा लगूणि निहुना
हुडुकै कि आब ऊ हंसैणि हुना
खित–खित् चारि ऊ हंसणै नि हुना
झोड़ा नि हुना बौला नि हुना
हाई–रे बाख्ता– यौ त्येरि बलिहारी–
रड़ि गई भाल् दिन् जाणि का हि गई
खालि् छन घर–कुड़ि–गौं की –बाखई
जति चैनी उती मनुखी नि हुना
झोड़ा नि हुना बौला नि हुना
मैंसन् जास जो द्येखीण लैरई
द्वि हाथ–खुटों वाव् भिसौण है गई
क्वे कै कै दुख में– डाड़ नि हालन्
थैलि् जै मिलि गै–अंग्वाल् हालनई

झोड़ा निहुना बौला.....
पैलिकौ बखता क्ये भल हुंछी
गौंकि च्येलि–बेटी–सबनैकि हैंछी
मैत जो आई–भेटें छि सारगौंकैं
वीका जाण में सारै गौं रूंछि
उन दिनां भुला–डाना भिड़ा–
बाट् सिमारा–गाड़ गध्यारा
सब ज्यून जासा, छि हो हमूं हूं
दगाड़ हिटंछी दगाड़ै रौं छी
झोड़ा नि हुना...
घरां–क् चा–ख यां बुडांकि फसक
नरियौव–फर्सी दगाड़ै रिटेंछी
नानाकि धुर त्यौव खाव् मे रैंछि
मलखन् स्यैणियां मण मण हैंछि।

पहाड़ि बोलींक व्याकरण : 4.उपसर्ग प्रकरण

–डा0 भवानीदत्त काण्डपाल, विकासपुर (हल्द्वानी)

शब्दा्क शुरु में जुड़िबेर वीक अर्थ में बदलाव या विशिष्टता प्रकट करणेर शब्दांक नाम उपसर्ग कूँनी। उपसर्गक प्रयोग संज्ञ, सर्वनाम, विशेश्षण आदि शब्दोंक आरम्भ में करी जाँ। इनर प्रयोग शब्दै में जुड़िबेर हुँ, अलग स्वतंत्र प्रयोग न हुन। पहाड़ि बोलीं में अनेक भाशाओं बटी आया्क उपसर्गोंक प्रयोग मिलें। अधिकतर उपसर्ग संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी आदि आर्य भाषाओं बटी आयाक छन। कुछ अरबी, फारसी बटी आयाक उपसर्ग लै छन। पहाड़ि बोलींक मुख्य उपसर्ग इन छन–

- **अ उपसर्ग**– विपरीतार्थ वाचक **अ** उपसर्गक प्रयोग पहाड़ि बोलीं में मूल रूप में मिलें। जसिक– अधरम, अनाथ, अकाव, अबोध, अबेर, अबूझ, अभागि आदि।
- **उ उपसर्ग**–संस्कृतक ऊपर अर्थ वाचक **उत्** उपसर्ग पहाड़ि बोलीं में **उ** रूप में विकसित मिलें। जसिक– उकासण, उखाणन, उखावण, उपाणन, उमावण, उधारण, उखेलण, उचेणन आदि।
- **कु उपसर्ग**– **कु** उपसर्गक प्रयोग खराब अर्थ में पायी जाँ। जसिक– कुगत, कुजात, कुमति, कुबुद्धि, कुकरम, कुसंगत आदि।
- **नि उपसर्ग**– नि उपसर्गक विकास संस्कृतक निःशेशात्मक **निस्** उपसर्ग बटी हैरो। जसिक– निथारण, निखारण, निकावण, निचोड़न, निमोरण, निङवण, निमूँण, निछौंण आदि।
- **दुर उपसर्ग**– खराब अर्थ में प्रयुक्त संस्कृतक **दुर्** उपसर्ग पहाड़ि बोलीं में कती मूल रूप में और कती परिवर्तित रूप में मिलें। जसिक– दुर्बल/दुर्बव/दुबव, दुर्गत, दुर्दाश, दुर्बुद्धि आदि।
- **पर उपसर्ग**– पर उपसर्ग संस्कृतक **प्र** उपसर्ग बटी विकसित हैरो। येक प्रयोग उत्कृश्टता आदि व्यक्त करणा लिजी हुँ। जसिक– परदेश, परलोक, परसाद, परचार आदि।
- **अप उपसर्ग**– खराब अर्थ में प्रयुक्त अप उपसर्गक प्रयोग पहाड़ि बोलीं में मूल रूप में मिलें। जसिक– अपमान, अपराध, अपराधि, अपजश, अपजशि आदि।
- **सम उपसर्ग**– समानता आदि अर्थों में प्रयुक्त **सम** उपसर्गक प्रयोग लै पहाड़ि बोलीं में मिलें। जसिक– समान, समाज, समदि, समदणि आदि।
- **अव उपसर्ग**– अनादर वाचक **अव** उपसर्गक विकास पहाड़ि बोलीं में अब, औ आदि रूपों में पायी जाँ। जसिक– अबगुन, अबस्था, अबधूत, औतरण, औछन आदि।
- **वि उपसर्ग**– विशिश्टता वाचक **वि** संस्कृत उपसर्गक पहाड़ि बोलीं में प्रायः बि उच्चारण मिलें, परन्तु लेखन में वि लेखी जाँ। जसिक– बिचार/विचार, बिकास/विकास, बिनाश/विनाश, बिदेश/विदेश, बिमति/विमति, बिधौ/विधौ , बिन्ति/विन्ति आदि।
- **अन उपसर्ग**– निशेधात्मक **अन** उपसर्गक प्रयोग पहाड़ि बोलीं में लै मूल रूप में मिलें। जसिक– अनपड़, अनमोल, अनजान, अनबन, अनकसै आदि।
- **आ उपसर्ग**– संस्कृतक पूर्णता वाचक आ उपसर्ग पहाड़ि बोलीं में आपण मूल रूप में प्रयुक्त हुँ। जसिक– आहार, आराम, आकार, आदेश, आफत, आदर आदि।
- **अद उपसर्ग**– अर्ध शब्द बटी निर्गत एवं आदुक अर्थ में प्रयुक्त अद देशज उपसर्गक प्रयोग पहाड़ि बोलीं में मिलें। जसिक– अदपाकी, अदकाच, अदमरी, अदखायी, अदजवी, अदबीच आदि।
- **भर उपसर्ग**– पूर्णता वाचक भर शब्द पहाड़ि बोलीं में देशज उपसर्गक रूप में प्रयुक्त हुँ। जसिक– भरपेट, भररात, भरजोभन, भरमार, भरसेत आदि।

☐ **उन उपसर्ग**– न्यूनता वाचक उन उपसर्ग संस्कृतक **ऊन** शब्द बटी विकसित हैरो। येक प्रयोग गिनती करणक लिजी हुँ। जसिक– उनीस, उन्तीस, उन्तालीस, उनपचास, उनसठि आदि।

☐ **बद उपसर्ग**– खराब अर्थ में प्रयुक्त **बद** उर्दू उपसर्गक प्रयोग पहाड़ि बोलीं में लै मिलें। जसिक– बदनाम, बदमाश, बदतमीज, बदहवाश, बदकिश्मत आदि।

☐ **ला उपसर्ग**– **ला** उपसर्ग निशेधात्मक छ। पहाड़ि बोलीं में येक प्रयोग लै मिलें। जसिक– लापरवाह, लावारिस, लाइलाज, लाजवाब, लापता, लाचार आदि।

☐ **बे उपसर्ग**– बिना अर्थ में प्रयुक्त **बे** उपसर्ग उर्दू बटी पहाड़ि बोलीं में ऐरो। येक प्रयोग पहाड़ि में अरबी–फारसी बटी आयाक शब्दोंक साथ हुँ। जसिक– बेशरम, बेवकूफ, बेइमान, बेकार, बेकशूर, बेचैन आदि।

☐ **हर उपसर्ग**– प्रत्येक अर्थ में प्रयुक्त **हर** उपसर्ग लै उर्दू बटी पहाड़ि बोलीं में ऐरो। येक प्रयोग लै पहाड़ि बोलीं में अरबी, फारसी बटी आयाक शब्दोंक साथ हुँ। हरदम, हरबखत, हरचीज, हररोज, हरबार, हरकाम आदि।

☐ **गैर उपसर्ग**– निशेधात्मक **गैर** उपसर्गक प्रयोग लै पहाड़ि बोलीं में मिलें। जसिक– गैरजिम्मेदार, गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरजरूरी आदि।

उपसर्ग जुड़िबेर बणी हुई इन शब्दोंक उच्चारण में लै अलग–अलग बोलीं में कुछ अन्तर पायी जाँ। लेकिन इन उपसर्गोंक प्रयोग सबै बोलीं में मिलें। क्षमा करिया, टाइपिश्ट और प्रकाशकाक हिन्दी फौंट में अन्तर हुणक कारण पहाड़ि बोलींक व्याकरण नामक इन सबै लेखों में श और श अर्ध वर्णोंक गलत प्रयोग हैरो।

–मो0 9411343874 ●●●

म्यर देश

–ज्योति तिवारी कांडपाल

आर्यवर्ते भरतखण्ड कि, छटा बड़ी निराली छू।
तीन तरफ बे समुद्रल घिरी, ख्वर पर मुकुट हिमालय छू ।।

आस्था की य धरती पर, भीड़ मस्ते भारी छू।
यां पाथर पर लै भगवान दिखूनी, महिमा गजब निराली छू।।

कसि हमरि आन और शान छू।
जाँ देश लिजि वीरों ल गँवाई आपुण जान छू ।।

एक तरफ भगतसिंह चन्द्र शेखर और सरदार भाई पटेल छै।
दुसर तरफ अहिल्याबाई पन्ना और लक्ष्मीबाई जास वीरांगना छै।।

धन्य धन्य य हमरि धरती माता छू।
जाँ बैणियांल आपुण सुहाग और माताओं ल आपुण लाल भेट चढाई छू।।

यां पाथरों में बे हीरा और माँट मे बे सुन निकलूं ।
हे धरती माता म्यर तिहिं कोटि कोटि प्रणाम छू।

❀❀❀

''उत्तराखंड राज्य''

–चन्द्र शेखर काण्डपाल, कौसानी

विकासक् नाम परि बणिं उत्तराखंड राज्य।
बाव् बै अब उन्नीस सालक् हैगो ज्वान।।
गधेरू नेताओंक् ले खूब हैरे बहार।
अखवार और भाषणों में जी मिलि रौ रूजगार।।
जो कभै पधान नीं बण सकछी,
आज विधायक–सांसद बणिं गेई।
आपूंणि आघिल दस पीड़ियों हैं,
धन–दौलत खूब समेरण रई।।
चुनावूं में इन्हर प्रचार ले न्यारे छू।
शराब और नोटूंक मुक्स्यारे छू।।
पांच सौक् नोट और अद्धी एक वोटक् मोल छू।
जनता ले इन्हर ढंग में खूब रंगीन छू।।
जनता जै सही हूंनि कैकै दींछी य डबल और शराब।
इसिके हूंनि गे मेरी उत्तराखंडक् दाश् खराब।।
गैरसैंण कै इनूल गैर करिहै!
राजधानी नाम पै वां खूब पैंस लगै है।।
हमर नेताओ के वां अब लागण हैगो जाड़।
शहीद – आन्दोलनकारियोंक् स्वैंण ले न्हैगीं ख्याड़।
भरी जवानी में जी हाफण फैगो हमर उत्तराखंड।
बचाओ दाद– भूलि हमर उत्तराखंड, हमर उत्तराखंड।।

विधाः संस्मरणः 'निःस्वार्थ रिस्त सबै ह्वै भल

–मंजू बिष्ट, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

बेली नानोंक बाज्यू'क जन्मदिन छि। ब्याखुली कै घर'क काम–धाम निपटैबेर मैं सोचन लागि रौछी, यौ लॉकडाउन में नाना'क बाज्यू'क जन्मदिन कसिक मनाई जाओ। तबै फोनैकि घंटी बजी। फोन परुली'क इज'क छि। परुली एक गरीब घरैकि नानि छी। परुली बाज्यू मसीड़ी बिमारी'क कारनै'ल खाट में पड़ी रैनी। परुली'क इजा और वीक द्वी दिदि मजुरि करबेर घर'क खर्च चलौनी। परुली पढ़न–लिखन में भौत होशियार नानी छू। परुली'क पढ़न–लिखन में लगन देखी बेर कक्षा 3 बै वीक पढ़न–लिखनक जिम्म मैंल आपुन ख्वर ली लीछ। आज परुली कक्षा 5 में न्है गैछ।

फोन में परुली इज बोली, चेली सरकार बै जतुक लै राशन मिल रछी सबै खत्म हैगो। द्वी दिन बै घर में नाना'ल खान नी खै राख। तुम थ्वाड़ मदद कर द्याला त तुमरी बड़ी पा ह्वैलि। ''नान द्वी दिन बै भूकै छैं'', यो सुनबेर मैकें भौतै कइ–कइ लागि गे। मैं मनै–मन भगवान थै प्रार्थना करन लाग्यू, हे भगवान! यो कोरोना महामारी'ल भ्याराक सबै दैशों में आपुन आतंक फैलें राखी छू। अब यो महामारी हमर देश में लै अपुन खुट जमौन लागि गे। हमर देश में गरीबी भौतै सकर छू। यस हाल में गरीब मनखी भूखमरी'ल मर जाल। हे भगवान! अब तुमी हम सबूं पर आपनि छत्र–छाया करौ।

फिर मैं सरासर उठ्यू। नाना'क बाज्यू पास गयूं और उनूं थै बोल्यूं ! ''सुनो हौ! तुमर जन्मदिन कै मैं आपुन हिसाब'ल मनै ल्यिू''!

नाना'क बौज्यू बोलीं, ''लॉकडाउन चलरौ यो साल, रैन द्यौ, जन्मदिन आघिन साल मनै ल्यूल''।

मैं फिर बोल्यू, ''तुम होई त बोला नै''!

नाना'क बौज्यू बोलीं, ''ठीक छू बाबा तुमन कै जस भल लागौ उस करौ''!

मैं सरासर रस्याखन गयूं, संदूक खोली। बेली रत्तै नाना'क बाज्यू राशन–पानी लै रछी, मैंल आदुक राशन निकालबेर एक झ्वाल में भर दी, और नाना'क बाज्यू पार गयूं। उनर हाथों में झ्वाल कै दी बेर बोल्यूं, ''यो झ्वाल कैं परुली इज कै दी द्यौ।

नाना'क बाज्यू झ्वाल देखबेर बोलीं! भाग्यवान! के भर रखा यौ झ्वाल.....!

मैं उनरि बात कैं बीच में काटते हुए बोल्यूं, 'के नी थै हौ, थ्वौड़–भौत राशन–पानी छ। परुली'क इज'क फोन ए रछी कि उनर नाना'ल द्वी दिन बै खानु नी खै रखै। मैंल सोचि यो साल तुमर जन्मदिन कै मैं आपुन तरीक'ल मनौनूं। '''एक जरुरत मंद'क जरुरत पूरी करनूं'''! मैं परुली इजा कै फोन कर दिनूं। तुम मास्क पहनबेर भ्यार कै निकलिया''।

नाना'क बाज्यू थोड़ी देर म्येरी मुखड़ी देखते रयीं। फिर हंसते हुए मास्क पहनी, और झ्वाल कें पकडबेर भ्यार कै न्हैगीं। आपुन यो नानुनान काम'ल म्येरी कोठी में भौत शांति पड़ी।

●●●

ड्रैगन त्यर काव मूंख हैजौ

–दामोदर जोशी 'देवांशु'

ड्रैगन त्यर काव मूंख हैजौ, कभै पनपियै झन
आंखक झाड़ जौ काटणौछै, कभै तिष्टियै झन।
जै लाग रौछै कुकुर जस, बुकूंणैकै त्वैकें धान
शान्तिल आपण ठौरम रुॅनै, लुकि रुॅनै आपण खान।
किलै आयै हिमाल है तलि, धमकूछै देखै–देखै गन
ठगि खाणौ छै सारि दुणी कैं, मोटै रौछै खै हमरै धन।
लपकूॅछै स्यापकि जसि जिबड़ि, किलै माति रौ त्यर मन
न तिड़ दुश्मणा उपन जस, आब भौत इतरायै झन।
रणचंडी जा च्याल हमारा, तड़ि में आब तु रयै झन।
पापि पाक कैं ताऽव में धरछै, नेपाल कैं दिछै तु मुन
सबूकैं चुन लगूॅन में रयै, मानवताक तु छै घुन।
खॉ–खॉ हैरै कसि रावणा, जाग हड़पणकि धुन
एक दिन जरुर आल दुश्मणा, गवूॅण पड़ौल त्वैकैं दुन।
छोड़ दुश्मणा जाग हमरि, स्वाट खालै जो नङालै मिन
वोड़ मणी लै खजबजालै, नचै द्यूल त्यार गिन।
सेकि–साकि बाकि झन करियै, मिटै द्यूॅल त्यार चिन
अहंकारै मुनई टोर करुॅलो, गिण ल्है आपणा दिन।
फौरी रौछै भङव जस, कच्येलि दयूंल त्यर फन
ड्रैगन त्यर काव मूंख हैजौ, कभै पनपियै झन।।

पुस्तक समीक्षा–

भाबरक् बॉज

—डॉ0 जगदीश चन्द्र पंत, हल्द्वानी

कुमाउनी व हिन्दी साहित्याक वरिष्ठ साहित्यकार व कुमगढ़ पत्रिका क सम्पादक दामोदर जोशी देवांशु ज्यूक कुमाउनी गद्यनक् संकलन भाबरक् बॉज एक महत्वपूर्ण कृति छु जमें 32 लेख छन। उनन द्वारा भूमिका में खुदै लेखि रखौ–

''भाबरक बॉज'' कुमाउनी भाषा में गद्य संकलन है। जो समय समय पर प्रस्फुटित भावों का शब्द–संयोजन मात्र है, कोई दस्तावेज नहीं। इसमें आज से पचीस वर्ष पूर्व मन में उत्थित भाव मंजरियॉ है जो कुछ समसामयिक सरोकारों को इंगित करते सहज लिखित गद्य। तरॉण में प्रकाशित कृति यहॉ है तो आखर, दुदबोली, पहरु, पुरवासी, ब्याणताऱ और गद्य संकलनों द्वारा अपनाये गये गद्य लेख भी। 'भाबरक् बॉज' मेरा कोई योजनाबद्धबड़ा प्रयास नहीं है और न यह कोई मानक साहित्यिक कृति है। निर्द्विन्द्व व साहित्य सेवा भाव से दुदबोली कुमाउनी भाषा की श्रीवृद्धि में गद्य के विकास की उच्चाकांक्षा से ही इस संकलन का प्रणयन किया है।''

वर्ष 2013 में प्रकाशित उनरि यो कृति कुमाउनी साहित्य क एक महत्वपूर्ण दस्तावेज छू जमी 120 पृष्ट छन। आरुक–बारुक, शेरदा दगाड़ एक दिन, धरिणि, यात्रा और बोतलक् पाणि, उजाइक कजिय, बात कुमाउनी गद्यकि, हमरि धरोहर–गंगा, हिरदा, के ल्ही जाछै चेली, घमण्डक् छौव सुख–दुःख चार यार, चिट्ठि–सम्पादक ज्यु हुँ, रोपैक, ऱ्वाट, ढोल और सिंट, बुड़ और बा्व दुदबोलिक बार में एक नजर, हवागै खाली, सैपकि हार, जवैं जै ऊॅना खीरै पकूॅनी, पटाङणक् सूर्ज, बाबुक करी ब्या, इस्कूली शिक्षाक् पाठ्यक्रम में लोकभाषाकि उपयोगिता, आपणि इज्जत आपणि हात में, जात जतै दे, आजादी कि पछ्याण, झा्ल गोरु अकत्यार, भाबऱ्क बॉज, एक समर्थ शब्द शिल्पी, पातवाक् चाड़नक बलॉण जांस गद्य लेख संकलित छन।

'भाबऱ्क बॉज शीर्षक में उनूल लिख राखौ–

''पहाड़ाक तीन चार हजार फुट है बेर उच्च डान–कानन और भ्योव कभाड़न में भै म्योर रूॅण–खाण। वा सर–सर सरकणी मनम छपि–छपि पाड़णी दिलम गुदि गुदि लगूॅणी ठण्डी–ठण्डि बयालकि डोलि में म्योर जर–जर दर–दर ठड़–ठड़ पर पात भै रसिल। हंसनेर भई पखारन में लै और बखारी रूनेर भई भासि अन्यार पातलों में लै। क्वै मैंके चौ नि चौ मैं दुणि कैं हौ–पाणि दिण हुँ एक सिपै जस ठड़ी बरे चै रुनेर भई। खरजू, तिलौज, फल्यार रांजा्क बोट भ्यार सुदै दस दिनी बिरादर जास में और मिहौव, अयार, काफल, उतीस। दयारि म्यार दगडू भै। बड़ि रूपसि बुरूॅश म्यरि घरवाई जै भै।''

पहाड़ कै हरि–भरि बनौंण में बाजक् एक महत्वपूर्ण स्थान छू। लेखक द्वारा वीक आसपास अन्य वनस्पति के संबंध स्थापित करि जै रौ। जंगल में मंगल कि परिकल्पना करि जै रै। जंगली जानवरों क लै वर्जन बीच–बीच में देखी जां। बाज्क डाव पहाड़ क लीजी वरदान छू। पेड़ों कैं जीवन दिणी पाणि श्रौत पैद करणी। वीक पतेल घा, सुतरक काम औनी। बाजक लकाड़ क सौंल, सुतर दार–दादर, भरपाटि–भरांण बणनेर भाय। बाज्क लकड़ाक आग व क्वैल लै भलौ भल ताप दिनी। बाज्क जड़ बटी टुक तक सबै काम औणि भाय।

भाबर में बॉज कसि आ छ यैक बार में लेखक आपण विचार धरण रई– ''पहाड़ै भै म्येरि पितर कुड़ि, आपणि थात। जब मनखि मैकैं यॉ ल्या उ बखत मै कैं यै मनखि कैं गालि दिंणक मन करनौछी। भाबराक् घाम लगाल। मै बचूॅ नै वपॉ, सोचणौछीं, मगर जब मनखिल मैं कैं यां आपण आङण में रोपि दे। आपण परॉणक स्यौव और उम्मेदक पाणि मैं कैं पेवा मै दिन दुगुण रात चौगुण बढ़ण लागूॅ। लोग कूंछी बल कि भाबर में बांज जामि नि सकन ज्यून रै नि सकन। म्यार भाग भाल हुन्याल और भाबरा्क–दगडुवांकि नई दुणी देखण हुनलि, पहाड़ौ नो संसार मैं फैलूॅण हुन्याल, पहाड़ै हौ–पाणि कैं दुणी संसाराक् कल्याण में लगूॅण हन्यलि तबै मैं यै भाबर में लै भौत भलि भॉ पङुरण लाग रयूॅ। लुट्यास जस बढ़ण लाग रयूॅ और धर्ति कि कोख कैं पाणिल भरण लाग रयूॅ। आब मै। यायीं जड़ जमूॅल, याकी लो लगूंल, पहाड़ में सिखी संस्कार और पढ़ी सद–गुणनक् पाठ यॉक बोटन कैं पढूलं

लेखक क कल्पना छू या वास्तव में उ यौ बाजक डाव कै पहाड़ बटि लै बेर भाबर में रोपण रई। देखण लैक छू। सच्ची में अगर उनर प्रयोग डाव रोपि बेर सफल हे गौ छ तौ आघिल कैं और पेड़ लै बढ़ोतरि करि सकनि। पर्यावरण प्रेम कैं प्रदर्शित करणी छू यौ महत्वपूर्ण लेख। अब उनार अड्ड भाबर में जै बेर मैक सत्यापन करण जरूरी है गौ छ। साहित्यकार सत्यापन करण जरूरी है गौछ। साहित्यकार यौ

मामुल में जॉच–पड़ताल जरूर कराल।

गद्य लेखन में गद्यकि श्री वृद्धि करणी साहित्यकार देवांशु कैं लोकभाषा कि बड़ी चिन्ता छू। खसपर्जिया दगाड़ स्तरीय और सर्व स्वीकार्य भाषाक प्रयोग में उ सिद्ध हस्त छन। जाग जाग में मुहावरा व लोकोक्ति क प्रयोग लै है रौ। जो सटीक छन अमिधा साथ लक्ष्णा व ब्यंजना शैली लै अपनाई जै रै।

शब्द में शक्ति दिणा लीजी विशेषणोंक प्रयोग लै खूब है रौ जोय यो छन–

बुसिल– पितिल, कव–कल्चूनी, हाङ फाङन, दयौ–पाणि, तिस्टनै–पनपनै, ठुला–ठुल गाड़–गध्यार, ग्यानी–ध्यानी, मौ मार, भाजि जङव, अलच्छणि औकात, आदि।

मुहावरा व लाकोक्ति प्रयोग–

घुरड़ कै आपण चॉठ प्यार –बाजकि केड़ी भलि जात खानकि सेड़ी भलि, झपकन पात और लतकन हाङ, फाङन, सात समुन्दर पार, सरकारी माल चुल्हे में डाल, नाकॉ मुखॉ खैंचा खैंच, स्वैरा स्वैर, सोल ज्यूंनार, बत्तीस परगार, बॉड़ै उज्याड़ खाणै हराणि हराणी, बैचेन परणी। झङू–नमङू जान् बगन। बसुधैव कुटुम्बकम, सर्वे भवन्तु सुखिनः। मनमैं पू पाकि गाय। बाग जस बगुरनी सैपाक। ऑख कत्थप ताणियै जै रै गाय। ढेपुटाक स्वैण देखण घ्वाड़ बैंचियै जै नींन, अलग–अलग खिचड़ी पकूणक, बरमान में काव रिङि रौछी, तील तिता भङिर मिठा, और लैं लोकोक्ति क प्रयोग जॉ तॉ है रौ।

साहित्यकार यौ पृथ्वी कैं हरि भरि मनौणक प्रयास सदा करते रौनी.....

फूलहि फरहि सदा तरु कानन, रहहिं एक संग गज पंचानन। खग मृग सहज बयरु बिसराह। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई। गो स्वामी तुलसीदास उतरकाण्ड में (23/01) में प्रकृतिक वर्णन करण रई। यई शैली प्राचीन धरोहर कसि जीवित धरि जाऔ यैक बार भौत चिन्तित छनं साहित्यकार एक पैगाम/सन्देश जस दिंण लाग रई।

दामोदर जाशी देवांशु ज्यू द्वारा आपण लेखन में अनेक काव्यो की रचना करि जै रै। शिखर हेम रश्मि–उनन में प्रमुख छन। संस्मरण में फाम उनरि कृति छू। सामुहिक नाटक संग्रह आपणि पन्यांर व गद्य संग्रह–गद्यांजलि जो कुमाउ वि0वि0 के पाठ्यक्रम में सामिल छन। आपण शिक्षक व प्रधानाचार्य जीवनक दौरान उनुल कॉलेज स्मारिकाओं– कल्पना, मालधन दर्शन, नामक पत्रिकाओं क सम्पादन लै करौ। पहाड़ (नैनीताल) बटी छपणी पुस्तक में उत्तराखण्डै प्रतिभा रूप में उनौर जीवन वृत्त प्रकाशित लै हौछ। गद्य में उनार कृति– अन्वार, भाबर्क बॉज, बोलिक सजसमाव आदि छन। और लेखन आज लै सतत प्रवहमान बनी छू जो उनार शैशवकाल (1970) विद्यार्थी जीवन बटी आरम्भ भौछि। 70 वर्षीय वरिष्ठ साहित्यकार देवांशु ज्यूकिं दीर्घ व मंगलमय जीवन क कामना छू। कुमाउनी साहित्य में विशेष अवदान करणा वास्ते देवांशु कैं वर्ष 2011–12 में उत्तराखण्ड भाषा संस्थानल डॉ0 पीताम्बर दत्त बर्थवाल सम्मानल सम्मानित करौ। उनरि रचना आकाशवाणी और दूरदर्शन बटि प्रसारित छन। आजकल आपू गढ़वाली–कुमाउनी मासिक पत्रिका कुमगढ़ क सम्पादन करण में उरातार लागी छन। यो पत्रिका पिछाड़ि 07 साल बटी छपण लाग रै जमीं उत्तराखण्ड क अनेंक नामी गिरामी बुद्धिजीवी व कलमकार सहयोग करण लाग रई। नई–नई वषयों व जन सरोकार मुद्दों पर लेखन है रौ। सबै विधाओं में रचना पढ़न में मिलण रई। यौ उनार मेहनतक सुफल छू।

–मो0 9410121158 ●●●

पढ़ाओ रे इस्कूला

–कृपाल सिंह शीला, सरपटा, अल्मोड़ा

पढ़ाओ रे इस्कूला ,
पठ्याओ रे इस्कूला।
गौं – गौंनु में प्राइमरी ,
तीन मैल में छैं हाईस्कूला।।
पढ़ाओ.....हाईस्कूला ।।
फ्री मजी, किताब छना ,
फ्री मजी ज्वता ।
ननु कैं वजीफ मिलाणौ,
और के चहैं आब ।।
पढ़ाओ.....हाईस्कूला ।।
फ्री मजी वर्दी मिलैणै ,
नी पड़नि फीस ।
फिल्टरक न्यान पाणि पीनी,
जब लागिछा तीस।।
पढ़ाओ.....हाईस्कूला ।।
न्यान तुमर आघिल बढ़िला,
दूर ह्वोलि बेरोजगारी ।
घर वाल सब मौज करिला,
नौकरी ह्वोलि सरकारी ।।
पढ़ाओ .....हाईस्कूला।।

बखता त्विल कसि यौ पलटि मारि

—लक्ष्मी बड़शिलिया 'बीना', हल्द्वानी

बखता त्विल कसि यौ पलटि मारि
बुढ़ ज्वान नान सबनकै डरै हालिं
सुणीं हमुल बीमारी हुंण लागरै
यौ लै सुंणि मणिंलै छ्यि बेर उणैं
रूपैनाक सेठ जैदाद वाव,गरीब
सबनकै एक्के मौत कोरोना लि मारि
बखता त्विल कसि यौ पलटि मारि !

मयालु ममता सब धरिणिं रैगे
बंयालनकि शान बजर पड़िगे
मकानन में भितर गोठिगैं सैप
झोपड़िन में भुख रैगिंइ मैस
प्रति दगड़ विज्ञान लै गै हारि
बखता त्विल कसि यौ पलटि मारि !

बड़बाज्यूक् हुक्क तमाकु मांग लैयूं
आम कि कचकच सुंणन ह्वै भै रयूँ
घर भितर सबै समान जाम करिबेर
अपणिं काथ ईजा क् दगै सुणिंनयुं
पुछचि पैलि च्यला कब तेरि छुट्टी बारि
बखता त्विल कसि यौ पलटि मारि !

धार क् गोल्ज्यू थान में पुज करूंल
जब 'कोरोना' त्वैकै ढुंग में धरुंल
शहरों बटि ऐगिन हमार नानतिन
अपंण गौं में हैरैईं ठाठ उणिं जांणि
हम घर भितर,अब तेरि भाजणैं बारि
बखता त्विल कसि यौ पलटि मारि !

रोज एक दि आसक् हमुलै जलै
देखिया चीन क् ख्वार में बांज पड़ैलि
तैलि पुर संसार में मचौ दि हाहाकार
तैक डुबौल भौतै जल्दी यौ अहंकार
कस जमान आ इंसानल् इंसान मारि
बखता त्विल कसि यौ पलटि मारि !

होई,दिन काटंण थ्वाड़ मुश्किल हैरो
चौत बैशाख लै ह्यून क् जस जाड़ हैरो
चाड़ान क् चिचाट,जानवरों क् घुराट
धर्ति में हरि भरि कतुक भल मानिरौ
वायरस कोरोना तू जायै जड़ बै हारि
बखता त्विल कसि यौ पलटि मारि !!

बदलिरै जमानैकि हाव और पाणि
लागनौ पड़ौसियां दगै हैरो झगड़ि
एक दुहर थैं मीटर नापि बुलांणि
घुमण फिरण कौ हैगो सबनक भेद
महामारी दगै सब मनखि गईं हारि
बखता त्विल कसि यौ पलटि मारि !

अब ल्हिण पड़लौ हमुनकैं एक सबक
नि करूंल प्रति क् दगड़ छेड़छाड़
डबलनैकि कभै नि भेजूंल नान परदेश
द्विटैम रौट कमै हालाल् अपण देश
नि करिया रे ज्वानो तदुक मारा मारि
बखता त्विल कसि यौ पलटि मारि।।

फामों की फुलदेई

—महेन्द्र मटियानी, पिथौरागढ़

फामों की फुलदेई मन का आङणा
आङ में दैणै की सार जै फुलि रे
चेत कैं च्यापणी, देह कैं दाबणी
रितु में सौणै की जै घटा झुलि रै।
भागलै मिलि रयॉ रात भरि आज हम
चार दुःख, चार सुख, कै ल्हिनूँ, सुणि ल्हिनूँ।
भोल हाव् में पतेलों जा जाणि कॉ कथप
सॉचि हो या नि हो, स्वैण त बुणि ल्हिनूँ।
पुण्य जाणि को जनमाक् फलन है रईं
जुग–जुगॉ बै चाई छी ऊ घड़ि मिलि रै।
फामों की फुलदेई.....
जिन्दगी की य लामी उकाई–हुलारि
काटि सकूँ मैं सुवा, यस जतन करि दे।
हंसिणी जागि रौ, पराणी लागि रौ
चार ऑखर पिरीतक् सामव धरि दे।
आज भरि दे जनम–जनमक् रीतपन
जब तलक रातै की य लटुलि खुलि रै।
फामों की फुलदेई.....
हात आई लगन जास य द्वी–चार पल
बस, इननै तलक छ सकत, बावरी।
रात आइयै नि रौ, प्रात चाइयै नि रौ
कैल बादि सक य बलिया बखत, बावरी।
म्यार् हातन में आफुण चूड़ा छपकन दे
नी लुका जो मुखड़ि में बुरॅशि फुलिरै।
फामों की फुलदेई.....

समाचार

गैरसैंण ग्रीष्मकालीन राजधाणि

चमोली जिल्लक भराड़ीसैंण (गैरसैंण) उत्तराखण्डकि ग्रीष्मकालीन राजधाणि बणि गो। राज्यपालकि मंजूरी बाद मुख्य सचिव उत्पल कुमार सिंह ज्यूल यै संबंध में अधिसूचना जारी करि हाली। यै घोषणाल प्रदेशाक सवा करोड़ प्रदेशवासियो ल खुशी जाहिर करि रै। परन्तु जनताकि प्रबल मांग गैरसैंण कैं स्थाई राजधाणि बनूंणैकि छु।

कोरोना समाचार

देश में कोरोना संक्रमितों व यै रोगाक कारण दिन पर दिन मरणियांकि संख्या बढ़ते जाणै। लॉक डाउनाक बाद अनलॉक घोषित हैगो। परवासी मजदूर घरों हुॅ लौटणई मगर देश भरि में ऐल तक सवा पॉच लाख मनखि संक्रमित है गईं और मौतक आकड़ा सोल हजार कैं पार करि गो। हमार देवभूमि में 37 मनखि यै रोगाक शिकार है गईं।

मठपाल ज्यू कैं बधाई

खुशीकि बात छु कि सुप्रसिद्ध कुमाउनी कवि व दुदबोलि पत्रिकाक संपादक मथुरादत्त मठपाल ज्यूक व्यक्तित्व और कृतित्व पर समग्र रूप में प्रकाश डालते हुए अल्माड़ बटि छपणीं कुमाउनी पत्रिका 'पहरु' ल मथुरादत्त मठपाल विशेषांक (जून 2020) क सफल प्रकाशन करि रौछ। यैल हमार भावी पीढ़ी कें प्रेरणा मिलैलि और उं स्तरीय मानक कुमाउनी लेखणाक प्रति सचेष्ठ हवाल। उत्तराखंडी भाषाओंकि पत्रिका 'कुमगढ़' 'पहरु' पत्रिका क संपादक डॉ0 हयात सिंह रावत कैं धन्यवाद प्रेषित करते हुए मथुरादत्त मठपाल ज्यूक स्वस्थ एवं दीर्घायुकि कामना करूँ। —संपादक

अपार श्रद्वा व आस्थाक केन्द्र
देवगुरु बृहस्पति मंदिर (तुषराड़ ओखलकांडा)

—लक्ष्मी बड़शिलिया ''बीना'', हल्द्वानी

आज सब सुधी पाठकनकै एकमात्र अणकसै दुर्लभ बृहस्पति भगवान क मंदिर बार में बतूण लागरैई।

ओखलकाड़ां।(नैनीताल)देवात्मा हिमालयक महत्व और वीकि महिमाक वर्णन अनन्त छू, यह पावन भूमि सनातन काल बटि तपस्पियों कि तपस्या का केन्द्र रयि छू। ऋषि मुनियों लै नै,बल्कि देवताओंन लै यौ पावन धरती मणि तपस्या करबेर अपण कर्तव्य पथकै सवांर हालौ।

कदम कदम पर देव मंदिरोकि श्रृंखला यांकि कण कण में देवत्वक अहसास करै दिं। प्रातिक सौदर्यकि ष्टि से भारतक अलावा विश्वक एक महत्वपूर्ण क्षेत्र छू, यां पर्यटक और तीर्थ स्थलों का भ्रमण करते हुए जो आध्यात्मिक अनूभूति हूंचि ऊ अपण आप में अद्भुत छू।

पर्यटन कि ष्टिल न्है बल्कि तीर्थाटन की ष्टि बटि यौ पावन भूमि महत्वपूर्ण छू,यौ कारणल यां का भ्रमण अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ एंव संतोष प्रदान करणि वाल छू ,और परम संतोष का पावन केन्द्र छू यौ देवगुरु बृहस्पति मन्दिर।

जनपद नैनीताल में ओखलकांडा बटि लगभग 20 किलोमीटर दूर स्थित देवगुरूक यौ दरबार यसौ मन भावन स्थान छू जां पूजते ही आत्मा दिव्य लोककअनुभव करै दिं ।पुर विश्व में यह एक मात्र मन्दिर छू जां देवगुरु साक्षात् रुप से विराजमान मानि जानि ।देवताओंक गुरु बृहस्पति महाराजक यौ पावन दरबार में मांगी गई मनौती सदा ही पूरी हूं बल यौस इनार भक्तोंक अचल विश्वास भै।

देवगुरू बृहस्पति महाराजक यौ एकमात्र मंदिर जो पूर हिमालयी भूभाग में परम पूज्यनीय छू।यौ मंदिर की महिमाक बार में अनेकों दंतकथाएं प्रचलित छन।कई जां कि सतयुग में एक बार देवराज इन्द्र ब्रह्महत्याक पाप में घिर गयीं,ऊ पाप बटि व्यथित हैबेर पापकि मुक्ति लीजि ऊं यांक वियावान जंगलों की गुफाओं में लुकबेर तपस्या करण लागि उनर द्वारा अचानक गुपचुप तरीकल स्वर्गछोड़बेर जाणविल समूचा स्वर्ग व वांक देवता अपण राजा कै नि देखिबेर त्राहिमाम है गयिं।भौतै ढूढ़ खोजक बाद जब देवराज इन्द्र कौ पत्त नि चल जब तो सबै देवगण निराश हैबेर अपण गुरु बृहस्पति महाराज कि शरण में गयीं तथा उनूल देवगुरु इन्द्र कै खोजणक लिजी अनुरोध करौ। देवताओंक विनती पर देवगुरु ने इन्द्रल कि खोज आरम्भ भै, खोजते खोजते सबै धरती लोक में पूजि गयीं,एक गुफा में उनूल देवराज इन्द्र कै भयग्रस्त अवस्था में व्याकुल देखौ और देवगुरूल इन्द्र कि व्याकुलता दूर करण लिजी उनुकै अभयत्व प्रदान कर वापिस भेज दे। तथा यौ पवित्र स्थानकि सौंदर्यदर्य व पर्वतोंकि रमणीकता देखबेर द्याप्त मन्त्रमुग्ध हैगई ।फिर यौ स्थान पर तपस्या में बैठ गयीं तब बटि यौ स्थान पृथ्वी में देवगुरु धामक नामल जगत में प्रसिद्वहैगो। यौ स्थानक महत्व संसार में अतुलनीय छू किलैकि समूच विश्व में यौयि एक यौस मंदिर छू जां देवताओंक गुरु साक्षात् रूप में विद्यमान छन।देवगुरूक भक्तोंक लिजी यह स्थान परम पूज्यनीय छू। भूमण्डल में यौ देवगुरूक सर्वोच्च स्थान छू कुनि,दूर दराजक इलाकन बटि यां ऐबेर इनार भक्त इनुकैं श्रद्वापूर्वक शीष नऊनि।

मान्यता यौ लै छू कि यौ स्थान पर देवगुरू के प्रति की गई आराधना कभै लै निष्फल नि हुनि । जो मनखि कामना करण हैं यां ऊनी उनरि मनोकामनां अवश्य पुरि हूं।एक मत यौ लै छू कि नागाधिराज हिमालैकि रमणीक वादियों में स्थित ऊंच्च पहाड़न में यौ देवालय सैंणियौक प्रवेश व उनरि पूजपाठ अस्वीकार्य छू।यौ संदर्भ में पुराणि दंतकथा लोक में काफी प्रसिद्ध मानि जैं।कयि जां कि पैलि यां पूजपाठक दायित्व सैंणियौ कै छि पर पूर्व एक बार पुजारिन पूजाकि तैयारियां करबेर देवगुरू जी को भोग लगूंणै ऐ जब,गोरुक दूध की खीर बणैबेर लै पर प्रतिक बदलाव बीच में मौसमल ऐस करवट ल्हि कि खराव मौसमक चलते पुजारिन बिचारीक अधीरता बढ़ती गै आनन फानन, जल्दबाजी में गरम खीर पुजारि सैंणिल देवगुरू कै समर्पित कर दी,खीरक पिण्डी में पड़ते ही पिण्डी फट गै कुपित देवगुरूल उभतै बटि नराज हैबेर सैंणियौ कै पूजा करण है वंचित कर दे। और साथ साथ दर्शनक अधिकार बटि लै वंचित कर दि गौ।तब बटि यां सैणियों लिजी दर्शन व पूजन पर पुर प्रतिबन्ध छू।तब

बै यांक पुजारिक दायित्व पुरुष वर्ग संभालि छन

सुणन में यौले ऐरौ कि यौ घटनाक वर्षों के बाद एक दिन देवगुरूल स्वप्न में अपण भक्त एक पुजारि कै दर्शन देते हुए कौ कि तुम हर व हरि की नगरी हरिद्वार जाओ वां पुजबेर श्रद्वा व प्रेमपूर्वक गंगानदी में स्नान कर भगवान आशुतोष कै प्रणाम करबेर यौ वीरान वन में म्यर स्मरण करते हुए इकलै ही आयै और ध्यान रूण चौन भै कि तुमुकै कोई पछ्याण नि सकौ यैकलिजी काल कंबल ओढ़ लियै आगिल तुमुकै कि करण छू ऊ सब बाट में तुमकै यां पूज बेर पत्त चलौल। स्वप्नकि आभा में देवगुरू बै मिलि आदेशक अनुसार पुजारिल श्रद्वा भक्तिक वशीभूत हैबे देवगुरूकि आज्ञा कै शिरोधार्य मानबेर प्रेमपूर्वक हरद्वार में स्नान करौ और भगवान शंकर कि स्तुति करि फिर वियावान घनघोर जंगल में प्रवेश करौ जंगल में चलते चलते देवगुरु वृहस्पति जी कि पाल उनुकै दिव्यशक्तिक अद्भुत स्वरुपक दर्शन भयि, जो पिण्डी(लिंग) कै रुप में पार्णित हैबेर उनर कंध पर विराजमान हैगई।

ऊ पिण्डील दिव्य स्वरुप दिखैबेर अलौकिक वाणी में काथ आरम्भ की जब सबनि बतै कि भौतै समय वर्षों पूर्व मेरी शक्ति रुपी पिण्डी फाट गे छि और मेरि शक्ति कै म्यर साक्षात् रुप समझबेर विधिवत पूजन अर्चन कर स्थापित करिया अपण जीवन धन्य करिया तुम्हार कल्याण ह्वल ।

यौही स्थान इत्ती बै बसुधंरा में देवगुरु वृहस्पति धामक नामल प्रसिद्ध ह्वल।

देवभूमि उत्तराखण्ड़ में तीर्थाटन और विकासक असीमित संभावनाएं छिन।एक हैबेर एक मनोरम तीर्थ स्थल सौंदर्य समूह छन पहाड़िन में कल कल धुन में नृत्य करणि नदी छन।ऐतिहासिक मंदिर हर प्रकार बै तीर्थयात्रियोंन पर्यटकों लिजी अपणि ओर आकर्षित करण है पर्याप्त छन।लेकिन देवगुरु धाम इन सबसे बढ़कर अवर्णनीय छू।यां मिलणि वालि अकूत शांति कै शब्दों में नि समेटि जै सकन।अनन्त महिमाक सम्पन्न यौ दिव्यधाम लोगनक लिजी आस्थाक सुंदर स्थान छू।

नैनीताल जनपद स्थित ओखलकांडा विकास क्षेत्र में ग्राम तुषराणक ठीक मलि स्थित चोटी पर बांजक बोटों मुणि आच्छादित निर्जन जाग में एक कुटिया लै छू। क्षेत्रवासियों कि इन्हें देवगुरु के नाम से जानते हैं। क्षेत्रवासियों कि गहरी आस्थाक चलते घरक सबै नान ठुल शुभ कार्य देवगुरु महाराजका नाम लिबेरै आरम्भ करि जानि ।मनौती पूरि हुणक बाद मंदिर में घंटी चढूनैकि और भोग लगूंणैकि परंपरा छू। मंदिर परिसर में चारों ओर नानि ठुलि असंख्य घंटियां लगाई हुई छैं। कुछ वर्ष पूर्व असामाजिक तत्वों द्वारा मंदिर बटि घंटियों कै चोरिबेर बजार में बेच दीं, नैति इनर संख्या और लै ज्यादा हुनि। मंदिर में एक गोल चबूतराक मध्य में बृहस्पति महाराज लिंग रूप में विराजमान छैं।

चबूतराक चारों ओर गोल परिधि में आठ वसु स्थापित करि गयि छन। वसु पृथ्वीक देवता मानि जानि, शापक कारण गंगा पुत्रोंक रूप में मनुष्य योनि में जनम ल्हि ऊनुल। मणि वर्ष पूर्व चबूतराक एक हिस्से में ऐड़ी महाराजक मंदिर लै स्थापति करि गौ। किलैकि क्षेत्रक कुछ गौनमें यांक जागर घन्यालि लगूंणैकि परंपरा लै छू। बृहस्पति महाराज कैं शुद्ध घी में बणि प्रसादकि खीर कौ भोग लगाई जां। यौ मंदिर में चौत्र तथा असौज महैंण कि नवरात्रिन तथा सबै प्रमुख पर्वों में पुजारियों द्वारा पूजा –अर्चना क विधान धरि गौ।

यैक अलावा टैम टैम पर मंदिर में आस्था धरणि वाल भक्त मंदिरक दर्शन करण है जाते रूनि। सौंण तथा मंगशीर म्हैणक शुक्ल पक्ष में गौंकि सामूहिक पूजा आयोजित करि जैं । यैक लिजी दिनक निर्धारण पुजारि ज्यू द्वारा की जां।गौक प्रत्येक परिवार मंदिर में भोग लगूण हुणि शुद्ध घी में बणाई हुई मीठी पू ,पूरि बणाई जानि। मंदिर में स्थाई रूप में पुजारी कि कोई व्यवस्था न्हैति किलैकि मंदिर निर्जन जंगल पर स्थित छू, तथा मंदिर बै 3 किमी0 कि परिधि में कोई आबादी न्है। विशेष पर्वों में हि यां पुजारि उपलब्ध रूनि। यौ मंदिर एकदम खुलि भै। ऐसी मान्यता लै छू कि बृहस्पति महाराज कैं खुलि में रूंण पसंद छू।

टैम बेटैम गौं वालुंन मंदिर कै आच्छादित करण कि कोशिश लै करि लेकिन उनर प्रयास सफल नि है सक, ऊँचाई में स्थित हुणक हाव बयाव बटि सब उड़ गै टिन टप्पर।

मंदिर बटि दगै तीन जनपदों नैनीताल,अल्म्वाड़ तथा चम्पावत क वृहत् भूभाग क मनोहारी श्य देखिनी। मंदिरक ठीक सामणि पूरब दिशाक ओर पहाड़ि पर देवीधुराक प्रसिद्ध बाराही मैया का धाम स्थित हछू तथा द्विओर ठुल्ला घाटी छन। एक ओर घाटी में गौला नदी छू तो दूहर तरफ घाटी में लध्या नदी बहाव छू। यौ द्विनदी यौ क्षेत्रकि जीवनदायिनी रेखा छन। यां अत्यंत उपजाऊ माट छू कूनि लोग बाग। घाटियोंक यौ भूमि कै स्थानीय भाषा में ''रौ'' कई जां। द्वियै घाटियोंक लोग एक दूसर कै ''वल्ली रौ'' ''पल्ली रौ '' से सम्बोधित करनि। मंदिर बै लगभग 1 किमी0 तलतरफ एक

कुटिया बणै राखि,जैमे श्रद्धालु लोग कोई लै धार्मिक कार्यक्रमक अवसर पर विश्राम करनि। कुटिया बै मणि तलि पाणिक प्राक्रतिक स्रोत छू। मंदिरक लिजी लै पाणि यंई बै ल्हि जाण पणु।

अच्यान यां स्वामी प्रेमदास जी कुटिया में रहते हुए साधना कार्य में लागि रूनि उनार हि सद्प्रयासोंल मंदिरक जीर्णोद्धार सम्भव है सकरौ। निकटतम मोटर मार्ग बटि मंदिर कि पैदल दूरी लगभग 5 किमी0 रैगे। मंदिर तक द्वि प्रमुख मार्गों बै पूजि जै सकूं । हल्द्वाणि बै देवली तक सीद्दी बस या निजी वाहन बै पूजि जां। देवली बटि मंदिर तक लगभग 5 किमी0 की सीधी चढ़ाई पैदल तय करण पणैं । हल्द्वानी बटि वाया भीमताल,धानाचूली,मोरनौला बै भीड़ापानी होते हुए ग्राम कोटली तक निजी वाहनल पूजणि दूसर वैकल्पिक मार्ग लै छू। कोटली बटि मंदिर तक लगभग 5 किमी0 का पैदल बाट छू। यौ बाट में मणि सुगम छू।

कष्ट साध्य चढ़ाई पूरि करणक बाद मंदिर पूजबेर अलौकिक आनंदकि अनुभूति हूं, दगड़ में परम आत्मिक शांतिक अनुभव हूं जैके शब्दों में नै कै सकिन । भौत भक्तोंक दावा छछ कि ऊनुल रात्रि विश्राम पर मंदिरक समीप इन्द्रक दरबार लगते देखौ,लेकिन यौ सबै भक्तों को नसीब नि हुन।यैक लीजि आत्मिक पवित्रता तथा सच्ची श्रद्धाक हुण जरुरी छू। यों तो सामान्यतया अप्रैल बटि जून मध्य तक तथा अक्टूबर–नवंबर में यांक मौसम भौतै भल हैरूंच पर यां मौसमक मिजाज पल–पल बदलते रूं। चौमास में यां घण कोहरा लागरूं जबकि ह्यून में यां हाड़ कंपुंणी ठंड छू। तथा हिमपात लै भौतै हुणि भै। मंदिरक आस–पास जैव–विविधता कि ष्टिल अत्यंत समृद्ध जाग छू। याँ कई प्रकारकि दुर्लभ जड़ी–बूट वनस्पती लै पायी जानि।

परम पूज्य स्वामी श्री प्रेमदास ज्यू क प्रेरणाल और क्षेत्रवासियों क सहयोगल मंदिरक जीर्णोद्धार करिबेर यकै भव्य एवं दिव्य रूप दि जाण लागरौ । प्रचार–प्रसार क अभाव में तथा यातायात कि असुविधाक कारण यौ स्थानक महत्व आई जालै तक क्षेत्रीय जनता तकै सीमित छू।

सड़क निर्माणक लिजी वन एवं पर्यावरण मंत्रालय बटि स्वीति मिलण पर यौ दिव्य स्थान महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटन स्थलक रूप में विकसित है सकूं।

सबै श्रद्धालु भक्तों कै म्यर प्रणाम... श्री देवगुरु महाराज की असीम पा सबै भक्तों पर बणि रूण चौं।
'जय देवगुरु बृहस्पति महाराज'

–मो0 9411705214 ●●●

ऐंस्वा साल

–जगमोहन सिंह जयाड़ा "जिज्ञासू", नई दिल्ली

हमारा देस मा,
कोरोना कु दैंत आई,
हरेक मनखि का मन मा,
जैन चिंता बढ़ाई।
सड़क सूनी सूनी,
मनखि दूर तक नि दिखेणा,
घर का भितर बैठि,
मनखि कैद ह्वे भभसेणा।
यीं संक्रामक बिमारिन,
कत्यौंन अपणि जान गंवाई,
दवै न दारु जैंकि,
सब्यौंन अफु तैं बचाई।
सैर खालि ह्वेग्यन,
उत्तराखण्डी प्रवासी गौं गैन,
क्वरन्टाईन ह्वेक स्कूल मा,
चौदा दिन बितैन।
बुरा बग्त का कारण,
हमारा उत्तराखण्डी गौं गैन,
चौल पैल ह्वेगि गौं मा,
ऊदास गौं खुश ह्वेन।
महामारी का बाना आज,
प्रवासी घौर बौड़ा ह्वेग्यन,
पहाड़ का खातिर वरदान,
ब्वला त भला दिन ऐग्यन।
अब हमारा उत्तराखण्डा,
बांजा गौं आवाद ह्वला,
सरकार तक आवाज पौंछावा,
रोजगार का द्वार ख्वला।

भूतल भाजण नि पाय

–पूरन चन्द्र काण्डपाल, रोहिणी, दिल्ली

वर्ष 1995 में म्यर पैलउपन्यास 'जागर' हिंदी अकादमी दिल्ली क सौजन्य ल प्रकाशित हौछ जो बाद में 'प्यारा उत्तराखंड' अखबार में किस्तवार छपौ लै। जैल लै य देखौ वील यकैं भल बता। एक दिन महानगर दिल्ली में रत्ते पर उपन्यासक एक पाठक रेशम म्यार पास ऐ बेर बला, "कका आज दिन में तीन बजी हमार घर भूत कि जागर छ, म्येरि घरवाइ पर भूत नाचें रौ। एक कम्रक मकान छ, बैठणक लिजी जागि न्हैति ये वजैल केवल आपूं कैं और एकाध सयाण झणी कैं बलूं रयूं। डंगरि आल, दास नि अवा। डंगरि बिना ढोल– हुड़क कै हात पात जोड़ि बेर नाचि जांछ। आपूं जरूर अया। तीन वर्ष पैली रेशमक ब्या हौछ। पांच लोगोंक य परिवार में इज– बौज्यू, एक भै, रेशम और वीकि घरवाइ छी। परिवार एक भौ लिजी लै तरसि रौछी।

मि ठीक तीन बजे वां पुजि गोय। वां यूं पाँचोंक अलावा पड़ोसक द्विजोड़ि दम्पति और डंगरिय मौजूद छी। धूप–दीप जगै बेर, डंगरिय कैं दुलैंच में बैठा और रेशमक बौज्यू जोड़ी हाथों कैं मुनाव पर टेकि बेर गिड़गिड़ाने कौं राय, "हे ईश्वर– नरैण, य म्यार घर में कसि हलचल हैगे ? को छ य जो म्येरि ब्वारि पर लैरौ। गलती हैगे छ त मिकैं डंड दे भगवन, यैक पिंड छोड़। डंगरिय कापण फैगोय और ब्वारि लै हिचकौल हिनौल खेलें फैगेइ। ब्वारिक उज्यां चौ बेर रेशमक बौज्यू जोरल बलाय, "हम सात हाथ लाचार छ्यूं, तू जो लै छै येकैं छोड़, मिकैं पकड़, मिकैं खा। ऊँ डंगरियक उज्यां चानै बलाय, "तू देव छै, द्यखा आपणि करामात। य बीच ब्वारि भैटी– भैटिये ख्वारक खोली बाव हलूनै डंगरियक तरफ सरकि गेइ। डंगरियल जसै उकैं बभूत लगूण चा उ बेकाबू घोड़िक चार बिदकि गेइ, यस लागें रय कि उ डंगरिय पर झपट पड़लि। डंगरिय डरनै बचाव मुद्रा में ऐ बेर म्ये उज्यां चां फै गोय।

य दृश्य देखि सब दंग रै गाय। रेशम म्येरि तरफ देखि बेर बलाय, "य त हद हैगे। यैक क्वे गुरु गोविन्द नि रय। यस डंगरिय नि मिल जो ये पर साव सेर पड़ो। परिवार कि परेशानी देखि म्यार मन में एक विचार आ और मि उठि बेर भ्यार जाणी द्वारक नजीक भैटि गोय। मील गंभीर मुखड़ बनूनै जोरल कौ, "बिना गुरुकि अन्यारि रात नि हुण चौनि ! बता तू कोछै ?को गाड़– गध्यार बै ऐ रौछे ? खोल आपण गिच। आदि–आदि.." म्येरि भाव– भंगिमा और बोल सुणि बेर सबै समझें फैगाय कि मि उ डंगरिय है ठुल डंगरिय छ्यूं। म्यार उज्यां चौ बेर रेशम क बौज्यू बलाय, "परमेसरा बाट बते दे, म्यर इष्ट बदरनाथ बनि जा। मील उनुकैं इशारल चुप करा।

मि रेशमकि घरावाइक उज्यां चौ बेर बलायूं, "तू बलाण क्यलै नि रयै ? नि बलालै मि बुलवे बेर छोडुल। मसाण– भूतक इलाज छ म्यार पास। उ नि बलाइ। मील रेशम उज्यां चौ बेर जोरल कौ, "धुणि हाजिर कर दे सौंकार। रेशम– "परमेसरा यां धुणि कां बै ल्यूं ?" मि – "धुणि न्हैति तो स्टोव हाजिर कर दे। रेशम तुरंत रस्या बै स्टोव, पिन और माचिस ल्ही बेर आ। म्यार इशार पर वील स्टोव जला। मि – "चिमट हाजिर कर दे सौंकार। उ भाजि बेर गो और रस्या बै चिमट ल्ही आ। सबै समझें रौछी कि म्ये में द्याप्त औंतरी गो पर य बात निछी। डरल म्येरि हाव साफ है रैछी द्य मील ठान रैछी, अगर रेशम कि घरवाइ म्ये पर झपटली तो मि द्वार खोलि बेर भ्यार कुतिकि जूल।

मील स्टोवक लपटों में चिमट लाल करनै रेशम कि घरवाइ उज्यां चौ बेर कौ, "जो लै भूत, प्रेत, पिसाच, मसाण, छल, झपट तू य पार लै रौछे, अगर त्ये में हिम्मत छ तो पकड़ य लाल चिमट कैं, नतर मि खुद य चिमट कैं त्यार गिच में टेकि द्युल। मी उकैं डरूणक लिजी कौं रौछी। लाल चिमट देखि रेशम कि घरवाइक हिलण बंद है गोय और उ ख्वार में साड़ी पल्लू धरनै सानी कै उतै बै पिछाड़ि खसिकि गेइ। आब मी बेडर है बेर जोरल बलाय, "जो लै तू य पर लै रौछिये आज त्वील य धुणि चिमटक सामणि येक पिंड छोड़ि है। आज बै येक रुमन– झुमन, रुण चिल्लाण, चित्त–परेशानी, शारीरिक– मानसिक क्लेश, रोग –व्यथा सब दूर हुण चौनी। यतू कै बेर मील स्टोव कि हाव निकाल दी।

जागर खतम है गेछी। उ डंगरियल मिकैं आपू है ठुल डंगरी समझि मुनव झुकै बेर म्यार उज्यां चानै हात जोड़नै कौ, "धन्य हो महाराज। रेशम आपणि घरवाइ कैं अघिल ल्या और मिहूं बै उकैं बभूत लगवा। बभूत लगूनै मील उहैं कौ, "आज बै तू निरोग छै, निश्चिंत छै और बेडर छै। खुशि रौ, आपू कैं व्यस्त धर, कुछ पढ़ लिख, खालि नि रौ और एक परमात्मा में विश्वास धर। भूत एक भैम छ, कल्पना छ। खालि भैटि बेर बेकाराक, उल–जलूल विचार मन में पनपनी। येकै वजैल खालि दिमाग भूतक घर कई जांछ। जिन्दगीक

एक मन्त्र छ कि कर्म करते रौ, व्यस्त रौ और भगवान में विश्वास धरो। यतू कै बेर मि चड़क उठूं और नसि आयूं।

य क्वे सोची समझी योजना नि छी। सबकुछ अचानक हौछ। कएक लोग मिकैं भूत साधक समझण फै गाय। भूत हय नै, साधुल कैकैं ?य एक भैम –रोग छ जो यौन वर्जना, डर, फिकर, आक्रामक इच्छाओं कि पुर नि हुणल कुंठाग्रस्त बनै द्युछ और दबाव देखूण पर भावावेश में य रूप प्रकट है जांछ। मनखी है क्वे ठुल भूत नि हुन। आज क्वे यसि जागि न्हैति जां मनखी नि पुजि रय। रेशम कि कहानि हमूकैं य बतै छ कि वीकि घरवाइ पर क्वे भूत नि छी। अंधविश्वास कि सुणी– सुणाई बातों क घ्यर में उ कुंठित है गेछी। अघिल साल उनार घर एक भौ जन्म है गोछी द्य हमुकैं फल कि इच्छा नि करण चौनि और कर्म रूपी पुज में व्यस्त रौण चौंछ। अंधविश्वासक अन्यार कर्मयोगक उज्यावक सामणि कभै लै नि टिकि सकन।

–मो0 8070325807 ●●●

10 मई 1966 को उत्तरकाशी जनपद के सरनौल गांव में जन्मे महावीर रवांल्टा साहित्य की विभिन्न विधाओं में सृजन करते हुए अब तक तीन दर्जन पुस्तकों का सृजन कर चुके हैं।भाषा शोध एवं प्रकाशन केन्द्र वडोदरा के भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण, उत्तराखण्ड भाषा संस्थान के भाषा सर्वेक्षण के साथ ही पहाड़ के बहुभाषी शब्दकोश के लिए रवांल्टी पर काम कर चुके महावीर रवांल्टा को रवांल्टी में लेखन का श्रेय भी जाता है। गैणी जण आमार सुईन रवांल्टी का उनका पहला कविता संग्रह है।

महावीर रवांल्टा की रवांल्टी कविताएं

1–
न मुंई बदलेणु
न मेर हाऽल
बस
एका टऽग रऽई
सदांई
कतराई
कोई तो मारदु
माया की छपराल।

2–
एतरा
मुंई पाड़
औखी बितण लगीं
सच्ची लौनु त
उमरई रीतण लगीं
येख
नन्याण
मोबाइल अर बाईक ले
टटयाण लगें
घरैं
डरें कूऽड़ बट्याण लगें।

3–
देऊ न देवता
मनखी न पितर
मुंईले कोई न रऽई
मुंई आपड़ी ज्वानी
इण्या डऽई
मेर बयें सुईन
ओरु न लऽई।

4–
मां दुन्या क
रंग ढंग देखी
यां दुन्या क
रंग ढंग लेखी
आखिर मा
एत्या समझी
आंमुईं पऽड़ दुन्या छोड़नी
ओट्ठा
सब्बा रऽ येखी।

5–
जीवन कू
यूं बेढंगू राऽग
न आपड़ बयें सुईन
साथ्थ आंन्द
न
रोचीं जाऽग।

6–
मेरु मरनु
मेरु सुईनू कू मरनु
सैद्या उमर की
आछी जान्दी
रुंई छुंई
ढकीं उघाड़ीं
मेरऽ साथ्थ
तिऊं न कोई छड़ाई सकदू
न बांटी सकदू
न लूटी सकदू
बस सीखी सकऽ।

– डॉ0 सत्यानन्द बडोनी, देहरादून

1—बचपन

हाथै बौळि
सिंगाँणान लतपत
गल्वाड़ी सिंगाँणान
काळि ह्वे तैं तीणिं छ
पर भैरन जन बि छ
भितर न जैं
साफ होन्दू बचपन
भैरा स्वांग नि दिखौन्दू बचपन
पर हाँ
ठण्डा घत्त सि कौरा
स्वांग अपनौन्दू हम्सि
अर ह्वे जान्दू
हमारि तरौं
बिसरिक बचपन मैलू कुचैलु
नऽ सिंगाणू नऽ बौंली लतपत
सुखलू ह्वे तैं
मैलू होन्दू मन
पन नि ह्वे सक्दू फिर
वो साफ—सुथरू बचपन..... ।

2—राजनीति

शकुनी राजनीति जनि हि
आजै राजनीति
फूक मा चढ़ै—चढ़ैक
हम जना दुर्योधन, कर्णू तैं
कुबाटा लिजैक
मौत का मुख मा धिकैक
अफ तऽ बग्या
पर !
हमतैं बि बगैलि
कृश्ण राजनीति जनि
हो आजै राजनीति
प्यार सि बुलैक
ऊँ कु
दु:ख—दर्द सुणि
ऊँ कि
ब्यथा कु समाधान करू
पर कख छा बल
भगतू बासमती का चौंळ
होन्दा गेऊँ
तऽ रोन्दा क्योऊँ
यू हि तऽ हमारू रोणूं छ
कि क्वी सैत
धर्मराज, भीम, अर्जुन जना
मनख्यों तैं बलैक
बिदुर जना हमदर्दी
बजीर / प्रधानमंत्री तैं
स्नेह दी कैं
सैत क्वी ज्यून्दू रखलु .....?

3—बिराळि

दूध पिजैक तचै यालि,
हेर—देख कु करलु
यक्षप्रश्न मेरा मन मा
नऽ जाणि किलै कबलान्दु
चासंण भरिं दूधै कि
जग्वाळि कनि बिराळि
अफि सोचा तुम सबि
अफुतैं कमि करलि बिराळि
चाटि—पोंजिक चासंण
चट्ट, करलि बिराळि
मळै लगिं ऐंच कि
चट्ट पोंजलि बिराळि
इमान, धर्म बिसर्याँ सि
करद्यो जु बिराळि
बचै देली तरक्वाणि
लाटि, बणीं बिराळि
बिराळि, आँख्यों बंद कनि
नऽ जाणि क्य क्या कनि
खै—पचैक दूध मलै
म्याऊँ करि, ना बोनि
चाटि—पोंजिक, वा मलै
लपोड़ी मलै, औरू गिचा
खै पचैक सब मलै
जान्दि बिराळि पूछ हलै..... ।

4—चटकताळ

कै दां का चुनौ
ऊँ तैं नि
हम—तुम तैं छ
ऊँन तऽ खेल खेन्न
हमारि—तुमारि मोरि मा
यूँ चुनौ कि खर्चै दाळ
तुमारि—हमारि जुकड़ि मा दळैण
नऽ कि ऊँ नेतों कि
चुनौं का बाद, ऊँ तैं कुर्सी
हम—तुमतैं मैगैई
मैगैई सि बुरा हाल
मै गैई इन होण
जन
बलळ्या द्यौरा कि घामै चटकताळ..... ।

5—लम्पु

लम्पु
कन भग्यान
गात तपैक
शरीर फुकैक
फिर बि
अफ निस अंध्यारू
गुल भैर ऐक
वेकु उजाळू
चकाचौंध कर्दु
तब वेका उजाळा तैं
लोग टक
लगैक देख्दन
अर एक ऊ छन
अचग्याल
जु लम्पु बण्यां छन
औरू तैं
ऊँका अफनिस त उजाळू
अर हम निस
करयूँ अंध्यारू
हम तैं ह्वोयीं
टरकणि
कखन होलू उजाळू... ।

6—भमाण

नऽ घाम
नऽ छैल पर
कखि नि रयेणू
जमूण छ औंणी
अन्धादुन्द अळगस
कखि नि सयेणू
निराश
चारि दिशों मा
भमाण ।

—मो0 9411535904

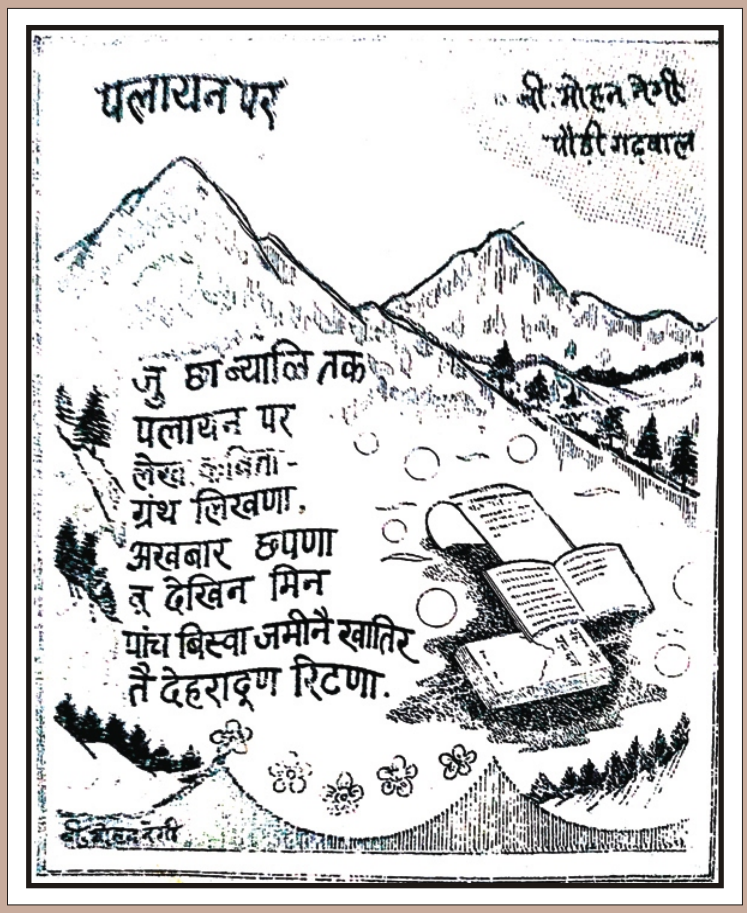

प्रेषक - सम्पादक 'कुमगढ़'
प0 खेड़ा (काठगोदाम) नैनीताल-263 126, मो-9719247882

डाक पंजीकरण संख्या यू0ए0 नैनीताल-275/2018-2020

प्रतिष्ठा में,

....

....

....

....

....

....

नामः श्याम सिंह कुटौला
माताः श्रीमती चन्द्रा देवी
पिताः स्व0 श्री आन सिंह कुटौला
पत्नीः श्रीमती गीता कुटौला
जन्मः 15 मई, 1955
जन्म स्थान : ग्राम–सूरी, पो0–रज्यूड़ा (सालम) वि0ख0 लमगड़ा, अलमोड़ा
व्यवसाय : अध्यापन
वर्तमान पताः कुटौला निवास, ढूॅगाधारा, अल्मोड़ा
सम्पादनः सूप (हिन्दी–कुमाउनी) त्रैमासिक पत्रिका, राम सिंह धौनी स्मारिका 1999 में सम्पादन, प्रभा (मासिक पत्रिका) का पूर्व संवाददाता, चारू–चंचला का क्षेत्रीय सम्पादक, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में अनेक कविताऐं, लेख एव कहानियॅा, प्रकाशित आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित।

कृतियॅा प्रकाशित– संस्कृत व्याकरण पथ प्रदर्शक, संग्राम(खण्ड काव्य), श्री राम सिंह धौनी चरितमानस, आप भी गुनगुनाइये (जनक छंद), मेरि जड़ (कुमाउनी उपन्यास), कुमाउनी अंताक्षरी, अवमवाट (कुमाउनी उपन्यास), प्रतीक्षा (हिन्दी उपन्यास), प्रयास (हिन्दी कहानी संग्रह), बौयाट (कुमाउनी कविता संग्रह), धन–धना–धन (कुमाउनी खण्ड काव्य), शीर्ष (हिन्दी कविता संग्रह)।

सह लेखन में प्रकाशित कृतियॅा– तीनकला का चन्द्रमा (काव्य संग्रह), छलक रहा आनन्द है (काव्य संग्रह), मेरी आवाज सुनो (काव्य संग्रह), नया नाम दें प्रेम को (काव्य संग्रह), गंगा की धारा बहे (काव्य संग्रह), उड़ घुघुती उड़ (काव्य संग्रह) आपणि पन्यार (कुमाउनी एकांकी संग्रह), बोलिक सज–समाव कुमाउनी निबन्ध संग्रह), फाम (कुमाउनी संस्मरण), काव्य मंदाकिनी 2007 (काव्य संग्रह), काव्य मंदाकिनी 2008 (अखिल भारतीय काव्य संग्रह), करो राष्ट्र निमार्ण (काव्य संकलन), जनक छंद तुलसी ह्रदय।

प्रकाशनाधीन– म्यर पहाड़ (कुमाउनी पद्य संग्रह), दोहावली (कुमाउनी दोहा संग्रह), दर्पण (हिन्दी दोहा संग्रह), उपसंहार की भूमिका (हिन्दी उपन्यास), पॉच लाप (कुमाउनी नाटक–संग्रह)।

विशेष– ''श्याम सिंह कुटौला व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' विषय पर कुमाऊ विश्वविद्यालय के पी0जी0 कालेज बागेश्वर से डॉ दीपा गोवाड़ी के निर्देशन में बाल विवेक जोशी द्वारा लघु शोध वर्ष 2011 में।

मो0– 9557587555

ETHOS SERVICES, HLD. # 9719000998